एम.पी.एच.आई.एन.२०१२/४५०६९ ।।ओ३म्।। डाक पंजीयन : एम.पी./.आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

प्रत्येक माह दिनांक २५ को प्रकाशित एवं २८ को प्रेषित

हिन्दी-मासिक

वैदिक संसार

● वर्ष : १२ ● अंक : ९ ● २५ जुलाई २०२३, इन्दौर (म.प्र.) ● मूल्य : २५/- ● कुल पृष्ठ : ४०

उस देश की, उन व्यक्तियों की अत्यन्त दुर्दशा क्यों नहीं होगी जो एक परमात्मा को छोड़कर इतर की उपासना करते हैं। -महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वतन्त्रता दिवस की बेला पर, देश-धर्म की बलिवेदी पर समिधा बनकर आहूत ज्ञात-अज्ञात समस्त विभूतियों को शत-शत नमन

मर्यादा पुरुषोत्तम
श्री रामचन्द्र जी

आर्य जाति के गौरव

योगिराज
श्री कृष्णचन्द्र जी

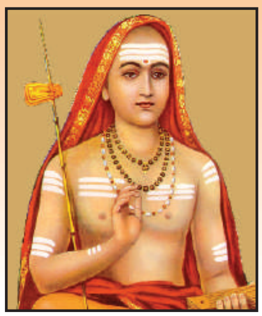

सनातन धर्म रक्षक
आद्य शंकराचार्य जी

वेदोद्धारक महर्षि
देव दयानन्द जी

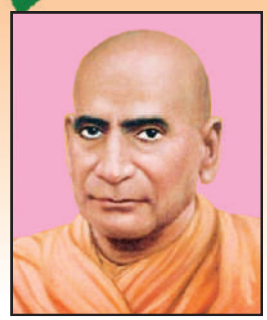

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पुनर्स्थापक
स्वामी श्रद्धानन्द जी

धर्म धुरन्धर
पण्डित लेखराम जी

नास्तिक से बने आस्तिक
पण्डित गुरुदत्त जी

शहीद-ए-शेर-ए-दिल
मदनलाल धींगरा

अमल बलिदानी चापेकर बन्धु
दामोदर चापेकर - बालकृष्ण चापेकर - वासुदेव चापेकर

इण्डिया हाउस के जनक
पण्डित श्यामजी कृष्ण वर्मा

पंजाब केसरी
लाला लाजपत राय

हिन्दू महासभा के पुरोधा
भाई परमानन्द

शास्त्रार्थ महारथी
पण्डित रामचन्द्र देहलवी

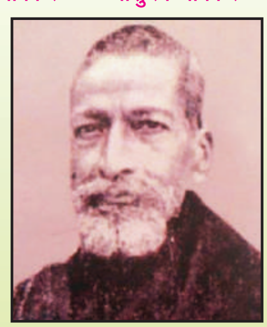

दलितोद्धारक
मास्टर आत्माराम अमृतसरी

सनातन वैदिक धर्म के संरक्षण हेतु समर्पित 'वैदिक संसार' पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक महानुभाव

श्री मोहनलालजी भाट
वेद ज्ञान पिपासु
लस्सानी दोयम, अजमेर

ठा. विक्रमसिंह जी आर्य
अध्यक्ष
राष्ट्र निर्माण पार्टी, दिल्ली

स्मृति शेष
श्री नेमीचन्द जी शर्मा
गान्धीधाम (गुजरात)

श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य
प्रधान सा.आ.प्र. सभा
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री रामफलसिंहजी आर्य
वैदिक प्रवक्ता
भिवानी (हरियाणा)

श्री शिवनारायणजी उपाध्याय
वेद मर्मज्ञ
कोटा (राजस्थान)

आ. सत्यसिन्धु जी आर्य
प्राचार्य : आर्ष गुरुकुल
नर्मदापुरम, होशंगाबाद (मप्र)

आ. आनन्द जी पुरुषार्थी
अ. वैदिक प्रवक्ता
होशंगाबाद (म.प्र.)

आचार्य वाचोनिधिजी आर्य
जीवन प्रभात
गान्धीधाम, गुजरात

श्री दीनदयालजी गुप्ता
प्रधान : आर्य प्र.सभा बंगाल
कोलकाता (प. बंगाल)

श्री रमेशमुनि वानप्रस्थी
वेद सैनिक
कोलकाता (प.बंगाल)

श्री आनन्ददेव जी आर्य
आर्यत्व के प्रतिमान
कोलकाता (प. बंगाल)

श्री जयदेव जी आर्य
उद्योगपति एवं दानवीर
राजकोट (गुजरात)

न्यायमूर्ति सज्जनसिंह कोठारी
पूर्व लोकायुक्त, राजस्थान
जयपुर (राज.)

श्री वेदप्रकाश जी आर्य
आई.ओ.सी.एल.
सवाई माधोपुर (राज.)

अधि.रतनलाल जी राजौरा
उपमन्त्री- आर्य समाज
निम्बाहेड़ा (राज.)

श्री रमेशचन्द्रजी भाट
वैदिक ज्ञान पिपासु
अजमेर (राज.)

कर्नल चन्द्रशेखरजी शर्मा
वेद ज्ञान पिपासु
उदयपुर (राज.)

स्मृति शेष
श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
आगरा (उ.प्र.)

श्री अर्जुन जी झलोया
वरिष्ठ समाजसेवी
मन्दसौर (म.प्र.)

श्री महेन्द्र जी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री समाधान जी पाटिल
वैदिक धर्मनिष्ठ युवा
जलगाँव (महाराष्ट्र)

श्री रामभजनजी आर्य
वरिष्ठ समाजसेवी
बूढ़ा, मन्दसौर (म.प्र.)

श्री नरेश जी दम्मीवाल
वरिष्ठ समाजसेवी
जोधपुर (राजस्थान)

श्री पूनाराम जी बरनेला
बरनेला चेरिटेबल ट्रस्ट
जोधपुर (राजस्थान)

श्री सीतारामजी शर्मा
वरिष्ठ समाजसेवी
अहमदाबाद (गुजरात)

श्री लेखराज जी शर्मा
टी.पी.टी. कॉन्ट्रेक्टर
भरतपुर (राज.)

श्री लक्ष्मीनारायणजी पाटीदार (आर्य) संभाग प्रभारी, उज्जैन
विक्रम नगर (मौलाना), म.प्र.

श्री शंकलालजी लदरेचा
वरिष्ठ समाजसेवी
बीकानेर (राज.)

श्री बालकृष्णजी गुप्त
संयुक्त कलेक्टर (से.नि.)
ग्वालियर (म.प्र.)

श्री अशोक कुमारजी गुप्ता
वैदिक ज्ञान पिपासु
शिवपुरी (म.प्र.)

श्री विनोद जी जायसवाल
वैदिक भामाशाह
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री ब्रह्मदत्तजी शर्मा
वैदिक धर्म प्रेमी
रोहतक (हरियाणा)

श्री रामचन्द्रजी कारपेन्टर
से.नि. शिक्षक
ब्यावरा (म.प्र.)

श्री शीतलकुमारजी पटेल
वेद भक्त युवा
रायपुर (छत्तीसगढ़)

श्री नानूराम जी जांगिड
जा.ब्रा. जिलाध्यक्ष
धुलिया (महाराष्ट्र)

श्री मोहनलालजी दशोरा
वैदिक साहित्यकार
नारायणगढ़ (म.प्र.)

श्री महेश कुमार शर्मा
ए.टी.एम. कम्प्यूटर
इंदौर (मध्यप्रदेश)

श्री अनिल जी शर्मा
युवा समाज चिन्तक
इन्दौर (म.प्र.)

श्रीमती सुमित्राजी - श्री ओमप्रकाशजी शर्मा
योग प्रशिक्षिका उदारमना धर्मनिष्ठ
नरोड़ा, अहमदाबाद (गुजरात)

सुश्री आदर्श आर्या
आर्ष कन्या विद्यापीठ
नजीबाबाद (उ.प्र.)

आर्यत्व की धनी १०३ वर्षीय माता लक्ष्मीदेवी, निवासी पाली (राज.) का निधन

मृत्यु पूर्व वसीयत में वैदिक विधि-विधान से अन्तिम संस्कार तथा अन्य क्रियाओं का पालन व कुरीतियों को दूर करने हेतु दिया प्रेरणादायी सन्देश। पितृऋण को समर्पित, समाज सेवा को तन-मन-धन से जीवन अर्पित करने वाले, मूक-बधिर सुपुत्र घेवरचन्द आर्य ने किया शिरोधार्य। (विस्तृत विवरण पृष्ठ ३७ पर)

जो बिना भूख के खाते हैं और जो भूख लगने पर भी नहीं खाते, वे रोग सागर में गोता लगाते हैं। –महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्राणी मात्र के हितकारी वैदिक धर्म का सजग प्रहरी

वैदिक संसार

वर्ष : १२, अंक : ९

अवधि : मासिक, भाषा : हिन्दी

प्रकाशन आंग्ल दिनांक : २५ जुलाई, २०२३

- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक
  सुखदेव शर्मा, इन्दौर
  ०९४२५०६९४९१
- सम्पादक
  गजेश शास्त्री, इन्दौर (अवैतनिक)
- पत्र व्यवहार का पता
  महर्षि दयानन्द स. विद्यार्थी आवास आश्रम
  ४७, जांगिड भवन, कालिका माता रोड,
  बड़वानी (म.प्र.) पिन–४५१५५१
- अक्षर संयोजन–
  नितिन पंजाबी (वी.एम. ग्राफिक्स), इन्दौर
  चलभाष : ९८९३१२६८००

वैदिक संसार का आर्थिक आधार

अति विशिष्ट संरक्षक सहयोग	२५,०००/–
पुण्यात्मक विशेष सहयोग	५,१००/–
पंचवार्षिक सहयोग :	१,५००/–
त्रैवार्षिक सहयोग	९००/–
वार्षिक सहयोग (प्रेषण व्यय सहित)	३५०/–
एक प्रति (प्रेषण व्यय रहित)	२५/–
विज्ञापन : रंगीन प्रति पृष्ठ	७,१००/–

खाता धारक का नाम : वैदिक संसार
बैंक का नाम : यूको बैंक
शाखा : ग्राम पिपलिया हाना, तिलक नगर, इन्दौर
चालू खाता संख्या : 05250210003756
आई एफ एस सी कोड : **UCBA**0000525
कृपया खाते में राशि जमा करने के पश्चात् सूचित अवश्य करें।

अध्यात्म के विषय में व्याप्त अन्धकार को दूर करने एवं वेदोक्त ज्ञान के प्रकाश को प्रकाशमान करने में सहायक ज्योति पुंज : **'वैदिक संसार'**

अनुक्रमणिका

विषय	शब्द संग्रहकर्ता	पृष्ठ क्र.
अमृतमयी वेदवाणी : साम–अथर्ववेद शतक पुस्तक से	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	०४
...आर्यावर्त भू–मण्डल के विशेष पर्व एवं दिवस	संकलित	०४
वैदिक संसार पत्रिका के उद्देश्य	वैदिक संसार	०४
जीवन में प्रथम बार ६४वाँ जन्म दिवस... क्यों मनाया गया?	प्रकाशक की कलम से	०५
महान् विभूतियाँ : धर्मात्मा श्रीकृष्ण और पापात्मा कर्ण	नन्दलाल निर्भय	०९
: अमर बलिदानी मदनलाल धींगरा	डोंगरलाल पुरुषार्थी	११
: कुछ क्रान्तिकारियों का संक्षिप्त परिचय	खुशहालचन्द्र आर्य	१३
: ...१४८ महान् विभूतियों का स्मरण	आचार्य राहुलदेव आर्य	१५
आनन्द स्वरूप परमात्मा का मार्ग आनन्द से भरा है	ओमप्रकाश आर्य	१६
श्रवण, श्रावण, श्रोत्र, श्रुति, श्रावणी पाँच श्रकारों का महत्व	आ. राहुल देव आर्य	१७
महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (गतांक से आगे)	ई. चन्द्रप्रकाश महाजन	२३
भारत में सद्गुरु के नाम पर ठगों का टिड्डी दल (गतांक से आगे)	डॉ. गंगाशरण आर्य	२४
वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहितः	रामफलसिंह आर्य	२५
महाभारत काल के पश्चात् भारत में चार युगों का संक्षिप्त विवरण	पं. उम्मेदसिंह	२७
है कोई जो हलचल मचा रहा	अम्बालाल विश्वकर्मार्य	२८
शताब्दी पूर्व का विस्मृत एक नृशंस हिन्दू नरसंहार	जगदीश प्रसाद आर्य	२९
समान नागरिक संहिता बनाम जन–जन की आवाज	डॉ. श्वेतकेतु शर्मा	३१
ख्यात नाम जयसिंहजी का	नरसिंह सोलंकी	३२
रामचरित मानस : एक विवेचन	मोहनलाल दशोरा	३३
हिन्दी की वर्ण मंजु मंजरी (गतांक से आगे)	चौधरी बदनसिंह आर्य	३४
प्यारे आर्यवीरों	देवकुमार प्रसाद आर्य	३४
परमात्मा को कैसे देखें	सुश्री आदर्श आर्या	३५
बिहार राज्य स्तरीय सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा स्थगित	सुशील	३५
आर्य जगत् की सम्पन्न विविध गतिविधियाँ	संकलित	३६
सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध शंखनाद– स्मृतिशेष दादी लक्ष्मीदेवी	पं. घेवरचन्द आर्य	३७

अमृतमयी वेदवाणी

साम-अथर्व वेद शतक पुस्तक से

● **स्वामी शान्तानन्द सरस्वती**
(एम.ए. दर्शनाचार्य)
प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दर नगर, रोहतक (हरियाणा)
सन्त औधवराम वैदिक गुरुकुल, भवानीपुर (कच्छ), गुजरात
चलभाष : ९९९८५९४८१०, ९६६४६३०११६

त्वं न इन्द्र वाजयुस्त्वं गव्युः शतक्रतो।
त्वं हिरण्ययुर्वसो।। (४०)

– सामवेद उ. १.२.२.३

शब्दार्थ– इन्द्र = हे परमेश्वर! **त्वं नः** = आप हमारे लिए = अन्न की इच्छा वाले हो **शतक्रतो** = हे अनन्तज्ञान और शोभनीय कर्मवाले प्रभो! **त्वं गव्युः** = आप हमारे लिए गौ आदि उपकारक पशुओं की इच्छावाले और **वसो** = हे सबमें बसने और सबको अपने में वास देने वाले सर्वाधिष्ठान परमात्मन्! **त्वं हिरण्ययुः** = आप हमारे लिए सुवर्णादि धन चाहने वाले हूजिये।

विनय : हे परम ऐश्वर्य सम्पन्न इन्द्र परमात्मा! आप हमारे लिए व हमारे सब भाई, बन्धु, मित्र, स्वजनों एवं देशवासियों के लिए प्रचुर मात्रा में चावल, गेहूँ, फल, कन्द–मूल, साग–सब्जी आदि पौष्टिक भोज्य पदार्थ प्रदान करिये तथा हमारे उपकारक गौ, अश्व आदि प्राणियों को भी पुष्ट कर हमारे सुख के लिए उन्हें प्रदान कीजिये और सोना, चाँदी आदि रत्नों से हमें सुशोभित करिये। इसके लिए हम आपके भक्तगण आपसे विनम्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं।

हे महादाता परमेश्वर! आप तो दुष्ट–पापीजनों के नाशक एवं धार्मिक वेदपथ के पथिक सज्जनों के लिए अत्यन्त सुखकारी हैं। हे प्रभु! आप ही सूर्य, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु एवं आकाश इन वस्तुओं के बसाने वाले वसु हैं। सबको अपने अन्दर बसाते हुए स्वयं सबमें बसने वाले हैं। हे भगवन्! आप हम पर दया दृष्टि बनाए रखिये तथा हमारे अन्दर कोई दुःख, कष्ट, रोग, शोक, न्यूनता, कमी, छिद्र, दोष, दुर्गुण न रहने पाए ऐसा हमें ज्ञान–विज्ञान व शक्ति प्रदान करिये।

पद्यार्थः *हे परमेश्वर इंद्र प्यारे, बहुकर्मा वसुदेव न्यारे।*
दो हमको सामग्री सुखकर, गौ सुवर्ण पशुधन हों हितकर।।
जीवन जीवें सुन्दर हितकर, नमन तुम्हें हे प्यारे प्रभुवर।
आए हैं हम शरण तुम्हारी, विमल बना हमको उपकारी।। ■

● **दर्शनाचार्या विमलेश बंसल (विमल वैदेही), दिल्ली**
चलभाष : ८१३०५८६००२

विभिन्न स्त्रोतों से प्राप्त अगस्त मास, २०२३ के कुछ विशेष पर्व–दिवस

०१–०७ विश्व स्तनपान सप्ताह। ०१. राष्ट्रीय पर्वतारोहण दिवस, मुस्लिम महिला अधिकार दिवस, **स्वामी समर्पणानन्द (बुद्धदेव विद्यालंकर) सरस्वती जयन्ती।** ०२. दादरा नगर हवेली मुक्ति दिवस। ०३. मैथिलीशरण गुप्त जयन्ती, राष्ट्रीय हृदय प्रत्यारोपण दिवस। ०६. मित्रता दिवस (प्रथम रविवार), हिरोशिमा दिवस। ०७. राष्ट्रीय हथकरघा दिवस। ०९. भारत छोड़ो आन्दोलन वर्षगाँठ, विश्व आदिवासी दिवस, नागासाकी दिवस, विश्व के स्वदेशी लोगों का अन्तर्राष्ट्रीय दिवस। १०. विश्व जैव ईंधन दिवस।११. खुदीराम बोस बलिदान दिवस। १२. विश्व युवा दिवस, विश्व हाथी दिवस। १३. लेफ्ट हैंडर्स दिवस, विश्व अंगदान दिवस, वीर दुर्गादास राठौर जयन्ती। १४. भारत विभाजन विभीषिका दिवस, शहीद गुलाबसिंह पटेल जयन्ती एवं बलिदान दिवस। १५. स्वतन्त्रता दिवस। १६. रानी अवन्तीबाई लोधी जयन्ती। १८. बाजीराव पेशवा जयन्ती। १९. विश्व फोटोग्राफी दिवस, विश्व मानवतावादी दिवस। २०. विश्व मच्छर दिवस, सद्भावना दिवस, भारतीय अक्षय ऊर्जा दिवस। २१. **कविवर पं. नाथूराम 'शंकर' शर्मा पुण्यतिथि।** २२. मद्रास दिवस। २३. दास व्यापार और उन्मूलन स्मृति अन्तर्राष्ट्रीय दिवस, गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती। २४. **पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति पुण्यतिथि।** २६. महिला समानता दिवस, **पं. दादा बस्तीराम पुण्यतिथि।** २७. **पं. जगदेव सिद्धान्ती पुण्यतिथि।** २९. राष्ट्रीय खेल दिवस, तेलगु भाषा दिवस, **पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय पुण्यतिथि,** परमाणु परीक्षण विरोध अन्तर्राष्ट्रीय दिवस। ३०. **श्रावणी उपाकर्म पर्व (रक्षाबन्धन),** राष्ट्रीय लघु उद्योग दिवस। ३१ विश्व संस्कृत दिवस, लवकुश जयन्ती।

वैदिक संसार के उद्देश्य

- जगत् नियन्ता परमपिता परमात्मा द्वारा मानव की उत्पत्ति के साथ सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याणार्थ दिए गए ज्ञान– वेदों की महत्ता को पुनर्स्थापित करने हेतु वैदिक सिद्धान्तों, ऋषि–मुनियों एवं ऋषि दयानन्द प्रणीत सन्देशों को प्रकाशित करना।
- महान् योगी, संन्यासी, अखण्ड ब्रह्मचारी, वेद प्रतिष्ठापक, तत्वज्ञानी, युगद्रष्टा, स्वराष्ट्र–प्रेमी, स्वराज्य के प्रथम उद्घोषक, नवजागरण के सूत्रधार, शोषित–पीड़ित वर्ग एवं महिला उद्धारक, समाज सुधारक, खण्डन–मण्डन के प्रणेता, अन्धविश्वास नाशक, पाखण्ड खण्डिनी ध्वजा वाहक, आर्य समाज संस्थापक, अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदानुकूल सद्–साहित्य के रचयिता, दयालु, दिव्य, अमर बलिदानी महर्षि दयानन्द सरस्वती के समस्त मानव जाति पर किये गये उपकारार्थ कार्यों को गतिमान बनाए रखने हेतु प्रयत्न करना।
- आमजन में व्याप्त अज्ञानता, धर्मान्धता, अन्धविश्वास, पाखण्ड, कुरीतियों के विरुद्ध जन जागरण कर उन्मूलन हेतु प्रयास करना।
- आर्य (श्रेष्ठ) विद्वान् महानुभावों के मन्तव्यों, सन्देशों का प्रचार–प्रसार कर प्रतिजन को उपलब्ध करवाना।
- आवश्यक सूचनाओं, गतिविधियों, समाचारों को प्रतिजन तक पहुँचाने का प्रयास करना।

जीवन में प्रथम बार ६४वाँ जन्मदिवस वैदिक विधि से हर्षोल्लासपूर्वक क्यों मनाया गया?

● सुखदेव शर्मा
प्रकाशक : वैदिक संसार, इन्दौर एवं
संचालक : महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी (म.प्र.)
चलभाष : ९४२५०६९४९१

परमपिता परमेश्वर की महती तथा असीम अनुकम्पा से दिनांक १३ जुलाई को प्रात: ९ बजे महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम, बड़वानी (म. प्र.) पर आश्रम निवासरत विद्यार्थियों एवं परिजनों की उपस्थिति में मेरा ६४ वाँ जन्मदिवस वेदोक्त विधि से हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

प्रश्न उपस्थित होता है कि जीवन के ६३ वर्षों में जब जन्म दिवस मनाने का कोई औचित्य उपस्थित नहीं हुआ तो फिर अब जीवन के संध्याकाल में जन्मदिवस मनाने की आवश्यकता क्यों हुई ?

वैदिक सिद्धान्त कहते हैं कि बिना कारण के कोई कार्य नहीं होता अर्थात् कार्य और कारण का अटूट सम्बन्ध है। उस प्रभु की लीला अपरम्पार है। उसकी न्यायकारी व्यवस्था से जीवन में कब क्या मोड़ आ जाए, हमें कुछ पता नहीं होता, हमारी सारी योजनाएँ धरी की धरी रह जाती है। मेरा जन्म ऐसे माता-पिता के यहाँ हुआ जो वैदिक ज्ञान तो दूर सामान्य शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर पाए थे। दोनों लगभग निरक्षर थे और मेरे पिता के तो बाल्यकाल में ही उनके पिता का देहान्त हो गया था। पिता की शिक्षा तो दूर पेट पालन भी कठिन था। मेरे माता-पिता का जीवन अत्यन्त कष्टप्रद व कठिन रहा। मेरे पिता जीविकोपार्जन हेतु राजस्थान के तत्कालीन जिला सवाई माधोपुर (वर्तमान जिला दौसा) से मध्यप्रदेश के बड़वानी नगर आये और यहीं के होकर रह गए। बड़वानी रहते हुए ही उनका विवाह राजस्थान के भरतपुर जिले की निवासी कन्या कस्तूरी देवी के साथ हुआ। मेरी बड़ी बहन स्मृति शेष श्रीमती लक्ष्मीबाई शर्मा, मेरा व मेरी छोटी बहन श्रीमती प्रमिला शर्मा व स्मृति शेष श्रीमती शशिकला धेमन का जन्म यहाँ बड़वानी में हुआ। मेरे पिता अशिक्षित अवश्य थे किन्तु उनका जीवन शुचितापूर्ण, धार्मिक, परोपकारी, कठोर परिश्रमी, सादगीपूर्ण, सदाचारी तथा सिद्धान्तवादी व आदर्शवादी था। जिससे उन्होंने जीवन पर्यन्त कभी समझौता नहीं किया और अपने क्षेत्र में विशेष प्रतिष्ठा अर्जित की। शिक्षा-दीक्षा अल्प अवश्य थी किन्तु यज्ञोपवीत धारण करते थे। नित्य प्रति स्नान, सूर्य देव को अर्घ्य देना, पौराणिक ही सही त्रिकाल संध्योपासना करना। कार्य स्थल पर स्वयं के हाथ से भोजन बनाकर एक समय भोजन करना, रविवार अवकाश हेतु घर आ जाना उनकी दिनचर्या के अंग थे। उनका कार्यक्षेत्र ग्रामीण क्षेत्र था तथा वे शिल्प कार्य में संलग्न थे। वैसे भी बड़वानी क्षेत्र आर्य समाज और वैदिक गतिविधियों से अछूता क्षेत्र रहा है। इस कारण मेरे परिवार में पूर्णरूपेण पौराणिक अन्धविश्वास-पाखण्ड व्याप्त थे। विरासत में अवैदिक मान्यताएँ प्राप्त होने से मेरा अपना जीवन भी लगभग ४८-५० वर्ष तक इन्हीं पौराणिक मान्यताओं को समर्पित रहा। परिवार में कोई उच्च शिक्षित, समृद्ध, बुद्धिजीवी मार्गदर्शक नहीं होने से मैं निरंकुश उच्छृंखल होकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने से वंचित रहा। अल्पशिक्षित कक्षा ९वीं पास होकर मैंने अपने पैतृक कार्य को जीविकोपार्जन का साधन बनाया। शिक्षा के प्रति मेरी शिथिलता के कारण मात्र १९ वर्ष की आयु में मेरा विवाह १६ वर्षीय पाँचवी पास कन्या दुर्गा शर्मा से हो गया।

परमपिता परमेश्वर की महती कृपा से चार सुपुत्र नीलेश, प्रितेश, नितिन, गजेश तथा दो सुपुत्री श्रीमती जयश्री व भाग्यश्री शर्मा की प्राप्ति होकर परिवार अस्तित्व में आया।

अल्प शिक्षित होने के साथ-साथ, अत्यन्त निम्न स्तरीय आर्थिक स्थिति और ऊपर से ६ बच्चों का परिवार जो कि **'कड़वा करेला और नीम चढ़ा'** की कहावत को चरितार्थ करता है। ऐसे व्यक्ति को श्रेष्ठजनों का संगतिकरण भी सुलभ कहाँ? हाँ, कुसंग अवश्य सहज उपलब्ध हो जाता है। ऐसे में अन्धविश्वास-पाखण्ड तो जीवन में होना सामान्य बात है अपितु दोष-दुर्गुणों में लिप्त होना भी स्वाभाविक है। **काहे का ज्ञान और काहे का जीवन लक्ष्य ?** बस जीना है, कभी हंसते, कभी रोते, गिरते-पड़ते जीवन जिए चले जा रहे थे। इस प्रकार का अन्धकारपूर्ण जीवन व्यतित करते हुए जीवन के लगभग ४८-५० वसन्त बीत गए। यहाँ यह भी विशेष उल्लेखनीय है कि ना तो कोई मोहल्ले में, ना कोई गाँव में, ना कोई परिवार में और ना कोई रिश्तेदारी में, ना कोई मित्रता में, ना कोई परिचय सम्पर्क में आर्य समाजी अथवा वैदिक धर्म सिद्धान्तों को जानने-समझने वाला व्यक्ति था जिससे वैदिक धर्म, आर्य समाज और ऋषि दयानन्द का ज्ञान प्राप्त होता। **अरे ज्ञान तो छोड़ो हम तो विवेकानन्द को ही दयानन्द समझते थे।**

प्रभु कृपा से लगभग वर्ष १९९५ में अपने १० संगी साथियों के साथ गुजरात भ्रमण का मानस बनाया और किराए के एक चार पहिया वाहन से गुजरात राजस्थान के भ्रमण हेतु निकल पड़े। भ्रमण का उद्देश्य केवल भटकना था। पौराणिकता में गले-गले डूबे होने के कारण हमारे भ्रमण के केन्द्र में मन्दिर तथा ऐतिहासिक दर्शनीय आदि स्थान थे। संगी साथी भी कृषक परिवारों के साधारण आर्थिक स्थिति के सामान्य शिक्षित थे अत: हमारा प्रयास होता था कि ऐसा स्थान सुलभ हो जाए जहाँ भोजन और विश्राम की व्यवस्था मिल जाए। हमारे भ्रमण केन्द्र में अधिकांश स्वामीनारायण मन्दिर होते थे। गुजरात राज्य का हममें से किसी को न तो कोई ज्ञान था और न कोई अनुभव अत: हमने एक गुजरात राज्य पर्यटन स्थल की पुस्तक क्रय कर ली।

बड़ौदा जिले से प्रवेश कर भ्रमण करते-करते जब राजकोट से आगे बढ़े तब पर्यटन पुस्तक की ऐतिहासिक दर्शनीय स्थलों की सूची में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्म स्थान टंकारा देखा। हमें दयानन्द का तो अता-पता नहीं था, हम विवेकानन्द का ही जन्म स्थान समझकर रात्रि को ९ बजे टंकारा पहुँच गए। पहुँचने में विलम्ब होने से भोजन का समय तो समाप्त हो चुका था किन्तु रात्रि विश्राम का आश्रय हमें टंकारा में मिल गया। हमारा प्रात:काल आगामी यात्रा के लिए प्रस्थान का मानस था, यह जानकर वहाँ के अधिकारियों ने हमें रात्रि को ही वहाँ के पुस्तकालय आदि का अवलोकन करवा दिया। वेद के परिचय और महत्ता से अनभिज्ञ हमने जीवन में सर्वप्रथम वेद-शास्त्रों के दर्शन रात्री में किए। कुछ समय पश्चात् हमारे कानों पर संस्कृत के वाक्यों के स्वर पड़े। मैंने वहाँ के अधिकारी से पूछा यह आवाज कैसी है ? उन्होंने बताया कि यहाँ पर उपदेशक विद्यालय चलता है उसके ब्रह्मचारी शयनकालीन मन्त्रों का पाठ कर रहे हैं। प्रभु कृपा कहें अथवा प्रारब्ध के संस्कार या माता-पिता के संस्कार मै

अत्यन्त प्रभावित हुआ, मैंने मन ही मन अपने बच्चों को वहाँ शिक्षा दिलवाने का संकल्प लिया। मैंने उनसे ब्रह्मचारियों के शिक्षा और प्रवेश को लेकर कुछ जानकारी प्राप्त की। उन्होंने मुझे ऋषि दयानन्द के बोध दिवस का एक पत्रक दिया और बोध दिवस पर आने का कहा, वह पत्रक आज भी मेरे पास सुरक्षित है। सुबह हम भी प्रस्थान करने के लिए जल्दी उठ गए थे। थोड़ी देर पश्चात् प्रात:कालीन मन्त्रों का पाठ करते हुए ब्रह्मचारियों का स्वर कानों में सुनाई दिया जो गहराई से मेरे अन्तर्मन में बैठ गया और मेरा अपने सुपुत्रों को वहाँ प्रवेश दिलवाने का संकल्प दृढ़ हो गया।

टंकारा से प्रस्थान कर हम भ्रमण करते हुए आबू पर्वत पहुँचे और ओम् शान्ति सम्प्रदाय के केन्द्र ईश्वरीय विश्वविद्यालय जा पहुँचे जिससे हमारा पूर्व में कोई लेना-देना नहीं था न आज है। वहाँ प्रवेश द्वार के पास एक दान पात्र रखा हुआ था जिसके पास सूचना लिखी हुई थी कि हमें आपका कोई रुपया-पैसा दान में नहीं चाहिए। आप अपने जीवन के किसी दोष-दुर्गुण को त्यागने का संकल्प कर यहाँ हमें दान कर दें और यहाँ पर्ची में अपना नाम-पता तथा अपने द्वारा त्यागने वाले दोष-दुर्गुण को लिखकर इस दान पेटी में डाल दें। इसके लिए वहाँ पर पर्ची और पेन भी रखा हुआ था। मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। मैं अपनी अत्यधिक धूम्रपान की लत से स्वयं व्यथित था। मैंने अपना नाम-पता तथा धूम्रपान त्यागने का संकल्प पर्ची में लिखकर दान पेटी में डाल दिया। ईश्वर कृपा कहो अथवा प्रारब्ध का संस्कार मेरे संगी साथियों के लिए तो वह भ्रमण भटकना ही सिद्ध हुआ किन्तु मेरे लिए मेरे जीवन को अहम् दिशा देने वाले दो संकल्प एक तो सुपुत्र की टंकारा गुरुकुल में शिक्षा और दूसरा अत्यधिक धूम्रपान जैसे प्राणघातक व्यसन से मुक्ति की उपलब्धि का यह भ्रमण रहा। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि मैं अत्यधिक मदिरापान के व्यसन से भी ग्रसित था जिसे मैं दिसम्बर १९९२ में स्वप्रेरणा से त्याग चुका था। इसे मात्र मदिरापान मत समझियेगा, मैं कुख्यात शराबी था। सुबह चार बजे उठते ही शराब कण्ठ के नीचे उतरती थी। स्थिति इतनी विकट थी कि मेरे निवास क्षेत्र के मेरे साथ बैठकर पीने वाले मेरी मित्र मण्डली के ३५ से ४० युवक आज से २०-२५ वर्ष पूर्व ही संसार से चले गये। तीन-चार परिवार तो ऐसे हैं जिन्होंने दो-दो, तीन-तीन सगे भाइयों को खोया है। वह भी केवल और केवल शराब के कारण। मैं शराब नहीं छोड़ता तो २०-२५ वर्ष पूर्व ही दिवंगत हो चुका होता।

भ्रमण से लौटने के पश्चात् अपनी दुनिया में व्यस्त हो गया इसलिए लगभग ७ वर्ष तक टंकारा नहीं जा पाया किन्तु संकल्प स्मृति में रहा, जो मुझे वर्ष २००२ के ऋषि बोध उत्सव में ले गया। बोध उत्सव के अवसर पर नवनिर्मित यज्ञशाला में देश-दुनिया से उपस्थित आर्यों को यज्ञ करते हुए देखा तथा विद्वानों के प्रवचन श्रवण किए जीवन में प्रथम बार ऐसा कोई धार्मिक आयोजन देखने से अत्यन्त प्रभावित हुआ। सुपुत्रों के प्रवेश को लेकर चर्चा करने पर अधिकारियों ने जून में प्रवेश के समय आने का कहा। जून २००३ में सुपुत्र नितिन और गजेश को साथ लेकर प्रवेश हेतु टंकारा पहुँचा। गजेश का प्रवेश तो शास्त्री शिक्षा हेतु हो गया किन्तु नितिन नौवीं कक्षा का छात्र होने से उसका प्रवेश नहीं हुआ। जिसका प्रवेश २ वर्ष पश्चात् ११ वीं विज्ञान कक्षा में गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार) में करवाया गया, जो १ वर्ष पश्चात् वापसी घर लौट आया। छोटी बेटी भाग्यश्री का प्रवेश द्रोण स्थली कन्या विद्यालय, देहरादून में करवाया किन्तु कुछ कारणवश एक वर्ष पश्चात् उसे वहाँ से निकालकर गुरुकुल दाधिया में प्रवेश दिलवाया, जो २ वर्षों के पश्चात् वापसी घर लौट आई। सुपुत्र गजेश का प्रवेश टंकारा में हो जाने से प्रतिवर्ष बोध उत्सव में जाना प्रारम्भ हो गया। वहाँ से वैदिक साहित्य विपुल मात्रा में लाया, जिसका गहन लाभ प्राप्त हुआ।

जनवरी २००४ में पिताजी का देहान्त हो गया। वैदिक सिद्धान्तों का ठीक-ठीक ज्ञान ना होने से पिताजी के दशा, ग्याहरवाँ, बारहवाँ, शैय्यादान, हरिद्वार जाकर श्राद्ध-तर्पण सब किए गए।

वर्ष २००५ में बच्चों की उच्च शिक्षा हेतु बड़वानी से हमेशा-हमेशा के लिए प्रस्थान कर इन्दौर चला आया। जहाँ आर्य समाज और पण्डित सूर्यदेव जी का सान्निध्य प्राप्त हुआ। सूर्यदेव जी ने दैनिक यज्ञ करना सिखाया दो-तीन दिन के अन्तराल में निवास पर आते रहे जिनसे वैदिक सिद्धान्तों पर चर्चा होने से ज्ञान प्राप्ति होती रही। आप वैदिक संसार पत्रिका के मूल प्रेरक तथा सम्बल प्रदाता रहे।

मैं वैदिक धर्मी कैसे बना इसका वृतान्त वर्णित किया जा चुका है। इसके साथ-साथ एक और घटनाक्रम घटित हुआ जिसने मेरे दृढ़ वैदिक सिद्धान्ती बनने का मार्ग प्रशस्त किया। मेरी न तो अपने जाति समुदाय में कोई रुचि थी न मेरी अपने जाति-समुदाय में किसी से पटरी बैठती थी इसके उपरान्त भी प्रभु कृपा से घटनाक्रम कुछ ऐसा बना कि मुझे जांगिड ब्राह्मण नवयुवक मण्डल बड़वानी का गठन कर प्रथम व अन्तिम अध्यक्ष नियुक्त किया गया। मैने पीछे मुड़कर नहीं देखा और खूब कार्य किया। मैने अपने क्षेत्र से बाहर जाकर व्यापक स्तर पर कार्य किया। शिल्पी समुदाय के उत्थान हेतु वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार और जन्मना ब्राह्मणों के शोषण उत्पीड़न से समाज को बचाने हेतु वर्ष १९०७ में स्थापित राष्ट्रीय संगठन अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा, दिल्ली के नासिक अधिवेशन में वर्ष १९९९ में महासभा का सदस्य बन गया। मेरी सक्रियता के कारण मैं अनेक वैदिक सिद्धान्ती समाज बन्धुओं के सम्पर्क में आया। जिनमें सर्व स्मृतिशेष पण्डित हरिकेशदत्त जी शास्त्री जयपुर, माता सुषमा जी अहमदाबाद, पण्डित चन्द्रदेव जी राजोतिया जयपुर, पण्डित शनिलाल जी बड़ौदा, पण्डित रामरतन जी रतलाम आदि प्रमुख थे। जिनसे सम्पर्क घनिष्ठ होता चला गया और जांगिड ब्राह्मण और विश्वकर्मा समाज की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित इनके लेख आदि पढ़कर तथा इनसे पत्र व्यवहार के द्वारा मुझे वैदिक सिद्धान्तों का प्रारम्भिक ज्ञान हुआ और मुझमें सामाजिक सरोकारों से युक्त लेखों के पठन-लेखन की रुचि जागृत हुई, जबकि मेरी हिन्दी हस्तलेखन की स्थिति अत्यन्त दयनीय थी। मेरे पत्र व लेख लेखन का कार्य मेरी सुपुत्री तथा समाजबन्धु सतीशजी करते थे। वर्ष २००२ में मेरे द्वारा सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन आयोजित किया गया। जिसमें मैने और मेरे सुपुत्रों तथा अन्य युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया। वर्ष २००५ में इन्दौर आ जानें से मेरा सामाजिक सेवा क्षेत्र और अधिक विस्तृत व व्यापक हो गया। मैं अखिल भारतीय जांगिड ब्राह्मण महासभा की प्रान्तीय ईकाई में प्रदेश वरिष्ठ उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया। वर्ष २००९ में मैने प्रदेश अध्यक्ष का चुनाव लड़ा और विजयी रहा। अनेक समाज बन्धु मेरी बढ़ती प्रतिष्ठा से ईर्ष्या कर मेरे विरुद्ध षड्यन्त्र रचने लगे। प्रभु कृपा से मुझे द्वेषपूर्वक मेरे कार्यकाल से पूर्व ही हटा दिया गया और मैं भविष्य में चुनाव नहीं लड़ सकूँ इस हेतु मेरी सदस्यता को चार वर्ष के लिए निलम्बित कर दिया गया। इस घटना ने मुझे आर्य समाज की ओर बढ़ने में गति प्रदान की। बहुत दिनों से मैं विश्वकर्मा समाज का कोई समाचार पत्र प्रकाशित करने का मन बना रहा था, यह विचार त्याग कर मैने वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार-प्रसार को समर्पित वैदिक संसार का प्रकाशन २५ सितम्बर २०११ को मध्य भारतीय आर्य प्र. सभा के तत्कालीन प्रधान दलवीर सिंहजी राघव के करकमलों द्वारा आर्य समाज मल्हारगंज (इन्दौर) में विमोचन करवाकर प्रारम्भ किया। जिसने मुझे और मेरे परिवार को शनै:-शनै: जांगिड समाज से दूर कर आर्य समाज की ओर अग्रसर कर दिया।

मुझमें पत्रिका प्रकाशन का कोई शक्ति-सामर्थ्य नहीं था, वैदिक ज्ञान और सिद्धान्त का ज्ञान तो दूर की बात, मुझे संस्कृत भाषा का भी न तो कोई ज्ञान था, न अब है। शैक्षणिक पक्ष भी अत्यन्त न्यून था। आर्थिक पक्ष भी अत्यन्त दुर्बल था। बच्चों का शैक्षणिक काल चल रहा था, अभी न तो बच्चों के विवाह हुए

थे और न ही बच्चे कुछ धन उपार्जन करने लगे थे। कुछ था तो मात्र और मात्र प्रभु कृपा से आत्मबल और कर्तव्यनिष्ठा थी,जब इनके बूते पर कार्य प्रारम्भ किया तो अनेक आरोह-अवरोह आये किन्तु प्रभु कृपा से आर्य जगत् के अनेक उच्च कोटि के विद्वानों, उदारमना स्नेही बन्धुओं के आशीर्वाद व सहयोग से कार्य का विस्तार होता चला गया और वैदिक संसार निर्बाध गति से अतिशीघ्र अपने जीवन के १३ वर्ष पूर्ण करने जा रहा है।

मूल प्रश्न जीवन के ६३ वर्ष में जब जन्म दिवस मनाने का कोई औचित्य उत्पन्न नहीं हुआ तो अब जन्मदिवस क्यों ? का यह उत्तर नहीं, मात्र भूमिका है।

मैने जब वर्ष १९९९ में जांगिड ब्राह्मण समाज के नवयुवक मण्डल अध्यक्ष के रूप में समाज सेवा के क्षेत्र में सर्वप्रथम पदार्पण किया। उसके पश्चात् लगभग वर्ष २००० से ही मैंने व्यवसाय आदि को पूर्णत: त्याग दिया और तब से लेकर आज तक मेरा सामाजिक सेवा क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत राष्ट्रीय स्तर पर होने से जीवन में मेल-जोल, आवागमन-भ्रमण खूब रहा, जिसका पदे-पदे लाभ भी बहुत हुआ। आय का कोई साधन नहीं था, अपने स्वयं के व्यय की पूर्ति के साथ-साथ परिवार का भरण-पोषण व बच्चों के शिक्षा आदि से लेकर विवाह आदि तक के दायित्व के व्यय वहन करना कष्टप्रद ही नहीं, एक चुनौती था। सामाजिक सेवा क्षेत्र में प्रतिष्ठा अर्जित करना तो सहज होता है किन्तु शुचितापूर्ण प्रतिष्ठा बनाए रखना अत्यन्त कठिन होता है **सामाजिक सेवा क्षेत्र को 'काजल की कोठरी' कहा गया है जहाँ बिना कुछ किये भी दाग लग ही जाता है क्योंकि आपसे अनावश्यक ईर्ष्या रख दाग लगाने वाले बहुत होते हैं।** व्यवसाय काल में अर्जित की गई लगभग १५ एकड़ कृषि भूमि, जिसमें कुछ भूमि मेन रोड पर अत्यन्त मूल्यवान थी और लगभग २५ कमरों का तीन तल्ला आधा मकान इस चुनौती की, आज से १५-१७ वर्ष पूर्व जब सम्पत्तियों का कोई मूल्य और क्रेता नहीं होते थे तब ओने-पौने दाम पर भेंट चढ़ गया। लगभग २५ कमरों का शेष आधा मकान भी समय-समय पर आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु गिरवी रख दिया गया। कोई बात नहीं, भौतिक धन-सम्पदा की खूब हानि तो अवश्य हुई किन्तु सन्तान के भविष्य निर्माण और आध्यात्मिक सम्पदा प्राप्ति के क्षेत्र में ईश्वर की खूब कृपावृष्टि हुई।

मैं जब वर्ष २००५ में बड़वानी को हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ कर इन्दौर आ गया, तब मेरा दृष्टिकोण यह भी था कि बड़वानी रेलवे सुविधा व औद्योगिक विकास, रोजगार तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं से विहीन क्षेत्र है। उस समय कोई चिकित्सीय अथवा शैक्षणिक आवश्यकताएँ हो तो १५० किलोमीटर दूर इन्दौर पर निर्भर रहना होता था। सतपुड़ा पर्वत तलहटी में बसा आदिवासी कृषक बहुल क्षेत्र है। रोजगार आदि की विपुलता न तो पहले थी न अब है। एक प्रकार से मुझे इस क्षेत्र जो कि मेरी और मेरे बच्चों की जन्मभूमि था, से घृणा सी हो गई थी। जब मैं वर्ष २००५ में इन्दौर गया तो यह सोच कर गया था कि अब मैं कभी बड़वानी लौट कर नहीं आऊँगा। मैंने अपने बच्चों को यहाँ तक कह दिया था कि **'बड़वानी की हमारी समस्त सम्पत्ति विक्रय हो जाना चाहिए किन्तु तुम्हारे भविष्य की सम्पत्ति बन जाना चाहिए, कोई भी बड़वानी लौट कर मत जाना अन्यथा यह मेरा दुर्भाग्य होगा।'**

गिरवी रखे मकान की १०-१२ वर्ष तक मैने कोई सुध नहीं ली। वर्ष २०१८ में बच्चों के सहयोग से मकान को गिरवी से छुड़ाया गया तथा उसका रंग-रोगन कर वहाँ पर **'चतुर्वेद शतकम् पारायण यज्ञ'** का आयोजन किया गया। **वैसे वर्ष २०१२ में भी वैदिक संसार की प्रथम वर्षगाँठ व माताजी की प्रथम पुण्यतिथि उपलक्ष्य में 'आठ दिवसीय अथर्ववेद पारायण यज्ञ' का आयोजन किया गया** किन्तु वह अन्य किराये के स्थल पर किया गया था और उसके बाद बन्द पड़े आर्य समाज को तत्कालीन प्रधान दलवीरसिंह जी राघव के अनुरोध पर इन्दौर से प्रति रविवार बड़वानी आकर अपने निजी व्यय पर लगभग आठ माह तक साप्ताहिक सत्संग तथा अन्य आयोजन कर जीवन्त करने का पुरजोर प्रयास किया। मन में एक टीस होती थी कि मेरी जन्मभूमि क्षेत्र में वैदिक धर्म तथा आर्य समाज का कोई कार्य प्रचार-प्रसार नहीं है। यहाँ तक कि लोग महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्य समाज के नाम से भी परिचित नहीं है और आदिवासी बहुल ग्रामीण क्षेत्र में विधर्मी गतिविधियाँ चरम पर है।

मकान गिरवी से छुड़ा लेने के पश्चात् भी मेरा कहीं से कहीं तक मानस नहीं था कि मैं बड़वानी लौटकर आऊँगा, मेरा मानस था कि हम मकान को विक्रय कर देंगे क्योंकि अब समस्त बच्चे शामगढ़, राऊ, इन्दौर में अपने निजी आवास बनाकर व्यवसाय आदि से व्यवस्थित हो चुके हैं और मेरा तथा बच्चों का बड़वानी में निवास का कोई कार्य और कारण नहीं है अपितु हम सभी के लिए परिस्थितियाँ विषम है किन्तु पूर्व में मैंने लिखा है कि परमात्मा की लीला अपरम्पार है हमारे जीवन में क्या मोड़ आएगा हमें पता नहीं होता, हमारा सोचा-विचारा तथा बनाई गई योजनाएँ सब धरे के धरे रह जाते हैं। ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी हुआ। कोरोना काल के पूर्व ८ मार्च २०२० को मैं अपनी धर्मपत्नी के साथ मकान में कुछ कार्य करवाने का मानस बनाकर बड़वानी आया। कुछ दिनों पश्चात् कोरोना महामारी की महात्रासदी प्रारम्भ हो गई। इस काल में मैं यहीं का होकर रह गया। मकान विक्रय का बहुत प्रयास किया किन्तु समुचित मूल्य नहीं मिलने और बच्चों की मकान विक्रय की इच्छा न होने से विक्रय नहीं किया। यह भी विचार आया कि अब वृद्धावस्था की ओर बढ़ रहे हैं कब तक भागेंगे-दौड़ेंगे ? कभी तो थक-हार कर एक स्थान पर बैठना पड़ेगा। क्यों ना बड़वानी स्थित मकान को ही इस जीवन का अन्तिम आश्रय स्थल तथा सेवाकार्य स्थल बनाया जाए ? वैसे भी जीवन का अधिकांश समय यहाँ व्यतीत होने से यहाँ से आत्मीय भावनाएँ जुड़ी हुई है तथा यह भावना भी प्रबल है कि मेरी जन्मभूमि के क्षेत्र निवासियों को भी वैदिक धर्म सिद्धान्तों का ज्ञान लाभ प्राप्त हो और ग्रामीण क्षेत्र से महाविद्यालयीन विद्या हेतु बड़वानी आने वाले बालकों को अल्प व्यवस्था शुल्क पर आवास उपलब्ध करवाकर उन्हें वैदिक दिनचर्या और वैदिक सिद्धान्तों का प्रशिक्षण दिया जाए तथा वैदिक सिद्धान्तों की इस बंजर भूमि को उर्वरा बनाने का प्रयास किया जाए। यह सोचकर मकान विक्रय का विचार त्यागकर लॉकडाउन की समाप्ति के बाद मकान में आवश्यक सुधार का कार्य प्रारम्भ किया गया और इसे नाम दिया गया **'महर्षि दयानन्द सरस्वती विद्यार्थी आवास आश्रम'**। इस प्रकार उस बड़वानी में मेरी वापसी हो गई जहाँ मैं लौटना नहीं चाहता था।

आश्रम पर नित्यप्रति प्रात:काल ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, सायंकाल संध्योपासना तथा बौद्धिक उपदेश, रविवारीय साप्ताहिक सत्संग एवं आश्रम निवासरत समस्त बच्चों के जन्म दिवस वैदिक विधि से मनाना प्रारम्भ किया गया। बिना अनुमति के बाहरी व्यक्ति का प्रवेश निषेध है तथा आश्रम में अभक्ष्य पदार्थों का सेवन प्रतिबन्धित है। वर्तमान में अत्यन्त सामान्य आर्थिक स्थिति के दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों के आदिवासी कृषक परिवारों के सच्चरित्र, शिक्षा के प्रति अत्यन्त गम्भीर, परिश्रमी, अनावश्यक बनाव श्रंगार एवं शहरी चकाचौंध से दूर ४ बालक एवं २२ बालिकाएँ निवासरत हैं। समस्त बालक-बालिकाओं को यज्ञ एवं ब्रह्मयज्ञ के मन्त्र कण्ठस्थ हो चुके हैं। समस्त बच्चे अभिवादन नमस्ते करने लगे हैं। लगभग १० सदस्यों के प्रवेश की और क्षमता है। असहाय तथा वैदिक धर्म सिद्धान्त प्राप्ति की ललक रखने वाले जिज्ञासु सुपात्र विद्यार्थियों को भविष्य में व्यवस्था शुल्क में कमी अथवा पूर्णत: निशुल्क किए जाने की भी योजना है। बालक-बालिकाओं को आर्य वीर दल शिविर और आर्य वीरांगना शिविर में भाग लेने हेतु प्रेरित किया जाता है। इच्छुक प्रतिभागी का शिविर शुल्क तथा मार्ग व्यय और अन्य व्यय हमारे द्वारा वहन किया जाता है। बालिकाएँ अभी तक किसी शिविर में भाग नहीं ले पाई है किन्तु भविष्य में भाग लेने की सम्भावना है। कुछ बालक जिनमें आश्रम से बाहर के भी बालक है धार, अजमेर और महू

के शिविरों में भाग ले चुके हैं और जिसका परिणाम सकारात्मक रहा है। शिविर से प्रशिक्षण प्राप्त किए बालक तीन अलग-अलग शासकीय आदिवासी बालक छात्रावासों में अन्य बालकों को प्राप्त ज्ञान तथा प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। शिविर में भाग लेने वाले बालकों को समय-समय पर वैदिक साहित्य भेंटकर सम्मानित भी किया जाता है तथा सभी बच्चों को आश्वस्त किया जाता है कि जीवन में कोई कठिनाई हो तो बताना अवश्य, जो भी बन सकेगा सहयोग करने का प्रयास करेंगे। मेरे साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर मेरी धर्मपत्नी श्रीमती दुर्गा शर्मा आश्रम संचालन कर रही है। मेरे प्रवास पर होने की स्थिति में मेरी धर्मपत्नी द्वारा समस्त कार्य निर्वहन किया जाता है। समस्त बालक-बालिकाएँ दादा जी-दादी जी कहकर सम्बोधित करते हैं। वर्ष २०२४ से आमन्त्रित विद्वानों की उपस्थिति में मास के प्रथम शनिवार को रात्रि कालीन सत्र तथा रविवार को प्रात: कालीन सत्र भोजन व्यवस्था के साथ मासिक सत्संग प्रारम्भ किए जाने की योजना है।

ब्रह्मयज्ञ, देव यज्ञ, साप्ताहिक सत्संग, जन्मदिवस विषयक विशेष यज्ञ अथवा पर्व आदि विशेष यज्ञ तथा किसी अतिथि विद्वान् के आगमन पर होने वाले सत्संग आदि आयोजनों में आश्रम निवासरत होने तथा आयु वर्ग की कोई बाध्यता नहीं है। वैदिक ज्ञान पिपासु आश्रम के बाहर का कोई भी व्यक्ति तथा विद्यार्थी सहर्ष भाग ले सकता है व अपना जन्मदिवस भी चाहे तो वेदोक्त विधि से आश्रम पर आकर मना सकता है तथा वह चाहे तो स्वयं के निवास पर भी मना सकता है। इसके लिए सम्पूर्ण व्यवस्था, दायित्व तथा व्यय हम वहन करने को तत्पर हैं। जिज्ञासु सुपात्र सज्जनों को स्वाध्याय हेतु वैदिक साहित्य भी नि:शुल्क सुलभ करवाया जाता है। इस प्रकार एक छोटा सा प्रयास मेरे द्वारा जन-जन तक वैदिक ज्ञान पहुँचाने का किया जा रहा है। आगे प्रभु इच्छा सर्वोपरि है।

आश्रम निवासरत बच्चों का जन्मदिवस वेदोक्त विधि से मनाने का बहुत ही सकारात्मक परिणाम रहा है बच्चों में इसके प्रति बड़ा उत्साह रहता है और बच्चों से एक स्नेह सम्बन्ध आत्मीयतापूर्ण स्थापित हो गया है। अत: मेरे जन्मदिवस की मेरे लिए तो सामान्य बात थी किन्तु आश्रम निवासरत बच्चों में बहुत ही उत्साह था कि दादाजी का जन्मदिवस है। १५ दिवस पूर्व से ही बच्चे प्रफुल्लित थे। इस कारण से बच्चों की प्रसन्नता को ध्यान में रखते हुए मेरे द्वारा निम्न प्रकार से निमन्त्रण पत्र तैयार कर ६३ वर्षों में प्रथम बार ६४ वाँ जन्मदिवस वैदिक धर्म प्रचार को समर्पित, वैदिक विधि से हर्षोल्लासपूर्वक एक आयोजन की तरह मनाया गया।

सुपुत्र गजेश शास्त्री के ब्रह्मत्व में वृहद यज्ञ जन्म दिवस विषयक विशेष मन्त्रों की आहुतियाँ प्रदान कर सम्पन्न किया गया।

यज्ञ पश्चात् मेरे तथा सुपुत्र गजेश द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा अन्य महापुरुषों के जीवन के विशिष्ट प्रसंगों को समक्ष रखकर बच्चों को अपना जीवन मूल्यवान तथा अपने साथ अन्यों के लिए भी उपयोगी परोपकारी बनाने हेतु प्रेरक सन्देश प्रदान किया गया।

इस अवसर पर शिविर में भाग लेने वाले शिविरार्थी जगदीश गोरे, अनिल मोरे, नानूराम मुजाल्दे, राकेश कनोजे का अभिनन्दन सत्यार्थ प्रकाश, व्यवहार भानु, आर्योद्देश्य रत्नमाला, कुछ करो-कुछ बनो, विद्यार्थियों की दिनचर्या तथा वैदिक संसार की प्रति भेंटकर किया गया। शिविरार्थी गौतम मुजाल्दे व कान्हा बघेल की अनुपस्थिति में उनकी बहनों को साहित्य भेंट कर अभिनन्दन किया गया।

बड़वानी से मेरी सासू माँ, ससुर जी, साली श्रीमती नर्मदा शर्मा, साले जी श्री जगदीश शर्मा आपकी धर्मपत्नी श्रीमती अंजना शर्मा, बड़ी भानजी श्रीमती निर्मला शर्मा आपके पतिदेव श्री कैलाशचन्द्र जी शर्मा, आपके सुपुत्र दीपक शर्मा, जितेन्द्र शर्मा, पुत्रवधू श्रीमती चंचल शर्मा, श्रीमती बरखा शर्मा, आपके बच्चे, भानजी के देवर श्री सतीश शर्मा आपकी धर्मपत्नी श्रीमती योगिता शर्मा, सुपुत्र प्रांशुल शर्मा, भानजा सन्तोष शर्मा, भानजा वधू श्रीमती प्रीति शर्मा, आश्रम निवासरत बालक-बालिकाएँ, आश्रम छोड़कर जा चुकी कु. शिवानी निंगवाल तथा इन्दौर से सुपुत्र प्रितेश शर्मा, नितिन शर्मा, गजेश शास्त्री, पुत्रवधू श्रीमती प्रज्ञा शर्मा, श्रीमती प्रियंका शर्मा, श्रीमती हर्षिता शर्मा, सुपौत्री वैदिका शर्मा, सुपौत्र प्रणव उपस्थित रहे।

सबके लिए उत्तम सुस्वादु भोजन की व्यवस्था की गई। इस प्रकार जन्म दिवस मनाकर एक प्रेरक सन्देश अन्य के लिए भी प्रदान किया गया। ■

(चित्र देखें पृष्ठ १९ पर)

निमन्त्रण पत्र

सादर आमन्त्रण

मनुष्य जीवन भी एक विचित्र पहेली है। मनुष्य है तो अल्पज्ञ, अल्पशक्तिमान, सत्य-असत्य को जानने हारा जीवात्मा किन्तु प्रभु प्रदत्त विलक्षण मानव तन को पाकर यह फूला नहीं समाता है और अभिमान में इस प्रकार फूल जाता है कि अपने जीवन के मन्तव्य और गन्तव्य दोनो को भूल जाता है।

मानव का पूर्ण जीवन पराश्रित होता है सर्वप्रथम तो परमपिता परमेश्वर का अनन्य उपकार होता है जो इसे इसके प्रारब्ध अनुसार मानव तन के साथ भोग साधन, वेद ज्ञान और एक सच्चे पिता-पालक-अभिभावक के रूप में उसके कृत्यों पर साक्षी भाव से दृष्टि रखकर उसके मार्ग भटकने पर समय-समय पर उसके अन्त:करण में भय, लज्जा संकोच आदि उत्पन्न कर उसे घोर दु:खदाई नर्कगामी कृत्यों से बचाता भी है तथा माता-पिता, गुरु, बन्धु, भगिनी, पति के लिए पत्नी व पत्नी के लिए पति, सखा आदि सहयोगी उपलब्ध करवाता है। जिनके आश्रय और उपकारों से यह जीवात्मा अपनी जीवन यात्रा को सुख-शान्ति पूर्वक सुचारु रूप से संचालित करते हुए जीवन यात्रा के अपने मन्तव्य और गन्तव्य पथ पर आगे बढ़ता है।

यह अन्यों से पाता तो बहुत कुछ है और इसके अतिरिक्त भी बहुत कुछ पाने की आशा-अपेक्षा करता है किन्तु पाने की तुलना में देता बहुत कम है। स्वयं तो सुख-शान्ति चाहता है किन्तु अन्यों को जीवन पर्यन्त अपनी अल्पज्ञता, अविद्या, स्वार्थ, हठ, दुराग्रह आदि के दुष्चक्र में फँसकर दु:ख-सन्ताप-अशान्ति देता रहता है।

ऐसे ही कुछ करते हुए मेरी अपनी जीवन यात्रा के आज ६३ वर्ष पूर्ण होने जा रहे हैं। कल दिनांक १३ जुलाई २०२३ को मैं अपनी जीवन यात्रा के ६४ वें वर्ष में प्रवेश कर रहा हूँ। इस जीवन यात्रा में अनेक सहयात्री माता-पिता, भगिनी, बन्धु, मित्र आदि अपनी जीवन यात्रा पूर्ण करते हुए इस संसार से प्रस्थान कर गए उनकी पावन स्मृति और उनके उपकारों को स्मरण करते हुए इस जीवन यात्रा के सहयात्री के रूप में सम्मिलित धर्मपत्नी, सुपुत्र, सुपुत्री, पुत्रवधू, सुपौत्र, सुपौत्री, दोहित्र, दोहित्री, मित्र, सगे-सम्बन्धियों, स्नेहीजनों की उपस्थिति में प्रात:काल ९ बजे संसार के श्रेष्ठतम कर्म देवयज्ञ में परमपिता परमेश्वर की कल्याणी वाणी वेद के मन्त्रों की आहुतियाँ प्रदान कर तथा विगत दिनों महू में आयोजित **'युवा संस्कार शिविर'** में भाग लेने वाले बालकों का वैदिक साहित्य भेंटकर अभिनन्दन के द्वारा जीवन यात्रा के मन्तव्य और गन्तव्य की दिशा में कुछ अग्रसर हो सकूँ इसका प्रयास किया जावेगा।

इस अवसर पर आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। कृपया उपस्थित होकर अनुग्रहीत करें। प्रात:कालीन भोजन आपके साथ करने का आकांक्षी हूँ, कृपया सौभाग्य प्रदान करें।

अत्यन्त विनम्रतापूर्वक निवेदन है कि जीवन में पदे-पदे आप द्वारा प्रदत्त स्नेह असीम है अत: किसी प्रकार का कोई उपहार आदि वस्तु न लावें। धन्यवाद।

● **भवदीय : सुखदेव शर्मा**

धर्मात्मा श्रीकृष्ण और पापात्मा कर्ण

● पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

श्री रामचन्द्र जी, श्रीकृष्णचन्द्र जी दोनों पवित्रात्मा, परम ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देवपुरुष, मानवता के पुंज एवं जीव मात्र के रक्षक थे। यदि इन दोनों देवदूतों को भारत के इतिहास से अलग कर दिया जाए तो आर्य सभ्यता-संस्कृति का सुन्दर महल धड़ाम से नीचे गिरकर चकनाचूर हो जाएगा। इस लेख के द्वारा मैं संसार के नर-नारियों को योगिराज श्री कृष्ण के पवित्र जीवन की पवित्रता के विषय में ही कुछ उनके शुभ कार्यों, उच्च विचारों से अवगत करा रहा हूँ। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि पाठकगण पढ़कर भारी लाभ उठाएँगे।

श्रीकृष्ण जैसा त्यागी-तपस्वी, धर्मात्मा, वीर, बलवान, वेद भक्त, देशभक्त, स्पष्टवादी, सत्यवादी, धर्मात्माओं का रक्षक, विद्वानों का सेवक, विनम्र, सुशील, निराभिमानी और योगी द्वापर युग में संसार में कोई दूसरा नहीं था। श्रीकृष्ण का लक्ष्य था धर्मात्माओं की रक्षा तथा पापियों का खात्मा करना।

श्रीकृष्ण आप्त पुरुष थे। उन्होंने अपने जीवन में कोई वेद विरोधी काम नहीं किया। श्रीकृष्ण ने अपने सगे मामा, मथुरा के राजा अत्याचारी कंस का वध किया। यदि वे चाहते तो मथुरा राज्य की प्रजा के आग्रह को मानकर मथुरा राज्य के राजा बन सकते थे। उन्होंने उस समय साफ कहा जो ध्यान देने योग्य है। संसार के सभी राजनेता समझें तो संसार का कल्याण हो जाएगा। अत: ठीक तरह विचार करके धर्म लाभ उठाने का कष्ट करें।

''मेरे प्यारे बहिन-भ्रात सब, मेरा अब ऐलान सुनो।
राज्य सम्भालेंगे नानाजी, मम इच्छा धर ध्यान सुनो।
राज्य आर्यों का चक्रवर्ती, मैं अब लेने जाऊँगा।
सुखी करूँगा सारे जग को, वैदिक धर्म निभाऊँगा।।''

पाठकगण! तनिक विचार करो। क्या ऐसा त्याग अब कोई तुम्हें इस संसार में नजर आता है। श्रीकृष्ण ने महाभारत का घोर युद्ध रोकने को भारी परिश्रम किया। वे स्वयं दूत बनकर संधी का प्रस्ताव लेकर हस्तिनापुर गए। उन्होंने दुर्योधन को हर तरह समझाया। अंत में पांडवों को केवल पाँच गाँव देने की दुर्योधन से प्रार्थना की, किन्तु दुर्योधन ने उनकी प्रार्थना ठुकराते हुए ऐसा कहा-

''कान खोल कर सुने ले ग्वाले। सूई नोंक सम भी धरती।
उन्हें न दूँगा, मुझसे तो अब, यह सारी दुनिया डरती।।
अगर पाण्डव कभी कृष्ण सुन, किसी दिवस मर जाएँगे।
यहाँ जलाने उन्हें न दूँगा, उन्हें चील, गिद्ध खाएँगे।''

दुर्योधन ने उन्हें बंदी बनाना चाहा। जहर देकर मारना चाहा। हर प्रकार उनका निरादर किया। अंत में वे विवश होकर वापिस विराट नगर आ गए। अब जरा विचार करो। जो लोग श्रीकृष्णचन्द्रजी पर महाभारत का युद्ध कराने का दोषारोपण करते हैं, वे कितना अन्याय करते हैं। कई व्यक्ति कहते हैं कि कर्ण ने अपने प्रश्नों से युद्ध क्षेत्र में योगिराज को निरूत्तर एवं लज्जित कर दिया था। वे महाभारत में स्पष्ट वर्णन पढ़ें तथा ईमानदारी दिखाएँ।

''अर्जुन के श्रीकृष्ण सारथी, थे भारी गुणवान सुनो।
युद्ध कला में निपुण बहुत थे, सभी खोलकर कान सुनो।
केशव ने अर्जुन का रथ, चतुराई से था घुमा दिया।
कर्ण के रथ को रघुनन्दन ने, दलदल में था फँसा दिया।
होकर के मजबूर कर्ण ने, अर्जुन से तब फरमाया।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, कर्ण बहुत था घबराया।।
बार-बार अर्जुन से कहता था, मत बाण चला अर्जुन।
मानवता का पालन कर तू, क्षत्रिय धर्म निभा अर्जुन।।''

सज्जनो! कर्ण गिड़गड़ाते हुए अर्जुन को उपदेश सुनाते हुए ऐसे कहने लगा-

भजन (तर्ज : हरियाणा)

दल-दल में रथ फँसा हुआ है, मैं आज बहुत लाचार।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, मत कर मुझ पर वार।।
निहत्थों पर जो हमला करता।
वह नर घोर नर्क में पड़ता।।
महानीच हत्यारा है वह, करले तनिक विचार।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, मत कर मुझ पर वार।।१।।
अपना भाग्य जरा आजमा लूँ।
रथ का पहिया बाहर निकालूँ।।
दो-दो हाथ करूँगा फिर मैं, दिल में ली है धार।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, मत कर मुझ पर वार।।२।।
मैं लड़ने से न घबराता।
अर्जुन तुझको साफ बताता।।
ना मैं खौफ मौत का खाता, जान रहा संसार।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, मत कर मुझ पर वार।।३।।
अर्जुन! धर्म की रक्षा कर लूँ।
अपने सिर पर पाप न धर तू।।
'नन्दलाल' तू वेद धर्म का, कर जग में प्रचार।
बन्द लड़ाई कर दे अर्जुन, मत कर मुझ पर वार।।४।।

पाठकगण! ध्यान देने का कष्ट करें, श्रीकृष्ण का तो जीवन लक्ष्य ही धर्म की रक्षा और पापियों का नाश करना था। कर्ण जब बार-बार धर्म पालन की रट लगाए जा रहा था तो श्रीकृष्ण उसे धर्म-कर्म करने का दर्पण दिखाते हुए एवं फटकारते हुए तथा अर्जुन को कर्ण के खोटे कर्मों की याद दिलाते हुए कुरुक्षेत्र के मैदान में कर्ण से कहने लगे।

इसे समझने से सबका भला होगा। अत: सभी ध्यान दें-

भजन (तर्ज : हरियाणा)

आज कर्ण तू युद्ध क्षेत्र में, देता धर्म दुहाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।।
उस दिन को कर याद, भीम को तुमने जहर खिलाया।
जहर खिलाकर, तुमने उसको गंगा बीच बहाया।।
जुल्म किया था, महल लाख का, एक बड़ा बनवाया।
धोखा किया बड़ा भारी, ना ईश्वर का भय खाया।।
धीर-वीर बलवानों की मर्यादा धूल मिलाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।।१।।
तूने, शकुनी, दु:शासन ने, दुर्योधन बहकाया।
जुआ खेलने इन पाण्डवों को, हस्तिनापुर बुलवाया।
जुआ जाल में इन भोलों को, तुमने कर्ण फँसाया।
राजपाट धन माल खजाना, इनका सब कब्जाया।
भरी सभा में सती द्रौपदी, तुमने बहुत सताई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।।२।।
मैं हस्तिनापुर गया कर्ण, दुर्योधन को समझाने।
मिल करके तुम सभी लगे थे, मेरी हँसी उड़ाने।
गऊ चराने वाला कह, मेरा अपमान किया था।
तुमने भले-बुरे का पापी, कुछ ना ध्यान किया था।
तूने अपनी मौत कर्ण सुन, अपने आप बुलाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।।३।।
मेरी बात कर्ण सुन उस दिन, मान अगर तुम लेते।
इन पाण्डवों को पाँच गाँव तुम, उस दिन दिलवा देते।।
घोर युद्ध सुन कर्ण कुचाली, बोल दुष्ट क्यों होता।
अबला, बालक नहीं बिलखते, यह जग सुख से सोता।
काल न बनते एक दूसरे का, आपस में भाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्त तुझे न आई।।४।।
अभिमन्यु कौरव सेना के, काबू में ना आया।
तुम सबका अभिमान धूल में, उसने कर्ण मिलाया।
चक्रव्यूह को तोड़ दिया था, भारी युद्ध मचाया।।
सातों टूट पड़े बालक पर, धर्म-कर्म बिसराया।
युद्ध क्षेत्र में गिरे हुए पर, तुमने गदा चलाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।।५।।
जैसी करनी, वैसी-भरनी, कहते ज्ञानी-ध्यानी।
कीकर बोकर, आम कभी ना, खा सकता अज्ञानी।।
दुर्योधन का साथ निभाया, की हरदम शैतानी।
भक्त विदुर से विद्वानों की, सीख कभी ना मानी।।
'नन्दलाल' कहता है तेरी मौत शीश पर छाई।
बात धर्म की करता पापी, शर्म तुझे ना आई।।६।।

सज्जनो! महाभारत में साफ लिखा है। श्रीकृष्णचन्द्र की फटकार सुनकर कर्ण घबरा गया और अर्जुन से बार-बार युद्ध रोकने की प्रार्थना करके गिड़गिड़ाता रहा। उसकी गन्दी हरकतों की गाथा सुनकर अर्जुन ने भी उसे बुरी तरह झिड़का और कहा कर्ण! तेरे पापों की सूची बहुत बड़ी है। वास्तव में श्रीकृष्णचन्द्रजी ठीक कह रहे हैं। मैं अब तुझे जीवित नहीं छोड़ूँगा। पापी तुझे अब कोई नहीं बचा सकता।

अर्जुन की जोश भरी बातें सुनकर कर्ण उसी रथ पर धनुष लेकर चढ़ गया तथा युद्ध करने को तैयार हो गया। यह देखकर योगिराज कृष्णचन्द्र ने अर्जुन को सावधान करते हुए कहा :-

''श्रीकृष्ण बोले, अर्जुन! मत कर तू किसी तरह का भय
धनुष उठाकर बाण चला, अब तेरी विजय हुई निश्चय।।
श्रीकृष्ण के वचन सुने, अर्जुन ने धनुष उठाया था।।
मारा तीक्ष्ण बाण कर्ण को, धड़ से शीश उड़ाया था।।''

कर्ण के मरते ही कौरव सेना में हाहाकार मच गया और दुम दबाकर युद्ध क्षेत्र से सेना भाग गई। जो धूर्त व्यक्ति श्रीकृष्ण को दोष देते हैं। वे मानवता के शत्रु हैं। हमें उन धूर्तो की कुचालों से सावधान रहना चाहिए। वास्तव में श्रीकृष्णचन्द्र तो युग नायक थे। मेरी ईश्वर से प्रार्थना है-

''श्रीकृष्ण जैसे नेता अब, भेजो हे भगवान! यहाँ।
दानवता से तुषित जग का, करो प्रभु! कल्याण यहाँ।
जिससे यह भारत दुनिया का, गुरु दयानिधि बन जाए।
भूखा-नंगा देव भूमि में, कोई नजर नहीं आए।।'' ■

सुख-दु:ख जीवन साथ

दु:ख है आजीवन मनुज तन इसका आधार।
हर कष्ट बरसाती नदी सम बहता पानी की धार।।
आते सुख जीवन में, पीड़ा विपदा कष्ट हर लेते हैं।
हर कष्ट, पूर्व पाप कर्मों का संचय, दिन–रात दु:ख देते हैं।।
सुख–दु:ख का कालचक्र मानो, मौसमी उपहार।।१।।
हर पक्षी मेहनत से, अपना नीड़ बनाता है।
राहगीर भी अपनी मंजिल, खुद चल तय करता है।।
दु:ख–कष्टों से लड़ने वाला, दिखाता साहस शौर्य अपार।।२।।
हर योद्धा को कठिन है, चक्रव्यूह से बाहर निकलना।
कठिन प्रयास से सीख, सफलता होती मुश्किल से मिलना।।
दु:ख–पीड़ा–कष्ट सिखलाता है, जीवन लक्ष्य पाने का अधिकार।।३।।
मानव संघर्षी जग में, जीवन जीना सीख जाता है।
युक्ति बल बुद्धि से, गगन से तारे तोड़ लौट आता है।।
जो कायर कष्ट से डर, समर में जाता बाजी हार।।४।।
श्री कृष्ण से कुन्ती ने, कष्ट माँग रचा था इतिहास।
दुर्योधन ने सुख माँगकर, कराया सब कौरवों का नाश।।
जो दूसरों को कष्ट देता है, उन्हें मिलता सदा काँटों का हार।।५।।
सुख मानो घटते चन्द्र कला की, अमावस है।
दु:ख की हर लहर, अदम शौर्य हिम्मत का बल है।।
सुख–दु:ख निज चिन्तन से परे,
'सुन्दर' ईश ने विचित्र रचा संसार।।६।।

● **सुन्दरलाल प्रहलाद चौधरी**
अधीक्षक : पोस्ट मैट्रिक अनुसूचित जाति बालक छात्रावास
बुरहानपुर (म.प्र.), चलभाष : ९९२६७६११४३

अमर बलिदानी मदनलाल धींगरा

वह गर्म खून होता, जो सब कुछ कर सकता है।
उसमें ज्वाला होती है, पागलपन होता है।।
वह बहता है, तो लावा बनकर बहता है।
उसमें जीवन होता है, संजीवन होता है।।
सारा ब्रिटेन सुन ले, कर रहा घोषणा मैं,
हम बंग-भूमि के टुकड़े फिर से जोड़ेंगे।
मि. कर्जन, यह कान खोल सुन लो तुम भी,
लन्दन तक, पीछा नहीं तुम्हारा छोड़ेंगे।।
क्रान्तिवीरों की महकती है, महक स्वाभिमान की।
लन्दन में बरसती हैं, गोलियाँ हिन्दुस्तान की।।

● डोंगरलाल पुरुषार्थी
प्रधान आर्य समाज, कसरावद, जनपद : खरगोन (म.प्र.)
चलभाष : ८९५९०-५९०९९

मदनलाल धींगरा का जन्म सन् १८८७ में पंजाब के अमृतसर नगर के राय साहब डॉ. दित्तामल के यहाँ हुआ था। जो अंग्रेजी शिक्षा, संस्कृति के अच्छे चाटुकार थे। अंग्रेजों की छत्र-छाया में दित्तामल अमृतसर में मकान, दुकान,गोदाम, खेत- खलिहानों के धनीमानी व्यक्ति थे। दित्तामल ने अपने पुत्रों को उच्च पदों से विभूषित कर अंग्रेज युवतियों से विवाह रचाए। किन्तु मदनलाल को अपने पिता-भाइयों की पाश्चात्य संस्कृति रास नहीं आई। सन् १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के नायक मंगल पाण्डे को आदर्श मानकर भारतीय क्रान्तिकारियों का शत्रु सर कर्जन वायली को मौत के घाट उतारने का ध्येय बनाया। एक बार किसी स्कूल इन्स्पेक्टर ने बालक मदनलाल को एक फाइल पकड़ाते हुए अपनी कार में रखने को कहा, किन्तु मदनलाल ने मना करते हुए कहा- मैं आपका अर्दली नहीं हूँ। इस घटना की शिकायत पर पिता ने मदनलाल की पिटाई कर दी। तो माँ मंशादेवी ने बचाव किया। मदनलाल को अमृतसर से लाहौर उच्च शिक्षा के लिए भेजा। तत्पश्चात् माँ की बीमारी के कारण मदनलाल को विवाह करना पड़ा, उनकी पत्नी सुशीला बहुत ही सेवाभावी महिला थी। अमृतसर में अंग्रेज सरकार ने किसानों पर अतिरिक्त टैक्स लगाने के साथ जमीन, पानी पर भी टैक्स बढ़ा दिया। अस्तु टैक्सों के खिलाफ हड़तालों के कारण अमृतसर जो शान्ति का केन्द्र था, वह विद्रोह का केन्द्र बन गया।

मदनलाल धींगरा

मदनलाल धींगरा इंजीनियरिंग की पढ़ाई के लिए लन्दन गए। जहाँ श्यामजी कृष्ण वर्मा के **'इण्डिया हाउस'** से मदनलाल को छात्रवृत्ति मिलने लगी। सन् १९०८ में सावरकर ने पूरे लन्दन में सन् १८५७ का स्वतन्त्रता संग्राम की ५०वीं वर्षगाँठ मनाने हेतु लन्दन के भारतीय छात्र 'इण्डिया हाऊस' के समारोह में उपस्थित होकर आजादी पर खूब भाषणबाजी हुई, समारोह को यादगार बनाने के लिए '१८५७ स्मारक बिल्ले' सभी छात्रों ने लगाए थे। अगले दिन मदनलाल बिल्ला लगाए कॉलेज पहुँचे तो एक अंग्रेज सहपाठी बिल्ले को देख आग बबूला हो गया कि भारतीय छात्र की यह हिम्मत कि हमारे सामने बिल्ला लगाकर घूमे। वह आगे बढ़कर मदनलाल के कोट पर लगे बिल्ले को खींचने लगा, तो मदनलाल ने उसके मुँह पर तमाचा जड़ दिया और धरती पर पटककर सीने पर बैठ, चाकू निकाला और बोला- तेरी यह औकात कि मेरे देश के सम्मान के प्रतीक को इस तरह नोचने की हिम्मत तूने की। छात्र के गिड़गिड़ाने पर मदनलाल ने उसे छोड़ दिया। इसी तरह क्रान्तिकारी कन्हैयालाल दत्त, खुदीराम बोस, हेमचन्द्र दास आदि को फाँसी दी गई थी। शहीदों की स्मृति का एक बैज लगाकर मदनलाल ने कक्षा में प्रवेश किया तो किसी छात्र की क्या हिम्मत कि बैज निकालने का दु:साहस करे, किन्तु प्राध्यापक ने बैज निकालने हेतु कहा, मदनलाल ने मना कर दिया। बाद में प्राचार्य के पास मदनलाल को भेजा गया, किन्तु मदनलाल ने बैज उतारने के बजाय अर्थ-दण्ड भरना उचित समझा।

१ जुलाई, १९०९ को गुरुवार का दिन था। उस दिन मदनलाल ने अपना रात्रि का भोजन पहले ही कर लिया और निशानेबाजी क्लब में जा पहुँचा। अभ्यास के लिए बारह निशाने लगाए जो सभी ठीक बैठे। इस क्लब से मदनलाल अपने कमरे में पहुँचा और कपड़े बदले। एक बढ़िया सूट पहन कर टाई लगाई और सिर पर आसमानी रंग का साफा बाँधा। आँखों पर गहरे रंग का चश्मा लगाया। दो रिवॉल्वर भरे हुए जेबों में रखे, दो चाकू भी। स्वतन्त्रता की देवी के लिए शत्रु का बलिदान देने की पूरी तैयारी के साथ वह कमरे से चल दिया। भारतीय राष्ट्रीय संस्थान का वार्षिक उत्सव जहाँगीर हॉल में होने वाला था। वह संस्था की सचिव कु. ऐमा से मिला। मदनलाल के आगमन से वह बहुत प्रसन्न हुई। संस्था के अन्य सदस्यों के साथ वह हँसकर बातें करते रहा, पर उसका ध्यान प्रमुख द्वार की ओर था, जहाँ से कर्जन वायली आने वाला था। उत्सव के छुट-पुट कार्यक्रम चल रहे थे।

रात्रि के दस बजे कर्जन वायली पत्नी के साथ वहाँ पहुँच गया। उसके पहुँचते ही सभा में हर्ष की लहर दौड़ गई। वायली भारतीय नौजवानों से मिलता रहा। मदनलाल को देख उसने हैल्लो बोल हाथ मिलाया। वायली ने अपनी कान मदनलाल के मुँह के पास किया। मदनलाल ने अवसर का लाभ लेते हुए झट से अपना पिस्तौल निकाला और वायली के सीने में गोलियाँ दाग दी। फिर तीन गोलियाँ वायली के चेहरे पर भी दागी, जिससे उसकी एक आँख बाहर निकल पड़ी और चेहरा विकृत हो गया। वायली को देख कावसजीलालक्का नामक एक भारतीय पारसी मदनलाल को पकड़ने

हेतु लपका तो शेष गोलियाँ उस पर खाली कर दी। दोनों ही मर चुके थे।

अगले दिन लन्दन के सभी समाचार-पत्रों में कर्जन वायली की हत्या के समाचारों से भारतीय देशभक्त क्रान्तिकारियों के वक्ष गर्व से फूल गए। मदनलाल के शौर्य-वीरता की प्रशंसा में **'आयरिस समाचार पत्रों में 'मदनलाल को बहादुर व्यक्ति की संज्ञा दी गई।'** काहिरा से प्रकाशित होने वाले मिस्र समाचार-पत्र ने **'आगामी ५० वर्षों के बीच ब्रिटिश साम्राज्य के पतन की भविष्यवाणी के साथ समाचार-पत्र द्वारा मदनलाल को अमर शहीद की उपाधि दी गई।'** श्रीमती एनीबेसेंट ने कहा- **'इस समय भारत को बहुत से मदनलाल जैसे वीरों की आवश्यकता है।'** वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय ने मदनलाल की स्मृति में एक मासिक पत्रिका बर्लिन से आरम्भ की जिसका नाम **'मदनलाल तलवार'** रखा गया। भारतीय जनता ने मदनलाल के इस कार्य को भारतीय इतिहास की अविस्मरणीय घटना मानकर मदनलाल को **'शहीद-ए-शेर-ए-दिल'** नाम से विभूषित किया। अमरीका में गदर पार्टी का आरम्भ करने वाले लाला हरदयाल के अनुसार **'मदनलाल ने अपनी मृत्यु को वरण हेतु वैसा कर्म किया है। जैसे एक राजपूत वीर और सिक्ख योद्धा किया करते हैं और मदनलाल ने ब्रिटिश सत्ता को एक करारा तमाचा घर बैठे लगाया।'** वीर सावरकर ने एक स्वर से मदनलाल के इस कार्य को महान् देशभक्ति का कार्य और भारत का महान् सपूत कहा है। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने मदनलाल को अत्यन्त बहादुर क्रान्तिकारी वीरों की श्रेणी में रखा और देश के नौजवानों को अपने सन्देश में कहा- **''आजादी के वृक्ष को सींचने के लिए खून देना ही होगा।''**

इस प्रकार विश्व के महापुरुषों, महानुभावों ने कर्जन वायली की हत्या हेतु मदनलाल के इस कदम की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। वहीं दूसरी ओर अंग्रेज परस्त भारतीयों में 'स्वयं मदनलाल के पिता ने तार द्वारा अपना सन्देश भेजा- **''मैं मदनलाल को अपने पुत्र के रूप में अस्वीकार करता हूँ। इसने मेरे नाम को कलंकित किया है।''** जो कि मदनलाल का पिता हिरण्यकश्यप सिद्ध होते हुए शहीदों का अपमान किया है। दूसरा व्यक्ति कांग्रेस के तत्कालीन अध्यक्ष मदनमोहन मालवीय ने कहा- मदनलाल ने बहुत ही अमानवीय कृत्य किया तथा अशोभनीय अपराधी कहकर भारत के क्रान्तिकारियों के बलिदान और राष्ट्रभक्ति पर तमाचा मार अंग्रेजों को खुश किया। जिस कारण देश आजादी का नहीं वरन् गुलामी का शिकार बनता रहा। मदनलाल और मदनमोहन एक ही राशि के होकर राम और रावण की भाँति यश और अपयश के भागीदार सिद्ध हुए। करोड़ों देश-भक्त भारतीयों ने मदनलाल को अपनी पूरी श्रद्धा के साथ अपनाया और संसार में मदनलाल सबका प्यारा बनकर भारत का पहला क्रान्तिकारी- **'शहीद-ए-शेर-ए-दिल'** नाम से अजर-अमर रहेगा।

२५ जुलाई १९०९ तक मुकदमे की कार्यवाही समाप्त हो गई। न्यायाधीश ने फैसला सुना दिया- मृत्युदण्ड। इस सजा की तारीख १७ अगस्त १९०९ निश्चित कर दी गई। मदनलाल के वक्तव्य में- **''हिन्दू होने के नाते मैं यह विश्वास करता हूँ कि मेरे देश के प्रति किया गया अपराध ईश्वर का अपमान है। मेरी मातृ भूमि का कार्य ही भगवान राम का कार्य है। मातृभूमि की सेवा ही श्रीकृष्ण की सेवा है। मातृभूमि को समर्पित करने के लिए मेरे पास क्या–क्या था? इसी कारण मैं मातृभूमि पर अपनी रक्तांजलि अर्पित कर रहा हूँ। भारत के लोगों को सीखने के लिए इस समय एक ही सबक है और वह यह है कि मृत्यु का आलिंगन किस प्रकार किया जाए कि स्वयं मरकर दिखाया जाए। इसीलिए मैं मरकर दिखा रहा हूँ और अपनी शहादत पर मुझे गर्व है।''**

ईश्वर से मेरी एक ही प्रार्थना है कि मुझे नया जीवन भी भारतीय माता-पिता की गोद में ही प्रदान करे और मेरा जीवन भी भारत माता की आजादी के पवित्र कार्य के लिए समर्पित हो। मेरे जन्म और बलिदान का यह क्रम उस समय तक चलता रहे जब तक भारत माता आजाद न हो जाए। मेरी मातृभूमि की आजादी मानवता के हित-चिन्तन और परमेश्वर के गौरव संवर्द्धन के लिए होगी। समाचार-पत्रों में मदनलाल के इस वक्तव्य को पढ़कर दुनिया की आँखें खुल गईं। उसे मालूम हो गया कि भारतीय नौजवान अपने देश की आजादी की लड़ाई लड़ रहे हैं और मातृ वेदी पर वे अपने प्राणों की आहुतियाँ अर्पण कर रहे हैं।

मदनलाल अपने आक्रोश में यह भी कहते हैं कि मैं अंग्रेजों को अपने देश के तीस करोड़ लोगों का दोषी मानता हूँ। मेरा आशय ५० वर्षों से उनके काले कारनामों से है। यही नहीं अंग्रेज प्रतिवर्ष १० करोड़ पौण्ड का धन भारत से इंग्लैंड लाते हैं। मैं कर्जन वायली को अपने भारतीयों को सताने और अनेकों को मृत्युदण्ड देने का जिम्मेदार मानता हूँ। एक अंग्रेज भारत में १०० पौण्ड प्रतिमाह वेतन पाता है। इससे सीधा अर्थ यही है कि मेरे गरीब देश के एक हजार लोगों का भोजन छीनकर उन्हें मौत के मुँह में धकेलता है। मेरे एक हजार देशवासी १०० पौण्ड से एक माह तक बहुत आराम से जिन्दगी जी सकते हैं। जबकि ये हरामखोर अंग्रेज ऐशो-आराम, अय्याशी में बर्बाद करते हैं।

१७ अगस्त १९०९ का दिन आ पहुँचा। इंग्लैण्ड में रहने वाले भारतीय अपने प्यारे मदनलाल को खो देने के विचार से दुःखी थे। उस दिन सभी ने उपवास रखने का संकल्प किया। बहुत से लोग सिसकियाँ भर-भर कर रो रहे थे और सचमुच में १७ अगस्त १९०९ को भारत माता के एक महान् सपूत को लन्दन की पैन्टोनविले जेल में फाँसी के फन्दे पर झुला दिया गया। फाँसी के बाद गुमनाम कब्र में दफना दिया गया। पंजाब सरकार के प्रयासों के बाद शहीद ऊधमसिंह के अवशेषों को ढूँढे जाते समय अचानक मदनलाल के अवशेष भी मिल गए। १३ दिसम्बर १९७६ को दिल्ली लाकर तथा यहाँ से अस्थि कलश अमृतसर पहुँचा। अवशेषों का भव्य स्वागत हुआ और मदनलाल जिन्दाबाद के घोष के साथ अवशेषों का विसर्जन कर दिया गया।

''संकल्प मदन ने किया, पूर्व में ही था जो,
उसने सोचा यह पूर्ण करूँ, यह अवसर है।
दुश्मन का वध उसके घर में, यह महापुण्य,
यह देश हमारे दुश्मन का अपना घर है।।
शत-शत प्रणाम मेरे उन उमर शहीदों को,
जो भारत आजादी पाने जूझ मरे।
वे मरे नहीं हैं, यश-काया से जीवित हैं,
धरती के कण-कण में हैं, उनने प्राण भरे।। ■

जय भारती।।

कुछ क्रान्तिकारियों का संक्षिप्त परिचय

● **खुशहालचन्द्र आर्य**
द्वारा- गोविन्दराम आर्य एण्ड सन्स
१८०, महात्मा गान्धी मार्ग, कोलकाता
चलभाष : ९८३०१३५७९४

प्रत्येक देश हितैषी भारतीय का यह पावन कर्तव्य है कि वह अपने देश में हुए क्रान्तिकारी जिनके बलिदानों से हमें आजादी मिली है, उनके जीवन के सम्बन्ध में थोड़ी-बहुत जानकारी जरूर-जरूर रखनी चाहिए। हम अपने दादा-परदादा की जानकारी इसलिए रखते हैं, जिससे हमें अपने परिवार के गौरव और प्रतिष्ठा का अनुभव होता है और परम्पराओं की जानकारी होती है। इससे एक प्रकार के आनन्द की अनुभूति होती है। इसी प्रकार हमारे देश का गौरव बढ़ाने वाले क्रान्तिकारियों को भी हमें स्मरण रखना चाहिए और उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने मन में भी देश भक्ति की अग्नि को प्रज्ज्वलित करनी चाहिए और अपने देश की उन्नति व समृद्धि में हम क्या सहयोग दे सकते हैं, इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए। हम ऐसा कोई काम नहीं करें जिससे देश को हानि पहुँचे। इसी उद्देश्य से मैंने यह लेख लिखा है, जिसको मेरे देश का प्रत्येक नौजवान पढ़े और देश के हित में सदैव विचार करता रहे और ऐसा कोई कार्य नहीं करें जिससे देश को हानि पहुँचे और ऐसे काम करें जिससे देश उन्नति और समृद्धि की ओर अग्रसर होता रहे। यदि इन विचारों के सभी भारतीय हो जाएँ तो हमारे देश के चरित्रवान और देशभक्त प्रधानमन्त्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदीजी के हाथ मजबूत होंगे और उनको देश की उन्नति व समृद्धिशाली बनाने में सहयोग मिलेगा। मेरी यही सदिच्छा है कि क्रान्तिकारियों के जीवन सम्बन्धी जानकारी हर व्यक्ति रखे। हमारे देशवासियों द्वारा स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए पहला प्रयास सन् १८५७ में किया गया था। वह प्रयास असफल हो जाने के बाद, अंग्रेजों ने इतना कड़ा सिकंजा खेंच दिया था। और देशवासियों को इतनी अधिक पीड़ा देने लगे थे जिससे वे सिर ऊँचा भी नहीं कर सकें। चालीस वर्षों तक ऐसी ही घुटन बनी रही। सन् १८९७ में चापेकर परिवार के तीन बन्धुओं ने अपना बलिदान देकर, यह चुप्पी तोड़ी।

१. चापेकर के तीन बन्धु : सन् १८९७ में पूना में प्लेग फैलने के बहाने मकान खाली करवाने के लिए मिस्टर रैण्ड ने भारतीयों पर भारी अत्याचार किए और उनके मान-सम्मान को भी आघात पहुँचाया। तब चापेकर परिवार के दो सगे भाई जिनके नाम थे दामोदर चापेकर व बालकृष्ण चापेकर ने मिस्टर रैण्ड की हत्या करके इसका बदला लिया और तीसरे भाई वासुदेव चापेकर ने उन मुखबिरों को गोली से उड़ाया। जिन्होंने विश्वासघात करके चापेकर बन्धुओं को फाँसी दिलाई थी। इस प्रकार आजादी के लिए तीन सगे भाई फाँसी पर खुशी-खुशी झूल गए।

२. श्यामजी कृष्ण वर्मा : श्यामजी कृष्ण वर्मा का जन्म ४ अक्टूबर १८५७ को करसनजी भंसाली के यहाँ गुजरात राज्य के कच्छ प्रदेश में माण्डवी नगर के समीप विलायत गाँव में हआ था। इनके माता-पिता का निधन इनकी बहुत छोटी अवस्था में ही हो गया था। वर्माजी, बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि तथा अत्यधिक मेधावी थे। मगर निर्धन परिवार से सम्बन्ध होने के कारण इन्होंने धनाढ्य लोगों के यहाँ काम करके अपना जीवन निर्वाह करना पड़ा। उन्हीं के सहयोग से ही वर्माजी अपने परिश्रम के कारण अध्ययनरत रहे। इन्होंने सन् १८७४ में महर्षि दयानन्दजी का मुम्बई में आचार्य कमलनयन से शास्त्रार्थ सुना था और भी स्वामीजी के कई व्याख्यान सुने जिनसे वर्माजी महर्षि दयानन्दजी से बहुत अधिक प्रभावित हो गए और स्वामीजी ने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना १८७५ में की तब सर्वप्रथम अध्यक्ष इनको बनाया और फिर स्वामीजी ने श्री विनियर विलियम के निवेदन पर वर्माजी को आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का संस्कृत प्राध्यापक बनाकर इंग्लैण्ड भेज दिया। वहाँ वर्माजी ने अपनी विद्वता से अपनी धाक जमा ली और अध्यापन के साथ-साथ अपना अध्ययन भी जारी रखा और एम.ए. करने के साथ-साथ बैरिस्टर भी बन गए। स्वामीजी ने वर्माजी को अध्यापन के साथ-साथ बाहर रहकर भारत को स्वतन्त्रता दिलाने का प्रयास करने की भी कही थी। इसलिए वर्माजी ने १९०५ में २५ कमरों का एक मकान खरीदकर उसका **'इण्डिया हाऊस'** नाम रख कर उसको क्रान्तिकारियों का आश्रय स्थल बना दिया जिसमें वीर सावरकर, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, मैडम कामा, विपिनचन्द्र पाल आदि आते रहते थे। यहीं पर रह कर मदनलाल धींगरा ने सर विलियम कर्जन वायली जो भारतीय युवकों को स्वधर्म और स्वदेश प्रेम से विमुख करता था, उसको गोली मारकर हत्या कर दी थी। वर्माजी ने एक घोषणा की थी कि जो छात्र अंग्रेजों की नौकरी न करने की तथा तन, मन, धन से देश की सेवा का व्रत लेंगे, ऐसे युवकों को प्रतिवर्ष दो हजार रुपए छात्रवृत्ति के रूप में दिए जाएँगे। इस घोषणा के अनुसार बाल गंगाधर तिलक ने वीर सावरकर को इंग्लैण्ड इण्डिया हाऊस में भेजा और सावरकर ने क्रान्तिकारियों को इतना अधिक प्रभावित किया जिससे **'इण्डिया हाऊस'** क्रान्तिकारियों का केन्द्र बन गया। जब वर्माजी पर अंग्रेज गुप्तचरों की कड़ी नजर रहने लगी तो वे इण्डिया हाऊस की पूरी जिम्मेदारी सावरकर पर लगाकर स्वयं १९०७ में इंग्लैण्ड छोड़कर पेरिस (फ्रांस) चले गए। वहाँ पर भी श्रीमती भीका कामा के साथ क्रान्तिकारी प्रक्रिया करते रहे, फिर सन् १९१४ में प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ गया। तब वे पेरिस से स्विटजरलैण्ड होते हुए जेनेवा चले गए और ३१ मई १९३० में ७३ वर्ष की आयु में उस वीर पुरुष, क्रान्तिकारियों के गुरु श्यामजी कृष्ण वर्मा का निधन हो गया।

३. लाला लाजपत राय : पंजाब केसरी लाला लाजपत राय एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। वे एक ओजस्वी वक्ता, समाजसेवी, सिद्धहस्त लेखक, कुशल सम्पादक, कट्टर राष्ट्रवादी, राजनीतिज्ञ, भावुक हृदय, शिक्षाशास्त्री एवं निर्भीक क्रान्तिकारी थे। लालाजी का पैतृक गाँव लुधियाना जिले में जगरांव था, मगर उनका जन्म उनके ननिहाल गाँव ढुढिबे जिला फरीदकोट (पंजाब) में २८ जनवरी १८६३ को हुआ। इनके पिता का नाम राधाकृष्ण तथा माता का नाम गुलाबी देवी था। लाजपतरायजी की

शिक्षा पाँचवें वर्ष में आरम्भ हुई। सन् १८८० में इन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एण्ट्रेंस की परीक्षा एक ही वर्ष में पास की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर आ गए। यहाँ पर उन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज में प्रवेश लिया तथा १८८२ में एम.ए. और मुख्तारी (कानून) की परीक्षा एक साथ कर ली। यहाँ पर हंसराज तथा पं. गुरुदत्तजी इनके सहपाठी थे तथा उन्हीं के माध्यम से उनका सम्पर्क आर्य समाज से हुआ। वे आर्य समाज व महर्षि दयानन्द से इतने अधिक प्रभावित हुए कि वे कहते थे कि **'आर्य समाज मेरी धर्म की माँ है तथा महर्षि दयानन्द मेरे धर्म के गुरु हैं।'** ३० अक्टूबर १८८३ में महर्षि दयानन्दजी का देहावसान हो गया तथा १ नवम्बर १८८३ को लाहौर में आर्य समाज की ओर से एक शोक सभा का आयोजन किया। इस सभा में निर्णय हुआ कि महर्षिजी की स्मृति में एक महाविद्यालय की स्थापना की जाए। इसी क्रम में कालान्तर में डी.ए.वी. की स्थापना हुई जिसमें लालाजी की विशेष भूमिका रही।

इसके बाद सन् १८८५ में लालाजी वकालात करने के लिए रोहतक आ गए। यहाँ रहते हुए उन्होंने वकालात की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली और उसके बाद १८८६ में वे हिसार आकर वकालात करने लगे। साथ ही आर्य समाज तथा कांग्रेस के माध्यम से समाज सेवा भी करने लगे। सन् १९०५ में जब बनारस में कांग्रेस के अधिवेशन के अवसर पर ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया तो स्वाभिमानी लालाजी ने इसका डटकर विरोध किया। मानों यहीं से कांग्रेस में गर्म दल व नरम दो दलों की नींव पड़ गई। कांग्रेस में इस विचारधारा के आदमी काफी हो गए कि स्वतन्त्रता केवल गिड़गिड़ाने से नहीं मिलेगी, इसके लिए कुछ कुर्बानियाँ देनी होंगी। इस विचारधारा के विशेष लालाजी, बाल गंगाधर तिलक व सुरेंद्रनाथ पाल थे इसलिए लाल, बाल, पाल के रूप में गर्म दल काफी तेजी के साथ उभरा। सन् १९०७ में पं. गोपालकृष्ण गोखले के साथ एक शिष्टमंडल के सदस्य के रूप में लालाजी इंग्लैण्ड गए, वहाँ से अमेरिका चले गए। कुछ दिनों बाद फिर स्वदेश लौट आए।

सन् १९०७ में किसानों का आन्दोलन भी काफी तेजी से उभरा, उसमें भी लालाजी, क्रान्तिकारी वीर भगतसिंह के चाचा अजीतसिंह ने विशेष भाग लिया। जिससे उनको देश निष्कासित करके वर्मा माण्डले जेल में भेज दिया गया। वहाँ लालाजी लगभग छ: महीने रहे। इस अवधि में उन्होंने **'आर्य समाज'** व **'महर्षि दयानन्द'** आदि काफी पुस्तकें लिखी। फिर जनता के प्रबल विरोध से उन दोनों को छोड़ना पड़ा। तभी से क्रान्तिकारी गतिविधियाँ सक्रिय हो गई। सन् १९२१ में गाँधीजी द्वारा चलाए गए असहयोग आन्दोलन में लालाजी ने सक्रिय भूमिका निभाई। सरकारी शिक्षण संस्थाओं तथा अदालतों का बहिष्कार किया गया। शराब के विरुद्ध आन्दोलन किया गया। इन्हीं दिनों कलकत्ता में कांग्रेस का एक विशेष अधिवेशन हुआ जिसकी अध्यक्षता लालाजी ने की। इन समस्त गतिविधियों में लालाजी की सक्रियता को देखते हुए सरकार ने उन्हें पुन: बन्दी बना लिया। जेल में इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया तथा अठारह महीनों बाद ही इन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। इसी बीच लालाजी ने दो बार इंग्लैण्ड की यात्राएँ की और देश में आए प्राकृतिक प्रकोपों में दीन-दुखियों की बहुत सेवा की जिससे लालाजी की केवल भारत में ही नहीं विश्व में काफी ख्याति बढ़ गई।

लालाजी हिन्दू–मुस्लिम एकता के पक्षधर रहे मगर गाँधी तथा कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति को इस एकता में सबसे बड़ा व्यवधान मानते थे तथा इस परिपाटी से असन्तुष्ट होकर इन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द तथा मदनमोहन मालवीय आदि नेताओं के साथ मिलकर **'हिन्दू महासभा'** का गठन १९२४ के आसपास किय। कलकत्ता में सन् १९२५ में महासभा का बहुत बड़ा अधिवेशन किया गया जिसकी अध्यक्षता माननीय लालाजी ने की थी।

अंग्रेज सरकार भारतीय जनचेतना को किसी न किसी प्रकार छिन्न-भिन्न करने तथा इन पर नया से नया अत्याचार करने के लिए तरह-तरह के कृत्य करती रहती थी। साइमन कमीशन का गठन भी एक ऐसा ही कृत्य था। नवम्बर १८ सन् १९२७ में ब्रिटिश प्रधानमन्त्री ने भारत के भावी संविधान पर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक आयोग का गठन किया। जिसका अध्यक्ष जॉन साइमन था। इस आयोग में एक भारतीय भी नहीं था। इससे देशवासियों का क्रुद्ध होना स्वाभाविक था। अत: साइमन कमीशन का प्रबल विरोध करने की योजना बनी। यह आयोग २० अक्टूबर १९२८ को लाहौर पहुँचा। लालाजी के नेतृत्व में आयोग का विरोध किया गया। **'साइमन गो बैक'** के गगनभेदी नारों से समूचा लाहौर गूंज उठा। सरकार ने धारा १४४ लगा दी मगर जनता का यह समुद्र नारे लगाता हुआ स्टेशन की ओर बढ़ा। जैसे ही जुलुस स्टेशन पर पहुँचा साइमन के आदेश से पापी साण्डर्स ने जुलूस पर क्रूरता से लाठियाँ बरसा दी। लालाजी को लाठियों से पीट-पीटकर बुरी तरह से घायल कर दिया। सायंकाल एक विरोधी सभा हुई जिसमें लालाजी ने किसी घायल सिंह की तरह गरज कर कहा **'मेरे सीने पर लगी एक-एक लाठी ब्रिटिश साम्राज्य के ताबूत में कील बनकर लगेंगी'** और १७ नवम्बर १९२८ को प्रात:काल सात बजे पैंसठ वर्ष की आयु में इस महान् स्वतन्त्रता सेनानी ने सदा-सदा के लिए अपनी आँखें बन्द कर ली।

४. भाई परमानन्द : भाई परमानन्द का जन्म ४ नवम्बर १८७६ को बहिवाला (पंजाब) ग्राम में भाई ताराचन्द्र के घर हुआ था। इनकी माता का नाम मथुरा देवी था। ये अमर शहीद मतिदास जो गुरु तेग बहादुर के दीवान थे जिनको औरंगजेब ने शरीर के अंग-अंग कटवाकर मार दिया था। इस बलिदान के फलस्वरूप गुरु गोविंदसिंह ने इस वंश को भाई की उपाधि दी थी। तब से इस वंश को भाई बोलकर सम्बोधित किया जाता है। भाई बालमुकुन्द जिनको १९१२ में लॉर्ड हार्डिंग में फाँसी हुई थी वे भी इन्हीं के वंशज थे। भाईजी बचपन से ही बहुत अधिक प्रतिभा सम्पन्न थे। उस समय पंजाब में आर्य समाज का बहुत जोर था। भाईजी छोटी अवस्था में ही आर्य समाज से प्रभावित हो गए थे और स्कूली पुस्तकों में सत्यार्थ प्रकाश और पं. लेखराम के लेखों को पढ़ने में अधिक रुचि लेने लगे थे। मिडिल पास करके डीएवी स्कूल में प्रवेश किया। यहाँ उन्होंने बी.ए. की परीक्षा करके एंग्लो संस्कृत स्कूल में मुख्याध्यापक बन गए। फिर एम.ए. करने का विचार करके १९०२ में पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा पास कर ली। इसके बाद भाईजी डी.ए.वी. संस्था के आजीवन सदस्य बने और केवल पचहत्तर रुपए लेकर डी.ए.वी. कॉलेज के इतिहास के अध्यापक बने। साथ ही भ्रमण करके पूरे भारत में आर्य समाज का सन्देश जनता तक पहुँचाते रहे। वे मई १९०५ में अफ्रीका के लिए प्रस्थान करके मोम्बासा पहुँचे। ■ **(क्रमशः आगामी अंक में)**

आर्य समाज के १४८वें स्थापना दिवस की बेला पर१४८ महान् आर्य विभूतियों का स्मरण

(गतांक पृष्ठ ७ से आगे)

● आचार्य राहुल देव
पुरोहित आर्य समाज बड़ा बाजार
कोलकाता (प. बंगाल)

९) कुँवर सिंह आर्य मुसाफिर : जन्म – १८९० अरनियाँ उत्तरप्रदेश, निर्वाण – २ जनवरी १९८१। अच्छे गायक कुशल वक्ता थे। जिनके प्रवचनों में हजारों की भीड़ होती थी। हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया। अनेक बार मारने की कोशिश की गई।

१०) पंडित रामचंद्र देहलवी : जन्म – ८ अप्रैल १८८१, निर्वाण – २ फरवरी सन् १९६८। आर्यसमाज के विद्वान् थे जो शास्त्रार्थ के लिए शास्त्रार्थ महारथी के नाम से जाने जाते थे। वे वैदिक धर्म और इसके सिद्धान्तों सहित इस्लाम और ईसाई मत के ग्रन्थों के भी एक अधिकारी विद्वान् थे। वे इनकी समीक्षा बहुत प्रभावशाली एवं तथ्यपूर्ण रीति से करते थे। वह इन मतों की मान्यताओं पर विपक्षी विद्वानों से शास्त्रार्थ भी करते थे। इन मतों की मान्यताओं पर उनके प्रवचन देश भर की आर्यसमाजों में हुआ करते थे।

११) पंडित लोकनाथ तर्क विद्या वाचस्पति : जन्म सिंध पाकिस्तान। वह अद्वितीय व्याख्याता, तर्कनिष्णात शास्त्रार्थ महारथी थे। आपने पौराणिकों तथा अन्य विधर्मी विद्वानों से अनेक शास्त्रार्थ किये। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी देशभक्त अमर शहीद सरदार भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार पं. लोकनाथ जी के करकमलों से ही हुआ था। १९५७ में आपका स्वर्गवास हो गया।

१२) पं शिवशंकर शर्मा काव्य तीर्थ : १८७०–१९३१ दरभंगा बिहार। प्रकाण्ड विद्वान और लेखक थे। आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब और अजमेर में रहकर प्रचार–प्रसार किया।

१३) पं गणपति शर्मा : जन्म – १८७३ में चुरू (राजस्थान) नगर में हुआ था। राजस्थान में वैदिक धर्म के महान् प्रचारक श्री कालूराम जी जोशी के प्रभाव से आर्यसमाजी बने। आर्यसमाजी बनकर इन्होंने वैदिक धर्म व संस्कृति का प्रचार का कार्य आरम्भ कर दिया।

१४) महात्मा प्रभु आश्रित : जन्म १३ फरवरी १८८७ ई. मुजफ्फरगढ़ पाकिस्तान, निधन १६ मार्च १९६७ । पूर्वनाम टेकचन्द था। आप आर्यसमाज में भक्तिधारा के योगी तपस्वी विद्वान् थे। आपने अनेकों साहित्य लिखा। स्वामी विज्ञानन्द सरस्वती ने आपका जीवन चरित्र तीन खण्डों में लिखा है।

१५) आत्माराम अमृतसरी : १८६६ – १९३८ एक आर्यसमाजी विद्वान् एवं समाज सुधारक थे। सन् १८९७ में पं लेखराम का बलिदान हो जाने के पश्चात् पं आत्मारामजी ने उनके द्वारा पूरे भारवर्ष में घूमकर संकलित की गई स्वामी दयानन्द विषयक जीवन सामग्री को सूचीबद्ध कर एक बृहद् ग्रन्थ का रूप प्रदान किया। तथाकथित शूद्रों को वैदिकधर्मी बनाकर भरी सभा में उनके कर–कमलों से उन्होंने अन्न और जल भी ग्रहण किया था।

१६) पं ब्रह्मदत्त 'जिज्ञासु' : जन्म – १४ अक्टूबर १८८२, निर्वाण – २३ दिसम्बर १९६४। संस्कृत के विद्वान् तथा वैदिक साहित्य के शिक्षक थे। उन्हें **'राष्ट्रीय पण्डित'** की पदवी से सम्मानित किया गया था। उन्होंने संस्कृत पठन–पाठन की सरलतम विधि विकसित की थी जो पाणिनि के अष्टाध्यायी पर आधारित थी। पाणिनीय व्याकरण पर इन्होंने अभूतपूर्व कार्य किया।

१७) पं मनसाराम वैदिकतोप : जन्म १८९० हड्डाँवाला जाखल हरियाणा, निर्वाण – जून १९४१। सहस्त्रों व्याख्यान दिये, सैकड़ों शास्त्रार्थ किये, अनेक पुस्तकें भी लिखीं। आपके द्वारा लिखी छोटी और बड़ी सभी पुस्तकें बहुत महत्वूर्ण हैं। उन सबमें भी दो पुस्तकें विशेष हैं **'पौराणिक पोलप्रकाश'** और **'पौराणिक पोप पर वैदिक तोप'**। उन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया, कई बार जेल भी गये।

१८) सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार : जन्म – १८९८ लुधियाना। निर्वाण – १९९२। वे गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपकुलपति रहे तथा उन्होने शिक्षाशास्त्र एवं समाजशास्त्र पर कई पुस्तकें लिखीं। इन्होने स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान सत्याग्रह में भाग लिया और कुछ समय जेल में भी रहे। **'एकादशोपनिषद्'** उनका सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ है जिसमें उन्होने मुख्य उपनिषदों का सुगम हिन्दी भाष्य लिखा है। पेशे से वे एक होम्योपैथी डॉक्टर थे। १९६४ से १९६८ तक वे राज्य सभा के सदस्य रहे।

१९) पं युधिष्ठिर मीमांसक : जन्म – २२ सितम्बर १९०९ अजमेर, निर्वाण – १९९४। पं. गौरीलाल आचार्य के यहाँ जन्म हुआ। पिता पं? गौरीलाल सारस्वत ब्राह्मण थे। माता – श्रीमती यमुना देवी। संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् तथा वैदिक वाङ्मय के निष्ठावान् समीक्षक थे। उन्होने संस्कृत के प्रचार–प्रसार में अपना अमूल्य योगदान दिया। महर्षि दयानन्द के साहित्य पर बहुत कार्य किया।

२०) आचार्य क्षितीश वेदालंकार : आर्यसमाज के इतिहासकार प्रकाण्ड विद्वान थे। जिन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे।

२१) पं जगदेव सिंह सिद्धान्ती : जन्म – झज्जर हरियाणा १९००, निर्वाण – १९७९। एक समाज सुधारक, संसद सदस्य, संस्कृत और वेदों के एक महान् विद्वान् थे।

२२) आचार्या प्रज्ञा देवी : जन्म ५ मार्च १९३७ सतना मध्यप्रदेश, निर्वाण– ६ दिसम्बर १९९५। १९६९ में सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय से विद्यावारिधि की उपाधि प्राप्त की। १९७२ में जिज्ञासु स्मारक पाणिनि कन्या महाविद्यालय की स्थापना की। आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत का पालन। ब्रह्मदत्त जिज्ञासु जी की परम्परा को आगे बढ़ाया।

२३) आचार्या मेधा देवी : आप प्रज्ञा देवी की छोटी बहन थी दोनों ही बहने व्याकरण शास्त्र और वेद की प्रकाण्ड विदुषी थी। ■

(शेष भाग आगामी अंक में)

आनन्द स्वरूप परमात्मा का मार्ग आनन्द से भरा है

● **ओमप्रकाश आर्य**

आर्य समाज, रावतभाटा वाया कोटा (राजस्थान)

चलभाष : ९४६२३१३७९७

परमात्मा आनन्दस्वरूप है। उसका नाम आनन्द भी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में उल्लेख करते हैं- **''(टुनदि समृद्धौ) आङ्पूर्वक इस धातु से 'आनन्द' शब्द बनता है। जो आनन्दस्वरूप, जिसमें सब मुक्त जीव आनन्द को प्राप्त होते और सब धर्मात्मा जीवों को आनन्दयुक्त करता है, इससे ईश्वर का नाम 'आनन्द' है।''**

मनुष्य आनन्द को प्राप्त करने के लिए भटकता है। उसे संसार की भौतिक वस्तुओं में खोजता है। इधर-उधर चक्कर लगाता है पर उसे आनन्द कहीं मिलता नहीं है क्योंकि आनन्द परमात्मा के पास है। जब तक हम उसके पास जाएँगे नहीं, तब तक वह कैसे प्राप्त होगा? भौतिक वस्तुओं में सुख मिल सकता है, आनन्द नहीं। सुख इन्द्रियों को मिलता है और आनन्द आत्मा को। जैसे- आप सुन्दर मखमली गद्दे पर सोए हैं वह सुख त्वक् इन्द्रिय को प्राप्त हुआ। आपने किसी जरूरतमन्द की सहायता की। सहायता करने के कारण आपकी आत्मा को आन्तरिक सन्तुष्टि प्राप्त हुई। वह सन्तुष्टि आत्मा को आनन्द प्रदान किया। उस आनन्द की अनुभूति कराने वाला परमात्मा है क्योंकि हर शुभ, अशुभ कर्म का फल परमात्मा ही देता है। जब आत्मा को अभय, नि:शंकता, आनन्दोत्साह का अनुभव हो तब समझो आपको परमात्मा आनन्द प्रदान कर रहा है।

महर्षि दयानन्द ने स.प्र. के प्रथम समुल्लास में ईश्वर का एक नाम **'चन्द्र'** बताया है। वे उस शब्द की उत्पत्ति **'चदि आह्लादे'** करते हैं। उन्हीं के शब्दों में, **''जो आनन्दस्वरूप और सबको आनन्द देने वाला है, इसलिए ईश्वर का नाम 'चन्द्र' है।''** आप 'चन्द्र' शब्द से परमात्मा के आनन्द का बोध कर सकते हैं। वह आनन्द देने वाला है पर हम उस आनन्द को लें कैसे? उसके आनन्द को लेने के लिए उसके मार्ग पर चलना पड़ेगा। यथा- अन्त:करण में प्रेरित सत्कार्यों को करना, सेवा, परोपकार, पीड़ितजनों को दु:ख-दर्द में सहायता करना, जीवरक्षा, वृक्षारोपण, वेद का प्रचार-प्रसार करना, हवन-यज्ञ करना, किसी जरूरतमंद का सहारा बनना, धर्मशाला-प्याऊ आदि बनवाना, जरूरतमंद बच्चों को आगे बढ़ाने के लिए सहयोग करना, अपनी नेक कमाई में से कुछ राशि परहित में लगाना, सबके प्रति प्रेम का भाव रखना आदि। यह ईश्वरीय मार्ग है। इस पर चलकर आप स्वयं आन्तरिक आनन्द की अनुभूति कर सकते हैं। इन कार्यों के लिए स्वयं को लगाकर ईश्वर को याद करते हुए निष्काम भाव से उस किये गये कर्म को भूल जाना है। उसे ईश्वर को समर्पित कर देना चाहिए। उसके प्रति राग या मान-प्रतिष्ठा-नाम की बिल्कुल अभिलाषा नहीं रखनी चाहिए। फिर आपको वर्णनातीत आनन्द व शान्ति की अनुभूति होगी। इन कार्यों में विघ्न-बाधाएँ- विरोध आएँगे, क्योंकि जगत् के लोग छिद्रान्वेषी और स्वार्थपरक होते हैं। उनकी चिन्ता न करते हुए पवित्र हृदय से कार्य करते रहना है। समयान्तराल स्वत: आनन्दानुभूति होगी। उस समय ईश्वर को धन्यवाद देना है। वही सम्बल प्रदान करेगा। वही आगे बढ़ाएगा। वही रक्षा भी करेगा। वही व्यवस्था भी करेगा। फिर आनन्द ही आनन्द है।

आनन्दस्वरूप परमात्मा के मार्ग पर चलने वालों को ईश्वर की स्तुति, प्रार्थनोपासना अवश्य करनी चाहिए। कारण यह है कि पिछले जन्मों के कर्मफल भी भोगने पड़ते हैं। उसे ध्यान में रखते हुए परमात्मा का आँचल थामे रखना चाहिए। महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में लिखते हैं- **''जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दु:ख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं, इसलिए परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिए। इससे इसका फल पृथक् होगा किन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि पर्वत के समान दु:ख प्राप्त होने पर भी न घबराएगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है?''** अब आपको मिल गया सहारा आगे बढ़ने का। ईश्वर का मार्ग आनन्द से भरा हुआ अनुभव होने लगेगा। वह माता के समान अपना प्रेम लुटाता है। सामवेद का मंत्र कहता है-

यो व: शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह न:।
उशतीरिव मातर:।। सामवेद उ. २१.२.२.२/१८३८

परमात्मा आनन्दस्वरूप है। उस आनन्द का भागी बनाने के लिए उससे कामना की गई है। जैसे माता अपनी सन्तान की हितकामना करती है उसी प्रकार परमात्मा भी अपने कल्याणकारी रस अर्थात् आनन्द का हमें भागी बना। जैसे माताएँ स्वपुत्रों को दुग्धपान कराती हैं उसी प्रकार परमात्मा भी अपना आनन्द हमें देता है।

हम परमात्मा से आनन्द तो चाहते हैं पर उसके बताए मार्ग पर चलना नहीं चाहते और न ही उसकी शिक्षा को अपनाना चाहते हैं। इसके लिए उसके गुणों का चिन्तन कीजिए। उसके नामों का चिन्तन-मनन करके उसके गुणों को अपनाने का प्रयत्न कीजिए। स्वार्थ, संकीर्णता, अत्याग, कलुषता, मलिनता, शत्रुता, ईर्ष्या, द्वेष, अहंकार, काम, क्रोध के रहते उसकी कृपा का आभास नहीं कर सकते। वेदमार्ग को अपनाकर ही उसके आनन्द का पान किया जा सकता है। माता और पुत्र का कितना प्रेमिल सम्बन्ध है। परमात्मा हमारी माता के समान है। वह हमेशा अपने पुत्र-पुत्री का कल्याण ही चाहता है, पर मनुष्य अवैदिक मार्ग पर चलकर। उसके आनन्द से दूर हो जाता है और जीवनभर कष्ट, चिन्ता, तनाव, दु:ख में जीता हुआ जीवन को व्यर्थ

ही नष्ट कर देता है। अमूल्य मानव-जीवन निरर्थक सिद्ध हो जाता है।

आनन्दस्वरूप परमात्मा का मार्ग केवल वेदमार्ग है। इस मार्ग पर जो चल देता है उसे उसके आनन्द की अनुभूति होने लगती है। इस जगत् में माता और पुत्र का जो सम्बन्ध है। वही सम्बन्ध परमात्मा का उसकी संतानों के साथ हैं। अखिल प्राणिमात्र उसकी संतान हैं। विडम्बना यह है कि इस धरती पर नाना मत, पंथ, सम्प्रदाय, मजहब फैले हुए हैं जो परमात्मा के वेदज्ञान का पान ही नहीं करते। महापुरुषों को ब्रह्म मानकर उनकी पूजा, अर्चना, स्तुति, प्रार्थना, याचना करते हैं। रात-दिन इसी कार्य में समय नष्ट करते हैं। वे जान ही नहीं पाते कि जिसको वे बाहर खोज रहे हैं वह तो उनके अन्दर विद्यमान हैं। यहाँ तक कि महापुरुषों को अलौकिक सिद्ध करने के लिए नाना प्रकार की कल्पनाएँ करके महापुरुषत्व को ही अदृश्य कर दिया। मूर्ति की कल्पना करके मानवेतर मूर्तियाँ गढ़ डाली जो सृष्टिक्रम के बिल्कुल ही विपरीत है। जो परमात्मा सारे जगत् का निर्माता है उसका निर्माण मनुष्य कर रहा है। मिट्टी की मूर्ति बनाकर उसमें प्राण डाल रहा है। जो सारे संसार का भरण-पोषण करता है मनुष्य उसको ही भोजन कराता है। जो सबका पालन–रक्षा करता है मनुष्य उसकी सुरक्षा करता है। यहाँ तक कि उसके भगवान को भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी सब लगती है। वह बीमार भी पड़ता है मनुष्य उसकी दवा भी करता है। इस प्रकार नाना परिकल्पनाओं का सहारा लेकर परमात्मा से दूर चला जाता है। **पंचभौतिक शरीर वाला भला भगवान या ब्रह्म कैसे हो सकता है? यह मनुष्य की समझ में नहीं आता।**

आइए हम परमात्मा को इन रूपों में चिन्तन-मनन करके आत्मा को आनन्दयुक्त करें- पृथ्वी को सूर्य के चारों ओर कौन नचा रहा है? सूर्य अपने सौर परिवार के साथ कौनसी विद्युत शक्ति प्राप्त कर रहा है? असंख्य ग्रह, उपग्रह, नक्षत्रों को कौन घुमा रहा है? इन सबको किसने बनाया है? फूल, पत्तियों की कलाकारी कौन करता है? वर्षा का चक्र कौन करता है? जल, वायु की रचना किसने की है? प्राणिमात्र के शरीर की रचना किसने की? प्राकृतिक सौन्दर्य कौन उत्पन्न करता है? पूरी धरती को कौन धोता है? कौन वन, उपवन, झाड़ी, वनस्पतियों को नहलाता है? इत्यादि इत्यादि। अवश्य ही परमात्मा। ■

श्रवण, श्रावण, श्रोत्र, श्रुति, श्रावणी पाँच श्रकारों का महत्व

● **आचार्य राहुल देव**
पुरोहित आर्य समाज बड़ा बाजार
कोलकाता (प. बंगाल)

श्रावण मास में पाँच श्रकारों का क्या है महत्व? क्या है इनका परस्पर सम्बन्ध? आओ जानें! जो स्वाध्यायशील है वे अवश्य पढ़ें और लेख को संग्रह करें।

१) श्रवण– पहला श्रकार है 'श्रवण'। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार २७ नक्षत्र होते हैं। उनके नाम है – अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज्, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा, रेवती। यहाँ पर बाईसवें स्थान पर है 'श्रवण' नक्षत्र है। जिसके देवता विष्णु हैं। श्रावण माह की पूर्णिमा को 'श्रवण' नक्षत्र होता है। अर्थात् श्रवण नश्रत्र होना इस बात का संकेत है। कि आप श्रवण करो। श्रवण का सामान्य अर्थ है सुनना। हम लोग श्रवण करें! क्या श्रवण करें? क्या सुनें? आखिर यह श्रवण नक्षत्र हमें क्या सुनने का इशारा कर रहा है। क्या प्रकृति, मौसम, जलवायु, आकाशीय विद्युत, मेघ, फसलों में होने वाले कीड़े, मेंढकों की टर्र–टर्र, वृष्टि की ध्वनि हमें कुछ सुनने के लिये कह रही है। क्या श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा हमें कुछ अच्छा या श्रेष्ठ सुनने का इशारा कर रही है? क्या श्रवण नक्षत्र कोई नया पर्व लेके आया है? कोई विशेषता का द्योतक है? हाँ यह श्रवण नक्षत्र नया पर्व का संवाहक है, वह सुनने वाला पर्व है जो कहता है श्रवण करो, सुनों। सुनना संसार का सबसे अच्छा कर्म है। क्योंकि सुनने से ही भाषा आती है। सुनने से ज्ञान बढ़ता है। सुनने से विचार परिपक्व होते हैं। सुनने से व्यक्ति ज्ञानी, बुद्धिमान, विद्वान्, धीमान, बनता है। इसलिये 'श्रवण' नक्षत्र सुनने की प्रधानता आत्मसात् किये हुये है। और हमें सुनने का सन्देश देता है। आखिर प्रश्न उठता है कि सुनने (श्रवण) की इतनी महिमा है तो हम क्या सुनें? इसका उत्तर आगे आने वाले श्रकार में दिया जायेगा कि हमें वास्तव में क्या श्रवण करना चाहिये। तो यहाँ पर पहला श्रकार 'श्रवण' नक्षत्र है। जो काल, पंचांग, और पर्व का द्योतक है जिसका शाब्दिक अर्थ सुनना है।

२) श्रावण – दूसरा श्रकार 'श्रावण' है। यहाँ पर श्रावण मास महीने का द्योतक है। संस्कृत में बारह महीने के नाम इस प्रकार है – चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन। यहाँ पाँचवा महीना श्रावण है। जो छः ऋतुओं में वर्षा ऋतु में आता है। इन्हें वैदिक साहित्य के अनुसार देवता कहा गया है। ३३ कोटि (प्रकार) देवताओं में बारह आदित्य कहें गये है। आदित्य माने सूर्य और सूर्य और पृथ्वी के भ्रमण से ही महीनों की उत्पत्ति होती है। आज ९८% हिन्दू भारतीय हिन्दी में बारह महीनों के नाम नहीं बता सकते। जब श्रावणी पर्व पर चतुर्वेद शतकम् यज्ञ करवा रहा था। तब मैंने पूछा था कितने लोगों को हिन्दी में बारह महीने के नाम याद है मुश्किल से एक व्यक्ति ने हाथ खड़ा किया था। यही सच्चाई है। विषय पर आते हैं। जैसे पहला श्रकार श्रवण कहता है, सुनना। वैसे ही दूसरा श्रकार श्रावण कहता है सुनाना। **श्रवणम्** – सुनना, **श्रावणम्** – सुनाना। ये दोनों शब्द संस्कृत के मूल शब्द (धातु) **'श्रु श्रवणे'** से बनते हैं। महर्षि पाणिनि के अनुसार यह सुनने की क्रिया के अन्तर्गत आता है। 'श्रावण' माह सुनाने की प्रक्रिया को बल देता है। महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के तीसरे नियम में सुनना और सुनाना को **'परमधर्म'** कहा है। क्या सुनने और सुनाने को

परमधर्म कहा है? वह आगे श्रकार में आयेगा। परन्तु सुनाना कोई सामान्य बात नहीं है यह तो निश्चय हो गया। श्रावण माह कह रहा है सुनाओ! तो कौन सुनायेगा? और क्या सुनायेगा? क्या यह श्रावण माह सुनाने का पर्व है? और सुनाने का पर्व है तो क्या सुनाने का पर्व है? आखिर ये सुनाने वाली क्रिया का इतना महत्व क्यों हैं? मनुष्य को सुनाया जाना क्या इतना आवश्यक है। क्या वह भाषा ज्ञान-विज्ञान सुन करके ही आत्मसात करता है? हाँ मनुष्य जन्म-जन्मान्तरों में सुनने की प्रक्रिया करता है। वह गर्भ में सुनता है। उत्पन्न होने पर सुनता है। वह अपनी मातृभाषा केवल सुनकर ही आत्मसात् करता है। इसके अतिरिक्त उसके पास-पड़ोस में समाज में लोग जितनी भाषा में उससे बात करेंगे अर्थात् जितनी भाषा उसके कान में जायेगी वह उतने भाषा का विद्वान् बन जायेगा। विद्यालय में अध्यापक सुनाने वाली क्रिया से ही सभी प्रकार का ज्ञान हस्तांतरण करता है। बहुत सारे मन्त्र सुनकर ही याद हो जाते है। इसलिए सुनना और सुनाना बहुत ही आवश्यक कर्म है।

३) श्रोत्र – तीसरा श्रकार है 'श्रोत्र'। श्रोत्र कहते है कान को। श्रोत्र इन्द्रिय मनुष्य की प्रथम और प्रमुख ज्ञानेन्द्रिय है और इन्द्रियों में कारण रुप है। परमात्मा श्रोत्र की उत्पत्ति कैसे करते है। इसको यदि आपको समझना है तो सृष्टि उत्पत्ति प्रकरण को समझना होगा। सत्व, रज, तम से प्रकृति। प्रकृति से महतत्व। महतत्व से अहंकार। अहंकार से पंचतन्मात्रा, जिसको पाँच सूक्ष्म भूत कहते हैं। पाँच सूक्ष्म भूतों से ११ इंद्रियाँ बनती है। इन ग्यारह इन्द्रियों में एक श्रोत्र है। फिर उन पाँच सूक्ष्म भूतों से ५ स्थूल भूत आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी का निर्माण होता है। फिर स्थूल भूतों से मनुष्य के शरीर का निर्माण होता है। स्थूल शरीर में जो कान बनती है वह पंच महाभूतों से बनी है। जो सुनने की क्रिया करती है। किन्तु यह श्रोत्र (कान) सूक्ष्म शरीर में कारण रुप रहती है। स्थूल शरीर वाली कान स्थूल शरीर के नष्ट होने पर नष्ट हो जाती है। परंतु सूक्ष्म शरीर में यह श्रोत्र (कान) बनी रहती है। जो जीवात्मा के अन्य योनि में स्थानांतरण के बाद भी जीवात्मा के साथ जाती है। किन्तु दूसरी योनि में यह कान कर्मानुसार जाती है। न केवल मनुष्य जाति अपितु अन्य भोग योनियों में भी अन्य प्राणियों में भी श्रोत्र (कान) देखी जाती है। जिससे वे प्राणी सुनने की प्रक्रिया करते हैं। अपनी-अपनी भाषाओं की ध्वनियों को समझते हैं। ऐसे ही मनुष्य जाति के लिए कान जिसे श्रोत्र कहा जाता है। वह प्रथम ज्ञानेंद्रिय होने से बहुत ही उपयोगी एवं आवश्यक है। जिससे मनुष्य सुनता है और सुन-सुन करके ही वह अच्छे ज्ञान-विज्ञान को अर्जित करता है। अपनी धारणा बनाता है। सुन करके ही व्यक्ति इस संसार में निर्वाह करता है। मनुष्य को सुनना बहुत ही उपयोगी है। शास्त्रों में श्रोत्र (कान) की महत्ता को दर्शाने वाले अनेक प्रमाण हैं। जैसे हम सन्ध्या में कहते हैं – **'ओम् श्रोत्रम् श्रोत्रम्'**। हवन के अंगस्पर्श मंत्र में कहते हैं – **'ओम् कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु'**। सामवेद की एक ऋचा में कहते हैं – **'भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवाः'**। अर्थात् – हे प्रभु हम कानों से भद्र (अच्छा) सुनें। अन्नप्राशन संस्कार में माँ शिशु के लिये चावलों को धोती हुई और पकाती हुई कहती है – **'ओं श्रोत्राय त्वा जुष्टं प्रोक्षामि। ओं श्रोत्राय त्वा जुष्टं निर्वपामि।'** अर्थात् – सन्तान के श्रोत्र आदि इन्द्रिय स्वस्थ एवं निरोग रहे और उत्तम श्रवण क्रिया करे। इसलिये यहाँ पर तीसरा श्रकार का बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि पहले वाले दोनों श्रकार श्रवण और श्रावण दोनों श्रोत्र से ही सम्बन्धित है। क्योंकि सुनना क्रिया श्रोत्र से ही सम्भव है। इसलिये हम श्रावण महीने में श्रोत्र से अच्छा सुनें। अथर्ववेद में एक मंत्र आता है – **'सुश्रुतौ कर्णौ भद्रश्रुतौ कर्णौ। भद्रं श्लोकं श्रुयासम्।।'** अर्थात् – हम कानों (श्रोत्र) से शीघ्र सुनें, अच्छा सुनें और वेद मन्त्र सुनें।

४) श्रुति – चौथा श्रकार 'श्रुति' है। श्रुति वेद को कहते है। सुन-सुन कर जिसको याद किया जाये, सुन-सुनकर जिसका पाठ किया जाये, सुन-सुनकर जिसका मनन किया जाये अथवा जो परम्परा से सुनने और सुनाने की प्रक्रिया पर अवलम्बित है उस वेद को – 'श्रुति' कहते हैं। महर्षि मनु ने कहा है – **'श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयः।'** अर्थात् – श्रुति से वेद का ग्रहण करना चाहिए। वेद स्वयं कहता है – **'सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि'**। अर्थात् – हम सुने हुये वेदोपदेश के अनुसार आचरण करें, उसके विरुद्ध कभी भी आचरण न करें। मैंने उपर में पहले श्रकार श्रवण, में और दूसरे श्रकार श्रावण में जो सुनने और सुनाने की बात की थी और वहाँ पर क्या सुनें और क्या सुनायें यह कहा था और वहाँ पर यह भी कहा था की उसका उत्तर आगे आयेगा। बस उसका उत्तर यह चौथा श्रकार 'श्रुति' है। अब महर्षि दयानन्द का तीसरा नियम पूरा होता है– **वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का 'परमधर्म' है।**

तो देखिये! पाठकवृन्द कितना सुन्दर सम्बन्ध बैठ रहा है। (श्रवण-श्रावण) सुनना और सुनाना, किससे? श्रोत्र (कान) से किसको? श्रुति (वेद) को, कब से प्रारम्भ किया जाना चाहिये? वह कौन सा पर्व है तो उसका उत्तर आगे आने वाले पाँचवें श्रकार में दिया जायेगा।

५) श्रावणी – पाँचवा श्रकार है 'श्रावणी'। जहाँ पर उपरोक्त चारों श्रकार श्रवण, श्रावण, श्रोत्र और श्रुति पूर्ण होकर मनुष्य को सुनने-सुनाने और श्रोत्र द्वारा सदैव श्रुति को सुनने-सुनाने का उपक्रम बनाते हैं। वह 'श्रावणी' कहलाती है। अर्थात् श्रावणी वह हुई जहाँ पर सुनने और सुनाने की प्रक्रिया को बहुत ही महत्वपूर्ण पर्व मानकर विधिवत् वेदों का पठन-पाठन और श्रवण-श्रावण किया जाये। जहाँ पर विद्यार्थी नया यज्ञोपवीत धारण करके या परिवर्तित करके शिक्षा के नये सत्र का आरम्भ करते हो। इसलिए इसे श्रावणी कहते हैं। और जिसमें ब्राह्मण वर्ग यज्ञपूर्वक ये सारे कार्यक्रम प्रारम्भ करते हो उसे **'श्रावणी-उपाकर्म'** कहते हैं। श्रावणी का अर्थ हुआ वेदों को सुनने और सुनाने का पर्व वेद स्वाध्याय का पर्व। आज के दिन ही सृष्टि के आदि में अमैथुनी सृष्टि में चारों वेद को प्राप्त करने वाले चारों ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य, अङ्गिरा ने चारों वेदों को ब्रह्मा को सुनाया था। फिर ब्रह्मा ने सारे लोगों में चारों वेदों का प्रचार किया। तब से सुनने और सुनाने का यह उपक्रम अनवरत रूप से चलता आ रहा है। यही **'श्रावणी-पर्व'** का महत्व है। आज हम सच्चे अर्थों में श्रावणी पर्व को मनाये और वेदों की रक्षार्थ इसके प्रचार-प्रसार में योगदान दें। वेद की रक्षा का सर्वोत्तम उपाय है वेद को पढ़ना-पढ़ाना और वेद को सुनना-सुनाना। **आप सभी को श्रावणी पर्व, रक्षाबंधन, संस्कृत दिवस की बहुत-बहुत शुभकामनायें।** आप सभी के जीवन और व्यवहार में वेदों का प्रवेश हो। जिससे आप लोगों का जीवन उत्तम और सरल बने। आप सभी के उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायु की कामना करता हूँ। आप व्यस्त रहे, स्वस्थ रहें, मस्त रहें। ■

जीवन में प्रथम बार ६४ वाँ जन्मदिवस क्यों मनाया गया?

विस्तृत विवरण पृष्ठ ५ पर

सुपुत्र गजेश शास्त्री के ब्रह्मत्व में मुख्य यजमान पिता सुखदेव शर्मा द्वारा परिजनों के साथ यज्ञाहुति प्रदान करते हुए।

बृहद संख्या में उपस्थित आश्रम निवासरत बालक-बालिकाएँ एवं परिजन

शिविर में भाग लेकर लौटे विद्यार्थियों का वैदिक साहित्य भेंट कर किया गया अभिनन्दन।

वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को सार्थक करते ६४वें जन्मदिन पर उपस्थित कुछ सदस्यगण।

प्रेरणा पुरुष मोहनलालजी दशोरा के सान्निध्य में सम्पन्न किये गये देवयज्ञ, पितृयज्ञ और अतिथि यज्ञ

विस्तृत विवरण पृष्ठ ३६ पर

श्रीमती आरती राठौर, नीमच (म.प्र.) के गृह प्रवेश पर उपस्थित परिवारजन

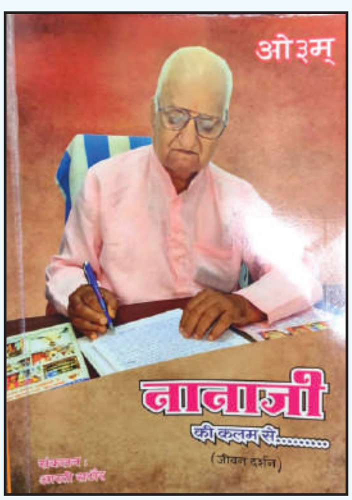

अपने नानाजी द्वारा रचित १०१ लेख-कविताओं का श्रीमती आरती राठौर द्वारा संकलन 'नानाजी की कलम से' (जीवन दर्शन) का विमोचन

सुपौत्र जय दशोरा, सुपुत्र धीरज दशोरा, नारायणगढ़ का जन्मदिवस संसार के श्रेष्ठतम कर्म देवयज्ञ के द्वारा।

हम नहीं कहते, दुनिया कहती है- मूल से ब्याज प्यारा होता है। सुपौत्र जय दादाजी मोहनलाल जी के साथ

बिहार राज्य स्तरीय सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा में स्थान-स्थान पर यात्रा संयोजक आचार्य सुशील जी तथा सहयोगियों द्वारा गणमान्य महानुभाव-अधिकारियों को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किये गये

(विस्तृत विवरण पृष्ठ ३५ पर)

जिला पदाधिकारी गोपालगंज को भेंट करते हुए यात्रा संयोजक सुशील जी

अनुमण्डल पुलिस अधिकारी हथुआ, जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए

अनुमण्डल पदाधिकारी हथुवा जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी फुलबरिया, जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए

अंचलाधिकारी उचकागाँव, जिला गोपालगंज को सत्यार्थ प्रकाश प्रदान करते हुए

पुलिस निरीक्षक मीरगंज, प्रखण्ड हथुआ, जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी विजयीपुर, जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी कटैया, जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी पंचदेवरी, जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी कुचायकोट, जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए

आर्य समाज उसरी, प्रखण्ड बैकुण्ठपुर का गठन किया गया। प्रखण्ड विकास पदाधिकारी बैकुण्ठपुर के निवास पर जुझारू आर्य प्रचारक रामचन्द्र क्रान्तिकारी जी के परिजनों से भेंट।

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी बैकुण्ठपुर, जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए, साथ में योगमुनि जी

अंचलाधिकारी सिधबलिया, जिला गोपालगंज को सत्यार्थ प्रकाश प्रदान करते हुए गुरुकुल जरैल के प्रधान योगमुनि जी

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी बरोली, जिला गोपालगंज को गुरुकुल प्रधान योगमुनि जी प्रदान करते हुए

अंचलाधिकारी मांझा, जिला गोपालगंज को भेंट करते हुए योगमुनि जी

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी मांझा, जिला गोपालगंज को भेंट करते हुए योगमुनि जी

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी भोरे, जिला गोपालगंज को प्रदान करते हुए

डी.सी.एल.आर. गोपालगंज को सत्यार्थ प्रकाश भेंट करते, साथ में योगमुनि जी

योगपट्टी प्रखण्ड, जिला पश्चिमी चम्पारण में सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी योगापट्टी, जिला पश्चिमी चम्पारण को सत्यार्थ प्रकाश साथियों के साथ प्रदान करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी चनपटिया, जिला पश्चिमी चम्पारण को भेंट करते हुए सहयोगी जन

बिहार राज्य स्तरीय सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा में स्थान-स्थान पर यात्रा संयोजक आचार्य सुशील जी तथा सहयोगियों द्वारा गणमान्य महानुभाव-अधिकारियों को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किये गये

(विस्तृत विवरण पृष्ठ ३५ पर)

आर्य समाज चनपटिया, जिला पश्चिमी चम्पारण के सदस्यों के साथ संगोष्ठी

जिला विकास उपायुक्त पश्चिमी चम्पारण बेतिया को मझौलिया प्रखण्ड कार्यालय में सत्यार्थ प्रकाश भेंट

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी मझौलिया जिला पश्चिमी चम्पारण को अमर ग्रन्थ प्रति भेंट

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी सिकटा, जिला पश्चिमी चम्पारण को सहयोगियों के साथ सत्यार्थ प्रकाश भेंट

थाना प्रभारी मैनाटांड, जिला पश्चिमी चम्पारण को सहयोगीजन सत्यार्थ प्रकाश प्रदान करते हुए

अंचलाधिकारी मैनाटांड, जिला पश्चिमी चम्पारण को सत्यार्थ प्रकाश प्रति भेंट

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी गौनहा जिला पश्चिमी चम्पारण को भेंट

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी नरकटियागंज, जिला पश्चिमी चम्पारण को प्रदान करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी भितहा जिला पश्चिमी चम्पारण को भेंट

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी ठकराहा जिला पश्चिमी चम्पारण को प्रदान करते हुए

थाना प्रभारी धनहा प्रखण्ड मधुबनी, जिला पश्चिमी चम्पारण को भेंट करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी पिपरासी, जिला पश्चिमी चम्पारण को प्रदान करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी बगहा-२, जिला पश्चिमी चम्पारण को प्रदान करते हुए

प्रखण्ड विकास पदाधिकारी नौतन, जिला पश्चिमी चम्पारण को महंथप्रसाद आर्य भेंट करते हुए

अंचलाधिकारी नौतन, जिला पश्चिमी चम्पारण को प्रदान करते हुए

थाना प्रभारी लोरिया, जिला पश्चिमी चम्पारण को सत्यार्थ प्रकाश की प्रति भेंट करते हुए

थाना प्रभारी बलथर प्रखण्ड सिकटा एवं थाना प्रभारी पुरुषोत्तमपुर प्रखण्ड मैनाटांड, जिला पश्चिमी चम्पारण को भेंट

डीएवी पब्लिक स्कूल थावे, जिला गोपालगंज के प्राचार्य डॉ. भरतप्रसादजी को भेंट

डीएवी पब्लिक स्कूल थावे, जिला गोपालगंज में चरित्र निर्माण कार्यक्रम में प्रस्तुति

जिला चम्पारण आर्य सभा एवं पुरोहित सभा की संयुक्त गोष्ठी में यात्रा संयोजक सुशील जी को सम्मानित करते हुए आर्य सभा मन्त्री श्री विनोद जी आर्य एवं पुरोहित सभा प्रधान श्री शमशेर सिंह जी आर्य

आर्यत्व के धनी, महान् ईश्वरभक्त, धर्मात्मा, परोपकारी, वेदभक्त, देशभक्त, गऊभक्त

श्री रामअवतार आर्य-श्रीमती शकुन्तला आर्या

हुए करोड़ों विश्व में, ज्ञानी-गुणी महान।
ईशभक्त-धर्मात्मा, दानी अरु धनवान।।
पावन वैदिक मार्ग पर, चले वीर निर्भीक।
बाधाओं से ना डरे, काम किये थे ठीक।।
राम, कृष्ण अरु भोज थे, धर्म राज गुणवान।
दयानन्द ऋषिराज थे त्यागी सन्त महान।।
सकल विश्व में है अमर, देव जनों का नाम।
याद जगत अब कर रहा, उनके अच्छे काम।।

सज्जनों! यह संसार परमात्मा की निराली रचना है। परमात्मा निराकार, सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी, दयालु और न्यायकारी है। जो व्यक्ति उस परम पिता जगदीशवर को याद रखते हैं तथा पावन वैदिक मार्ग पर चलते हुए परोपकार करते हैं, वस्तुतः वे महामानव धर्मात्मा हैं। ऐसे ही महामानवों में से हैं श्री रामअवतार आर्य, श्रीमती शकुन्तला आर्या तथा श्रीमती उमादेवी आर्या।

श्री रामअवतार आर्य का जन्म 5 जनवरी सन् 1952 ईस्वी में श्री सूरजप्रकाश आर्य कस्बा पुनाहाना मेवात, नूंह (हरियाणा) के घर श्रीमती बादामी देवी आर्या की कोख से हुआ था। श्री सूरजप्रकाश आर्य तथा माता बादामी देवी आर्या ईश्वर भक्त धर्मात्मा थे। इसलिए श्री रामअवतार आर्य भी वेदभक्त, गऊ भक्त, ईश्वर भक्त, धर्मात्मा बन गए।

श्री रामअवतार आर्य का विवाह 19 मई सन् 1974 में श्रीमती शकुन्तला आर्या सुपुत्री श्री प्यारेलाल आर्य नौगाँवा (अलवर, राजस्थान) के साथ वैदिक विधि से हुआ। इनकी सासु माँ का नाम श्रीमती दयावती आर्या था।

मैं श्री रामअवतार आर्य को सन् 1975 से भली प्रकार जानता हूँ। ये दोनों पति-पत्नी देव दयानन्द एवं आर्य समाज के दीवाने हैं। इनकी भ्रातृ वधु श्रीमती उमादेवी आर्या धर्मपत्नी स्वर्गीय सेठ मेघश्याम आर्य भी इनके कार्यों में पूरा साथ निभाती हैं जो शकुन्तला देवी की छोटी बहिन हैं और धार्मिक विचारों की उदारमना नारी हैं।

श्री रामअवतार आर्य पुनाहाना (नूंह) श्री उमेश आर्य के साथ मिलकर दस वर्षों से गौशाला चला रहे हैं। वैदिक आश्रम मरोडा नूंह में स्थापित गौशाला को भी पूरी तरह आर्थिक सहयोग देते हैं। महर्षि दयानन्द गुरुकुल भादस नूंह (हरियाणा) को सुचारू रूप से चलाने में इनका सहयोग प्रशंसनीय है।

सेवा की प्रतिमूर्ति श्रीमती उमादेवी आर्या

आर्यत्व के धनी श्री रामअवतार जी आर्य एवं श्रीमती शकुन्तला आर्या

स्वामी रामदेव योग गुरु के योग शिविरों में ये फरीदाबाद, रोहतक, हरिद्वार में पाँच बार भाग ले चुके हैं। पुनाहाना (नूंह) में भी योग की कक्षाएँ इन्होंने लगाई थीं। इनके तीनों पुत्र रितेश आर्य, यशपाल आर्य, अमित आर्य तथा तीनों पुत्रवधू श्रीमती पुष्पावती आर्या, श्रीमती श्वेता आर्या, श्रीमती पूजादेवी आर्या वास्तव में मानवता के पुंज हैं। इनके बालक-बालिकाएँ भी आर्य समाज एवं ऋषि दयानन्द के सच्चे भक्त हैं।

ऐसे आर्य परिवार मैंने बहुत कम देखे हैं। अगर ऐसे परिवार समतुल्य सभी बन जाएँ तो संसार का कल्याण हो जाए।

अन्त में मेरी प्रभु से प्रार्थना है-

परम पिता परमात्मा, जग के स्वामी आप।
स्वर्ग बनाओ विश्व को, हरो सकल संताप।।
श्री रामअवतार को, दो अद्भुत वरदान।
सुखी रहें सौ साल तक, करें विश्व कल्याण।।
वैदिक पथ पर निरन्तर चलें, करें शुभ कर्म।
परोपकारी सब बनें, पालें वैदिक धर्म।।
जीवन भर हर्षित रहें, करें यज्ञ हर रोज।
'नन्दलाल' सत्धर्म की, करें रात-दिन खोज।।

• पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य
बहीन, पलवल (हरियाणा)
चलभाष : ९८१३८४५७७४

गतांक पृष्ठ २३ से आगे

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय

● ई. चन्द्रप्रकाश महाजन
प्रधान : आर्य समाज नूरपुर, जसूर (हि.प्र.)
चलभाष : ८६२७०४१०४४, ९४१८००८०४४

२३. भ्रान्ति-निवारण (सन् १८८० ई.)

कलकत्ता के राजकीय संस्कृत कॉलेज के स्थानापन्न प्रिंसिपल पं. महेशचन्द्र न्यायरत्न ने ऋषि दयानन्द के वेदभाष्य के सम्बन्ध में अपनी आलोचनात्मक पुस्तक कलकत्ता में छपाई थी। न्यायरत्नजी के और उनके - जैसे ही अन्य आक्षेपों के उत्तर में ऋषि दयानन्द ने भ्रान्ति-निवारण ग्रन्थ लिखा। यह पुस्तक छोटी होते हुए भी वेदार्थ-जिज्ञासाओं के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जिस मन:स्थिति में यह ग्रन्थ लिखा गया है उसका कुछ परिचय भूमिका के इन शब्दों से ज्ञात होता है- **''परन्तु मैं क्या करुं मैं तो अपना तन-मन-धन सब सत्य के ही प्रकाशार्थ समर्पण कर चुका हूँ। मुझसे खुशामद करके अब स्वार्थ का व्यवहार नहीं चल सकता। किन्तु संसार को लाभ पहुँचाना ही मुझको चक्रवर्ती राज्य के तुल्य है।''** स्वामी जी सत्य का प्रकाश तथा सम्पूर्ण वेदभाष्य करने के लिए इतने उत्सुक थे कि उन्होंने अपने विचारों की अभिव्यक्ति निम्न प्रकार की, **''परमात्मा की कृपा से मेरा शरीर बना रहा और कुशलता से वह दिन देख लिया कि वेद भाष्य सप्पूर्ण हो जाये तो निस्संदेह इस आर्यावर्त देश में सूर्य का सा प्रकाश हो जायेगा। जिसके मेटने और झाँपने को किसी का सामर्थ्य न होगा। क्योंकि सत्य का मूल ऐसा नहीं कि जिसको कोई सुगमता से उखाड़ सके।''**

स्वामी जी का मानना था कि इस ग्रन्थ के विषय में जो शंका होगी कम विद्वान् और ईर्ष्या करने वालों की होगी। परन्तु बड़े आश्चर्य की बात है कि कुछ विद्वान् भी इस अन्धकार में फिसल पड़े।

इस वेदभाष्य के विषय में पहले आर.-ग्रिफिथ साहिब, सी.एच.टानी और पण्डित गुरुप्रसाद आदि पुरुषों ने कहीं-कहीं अपने सामर्थ्य के अनुसार पकड़ की थी, सो उनका उत्तर तो अच्छे प्रकार दे दिया गया था। स्वामी दयानन्द जी अपना बहुमूल्य समय ऐसे कामों में खर्च नहीं करना चाहते थे, परन्तु दो बातों का उल्लेख करना आवश्यक था। एक कि ईश्वरकृत सत्य विद्या पुस्तक वेदों पर दोष न आए कि उनमें अनेक परमेश्वर की पूजा पाई जाती है। दूसरा कि आगे को मनुष्यों को प्रकट हो जाये कि ऐसे-ऐसे कुतर्क खड़े करके मेरा समय बर्बाद न करें। इससे कई कठिन शंकाएँ तो मेरे बनाए ग्रन्थों को ठीक-ठाक मन लगाकर विचारने से ही निवारण हो सकती है। यह पुस्तक हिन्दी भाषा में ही है।

२४. भ्रमोच्छेदन (सन् १८८० ई.)

स्वामी दयानन्द जी ने राजा शिव प्रसाद सितारेहिन्द की बुद्धि और चतुराई की प्रशंसा सुन के चित्त में चाहा कि कभी उनसे समागम होकर आनन्द होवे। देखना चाहिए कि जैसा उनको मैं सुनता हूँ, वैसे ही वे हैं या नहीं, ऐसी इच्छा थी। स्वामी जी आनन्दबाग में ठहरे थे। इतने में अकस्मात् राजा शिवप्रसाद जी, एस.एच. कर्नल आलकॉट साहब और एच.पे. मैडम ब्लैवष्टकी को मिलने के लिए आनन्दबाग में आये, उन्होंने स्वामी जी से मिलकर कहा कि मैं उक्त साहब और मैडम को मिलाना चाहता हूँ। स्वामी जी ने एक मनुष्य को भेजकर राजा जी की सूचना कराई और जब तक उक्त साहब के साथ राजा जी न उठ गये तब तक जितना स्वामी जी ने अपने पत्र में लिखा था उनसे बातें हुई, परन्तु जैसा स्वामी जी का प्रथम निश्चय राजा जी पर था वैसा नहीं पाया। मन में उन्होंने विचारा कि जितनी दूसरों के मुख की बात सुनी जाती है सो सब सच नहीं होती।

काशी के राजा शिव प्रसाद जी ने महर्षि की ऋग्वेदादिभाष्य पर ''निवेदन'' नाम से कुछ आरोप छपवाये थे। इन पर स्वामी विशुद्धानन्द जी के हस्ताक्षर भी थे। महर्षि ने आक्षेपों के उत्तर में यह **'भ्रमोच्छेदन'** नाम का ग्रन्थ रचा।

यह ग्रन्थ स्वयं महर्षि जी ने हिन्दी भाषा में लिखा। इस ग्रन्थ में पहले राजा जी के प्रश्न हैं, फिर देव दयानन्द जी के उत्तर हैं। स्वामी जी अपने पक्ष में इतने दृढ़ थे कि उन्हें अनेक पंडितों से शास्त्रार्थ करने में कोई हिचक नहीं थी, अपितु वे तो इसका स्वागत ही करते थे। जैसे:-

प्रश्नः- काशी के विद्वान् और बुद्धिमान् सब मिलकर राजा जी का पक्ष लेकर आपसे शास्त्रार्थ करेंगे तो आपको बड़ा कठिन होगा।

उत्तरः- स्वामी जी ने उत्तर दिया कि मैं परमेश्वर को साक्षी मान कर सत्य कहता हूँ कि ऐसा करें तो मैं अत्यन्त प्रसन्नता के साथ सबको विदित करता हूँ कि यह बात कल होनी हो तो आज ही हो जावे। जो ऐसी मेरी इच्छा न होती तो मैं काशी में विज्ञापन पत्र क्यों लगवाता, और स्वामी विशुद्धानन्द जी तथा बालशास्त्री जी को प्रतिपक्षी स्वीकार क्यों करता।

प्रश्नः- सम्मुख होकर शास्त्रार्थ करने में अच्छा होगा या पत्र द्वारा?

उत्तरः सर्वोत्तम तो यह है, जो मैं और वे सम्मुख होकर शास्त्रार्थ करें तो शीघ्र ही सत्य और झूठ का सिद्धांत हो सकता है, अर्थात् एक महीने से लेकर छः महीने तक सब बातों का निर्णय हो सकता है और पत्र द्वारा शास्त्रार्थ करने में ३६ वर्षों में भी पूरा करना कठिन हैं। परन्तु जिस पक्ष में वे प्रसन्न हों उसी में मैं प्रसन्न हूँ।

प्रकाशन के पूर्व स्वामी जी इस ग्रन्थ को गुप्त रखना चाहते थे। उन्होंने वैदिक यंत्रायल के मैनेजर को निम्न आज्ञा दी थी कि जब तक भ्रमोच्छेदन ग्रन्थ छपकर न आए तक तब किसी को मत दिखलाना। ■

(क्रमशः)

पाप से मुक्ति के नाम पर लूट

भारत में सद्गुरु के नाम पर ठगों का टिड्डी दल

(गतांक पृष्ठ ३० से आगे)

● **डॉ. गंगाशरण आर्य, 'साहित्य सुमन'**
चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
ग्राम- शाहबाद, मोहम्मदपुर, नई दिल्ली,
चलभाष : ९८७१६४४१९५

ऐसे ही अपनी थर्ड आई से भक्तों पर कृपा बरसाने वाले निर्मल बाबा का समागम दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर लगभग सात वर्ष पहले आने लगा था, जो अपने भक्तों को कृपा मिलने के सरल उपाय बतलाकर प्रत्यक्ष रूप से मूर्ख बनाने लगे और आसानी से लोग मूर्ख बन भी रहे थे। आइये देखते हैं ये निर्मल बाबा हैं कौन? निर्मल बाबा का पूरा नाम निर्मलजीत सिंह नरूला है। निर्मल बाबा झारखण्ड के प्रथम विधान सभाध्यक्ष इन्द्रसिंह नामधारी का साला है, जहाँ वह अपने विभिन्न व्यवसायों में असफल रहे हैं वहीं निर्मल बाबा के रूप में दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर राज कर रहे हैं। १९९८ से १९९९ तक झारखण्ड के पूर्वी सिंहभूम के बहरागोड़ा में किराये के मकान में रहते हुए पत्थर खनन का कार्य करते थे जिसमें असफल हुए और पाँच साल का किराया दिये बिना भाग गए। जो व्यक्ति अपने प्रत्येक व्यवसाय में असफल रहा है, वह आज दूसरे के व्यवसाय को सफल बनाने का गुरुमन्त्र दे रहा है। अब देखिये कि ये निर्मल बाबा अपने भक्तों को कैसे-कैसे उपाय उनकी समस्याओं के समाधान हेतु बताते हैं। वह अपने भक्तों को अपने घर में १० के नोटों की एक गड्डी तथा पॉकेट में काला पर्स रखने की सलाह देते हैं तो किसी को सलाह दी कि तुमने कभी डोसा खाया है, जब भी खाओ तो ५ डोसे दूसरे को खिलाने हैं जिससे कृपा आएगी। बजरंग बली के मन्दिर में १ किलो के स्थान पर ५ किलो का लड्डू चढ़ाने का निर्देश देते हैं। वे वर्ष में मात्र दो बार ही वैष्णोदेवी के दरबार जाने को कहते हैं। यदि आप गलती से दो से अधिक बार चले गये तो उनके अनुसार कृपा नहीं आएगी। मानो उन्होंने कृपा देने का ठेका ईश्वर से प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त कर लिया हो। मेरठ के हरीश वीरसिंह को शुगर की बीमारी से मुक्ति दिलाने हेतु १ माह तक मीठा खीर खाने और दूसरे लोगों को खिलाने की सलाह दी। ऐसा करने पर उनकी हालत और बिगड़ गई। ऐसी ही उल्टी-पुल्टी सलाह देकर अपने भक्तों की संख्या बढ़ाने में लगे हुए हैं। यही नहीं, ये अपने भक्तों को अपनी आय का दस प्रतिशत देने के लिए भी प्रेरित करते हैं। उनके समागम में भाग लेने के लिए भक्तों से धन वसूला जाता है। उनके निर्देश पर काले पर्स और उनके चित्रों की बिक्री बहुत बढ़ गई थी। मीडिया ने उनका जब भेद खोला तो दोनों की बिक्री में विराम आ गया। निर्मल बाबा ने नई दिल्ली के ग्रेटर कैलाश में ३० करोड़ का होटल खरीदा। अब आप स्वयं निर्णय लें कि अपने भक्तों के धन से निर्मल बाबा अमीर हो रहे हैं अथवा उनकी कृपा पाकर उनके भक्त?

उपर्युक्त निर्मल बाबा के टीवी प्रोग्राम में भक्तों द्वारा उठाए गए प्रश्न रोटी, कपड़ा, मकान, रोजगार व छोटी-मोटी दुर्घटनाओं का दु:ख, आर्थिक अभाव में पारिवारिक क्लेश इत्यादि जो दु:ख हैं ये सभी प्राय: शासकीय दुर्व्यवस्था से सम्बन्धित हैं परन्तु निर्मल बाबा भक्तों से मोटी फीस लेकर उनकी समस्याओं के समाधान के लिए उसे जवाब देता है मानों व्यापारियों से पैसा लेकर उनका विज्ञापन कर रहा हो। उसके उत्तर में समस्या, कारण और समाधान का आपस में कोई सम्बन्ध नजर नहीं आता, परन्तु वैदिक ज्ञान के अभाव के कारण बेचारा भक्त यही समझता है कि कृपा का प्रसाद मिल जाने पर उसके सारे कष्टों का निवारण पुरुषार्थ किये बिना ही हो जाएगा, बिना गाय की पूँछ थामे ही वैतरणी पार हो जाएगी, सीधे स्वर्ग मिल जाएगा, मुक्तिधाम के कपाट खुले मिलेंगे। लेकिन असल में होता यह है कि उनका लोक ही नहीं परलोक भी किसी काम का नहीं रह जाता। आधुनिक मनुष्य इतना व्यस्त है कि शॉर्ट कट से लक्ष्य प्राप्ति करना उसकी विवशता बन चुकी है। अत: आपाधापी के इस युग में उसके पास न तो सद्ग्रन्थों के स्वाध्याय का समय है, न ही दार्शनिक ग्रन्थों के रहस्य को खोजने का सामर्थ्य है। न साधना के कठिन योग मार्ग पर आरूढ़ होने की क्षमता है। **जिसको रोटी, कपड़ा और मकान की समस्याओं से ही नहीं उबरने दिया जाता वह अभिशाप, वरदान और कृपा के चक्कर में क्यों नहीं फँसेगा?** इसलिए वह ऐसे गुरुओं अर्थात् रहनुमाओं की तलाश में रहता है जो केवल उसके सिर पर या पीठ पर हाथ रखकर उसे निहाल कर दें, उसका कल्याण कर दें। सड़क छाप ज्योतिषियों की तरह ये गुरु घंटाल भी ऐसे अन्य भक्तों की बाट देखते मिलते हैं। अत: गुरु व चेला दोनों एक-दूसरे के पूरक बनने में देर नहीं लगाते। न तो गुरु चेले की और न चेला गुरु की परीक्षा लेता है। पात्रता सुनिश्चित करने का समय व सामर्थ्य दोनों के पास नहीं है। अत: घी-शक्कर होने में दोनों को रत्ती भर भी विलम्ब नहीं होता। जैसे बरसों से एक-दूसरे से मिलने की प्रतीक्षा में ही बैठे हुए थे। अक्ल के पीछे लठ लिये घूमने वाले इन लोगों की इस देवभूमि भारत में कमी नहीं है क्योंकि यहाँ श्रद्धा और भक्ति की अधिकता का इतना बोलबाला है कि सत्संग, स्वाध्याय, साधना, संस्कार की औपचारिकताएँ इनके आगे फीकी पड़ जाती हैं। फकीरी और पीरी के समक्ष किसी दूसरे-तीसरे का जादू यहाँ नहीं चल सकता। यहाँ राम से बड़ा राम का नाम माना जाता है। यहाँ शास्त्रों को नहीं तत्व को महत्व दिया जाता है और तत्व वह है जो गुरु के श्रीमुख से नि:सृत होता है (निकलता है) भले ही वह थूक और बलगम ही क्यों न हो। अरे जहाँ रामपाल दास जैसा दुष्ट आचरण वाला, विद्या, विज्ञान का महाशत्रु महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों को अवैज्ञानिक बताता रहा अब वहाँ दयानन्द की कौन सुनेगा? कपिल, कणाद, गौतम, जैमिनी की कौन सुनेगा? अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा की कौन सुनेगा? ■ **(शेष भाग आगामी अंक में)**

'वयं राष्ट्रे जागृयाम् पुरोहितः'

● **रामफल सिंह आर्य**
वैदिक प्रवक्ता, भिवानी (हरियाणा)
चलभाष : ९४१८२७७७१४, ९४१८४७७७१४

ईश्वरीय वाणी वेद की यह सूक्ति पुकार-पुकारकर कह रही है कि पुरोहित लोग, विद्वान् लोग, प्रचारक लोग, ब्राह्मण लोग सदैव राष्ट्र को जगाने का कार्य करें जिससे कि किसी प्रकार की अव्यवस्था कभी पनपने न पाए और यदि कोई अव्यवस्था हो भी तो वह दूर हो जाए। वेद माता की यह सूक्ति राष्ट्र भक्ति की भावना से ओतप्रोत है जो युगों-युगों से मानव का पथ प्रदर्शन करती आई है और आगे भी करती रहेगी। इसमें बताया गया है कि विद्वान् तथा राष्ट्र हितैषी लोगों का क्या कर्तव्य है। राष्ट्रहित किस प्रकार किया जा सकता है अर्थात् वे सदैव राष्ट्र के मार्गदर्शक बनकर कार्य करें। ठीक वैसे जैसे यज्ञवेदी पर बैठा हुआ पुरोहित यजमान का मार्गदर्शन करता हुआ अपने सुन्दर एवं कल्याणकारी उपदेश के द्वारा सदैव उससे समुचित प्रकार से यज्ञ सम्पादन करवाता है जो कि यजमान एवं अन्यों के लिए अभिलाषित फलों का प्राप्त कराने वाला होता है। पुरोहित तो कहते ही उसे हैं जो कि दूसरों के हित के लिए कार्य करता हो, **पुरोहितं रतः इति पुरोहितः।** यज्ञवेदी पर जो कार्य पुरोहित करवाता है राष्ट्र वेदी पर वही कार्य ब्राह्मण द्वारा सम्पन्न होता है। ब्राह्मण कौन? जो पक्षपात रहित, वेद के सच्चे विद्वान्, धर्म–कर्म को ठीक-ठीक जानने वाले, सबके हित की बात बोलने वाले एवं छल-कपट रहित विद्वान् है उन्हीं को उपर्युक्त सूक्ति में पुरोहित की या ब्राह्मण की संज्ञा दी गई है अन्यों को नहीं। ऐसे योग्य व्यक्ति जब राष्ट्र को जगाने का कार्य करते हैं तो उस राष्ट्र का उत्थान कोई भी रोक नहीं सकता। धुन के धनी सच्चे ब्राह्मण आचार्य प्रवर चाणक्य ने जिस समय इस मन्त्र से प्रेरणा पाकर राष्ट्र को जगाने का कार्य किया तो एक क्रान्ति आ गई और दुष्टों तथा अन्यायी शासकों को मुँह छिपाकर भागना पड़ा। आधुनिक युग में महर्षि दयानन्दजी महाराज ने जब राष्ट्र का पतन देखा तो राष्ट्र वेदी के वे सच्चे पुरोहित बन गए और वह कर दिखाया जिसकी किसी ने कल्पना तक न की थी। अपने परिवार के विपुल धन-वैभव को, माता-पिता आदि के स्नेह बन्धनों को तोड़ते समय जिसके मन में तनिक सा भी दु:ख या संशय न हुआ, जो ममता की मूर्ति माता को रोता–बिलखता छोड़कर घर से चला आया और कभी फिर उस घर की ओर दृष्टिपात भी न किया, वही देव दयानन्द जब एक माता को गंगा में अपने कलेजे को प्रवाहित करके उसके ऊपर डालें हुए कफन के टुकड़े से अपनी लज्जा को ढाँपते हुए देखता है तो जार-जार रोता है। रात्रि को उसे नींद नहीं आती और वह राष्ट्र के उत्थान हेतु विचार करता है कि क्या यह वही देश है जो कभी विश्व का गुरु और सोने की चिड़िया हुआ करता था? वह राष्ट्र वेदी पर बैठकर मानो प्रण करता है कि मैं इस देश में किसी को मूर्ख, अज्ञानी, अनपढ़, निर्बल, दरिद्र एवं असहाय नहीं रहने दूँगा, किसी के द्वारा भी अपने इन लोगों का शोषण न होने दूँगा, चाहे इसके लिए मुझे कोई भी मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। प्रिय पाठकगणों यह है उपर्युक्त सूक्ति की मूल भावना जिसका उपदेश वह कर रही है।

राष्ट्र को जगाने वाले योग्य व्यक्ति जब इस पवित्र भावना से कार्य करते हैं तो निश्चित रूप से वह राष्ट्र उन्नतिशील बनता है, जागता है। इसके विपरीत जब स्वार्थी, लोभी एवं क्षुद्राशय लोगों की बातों में आकर लोग पाखण्ड में फँसते हैं तो महान् दु:ख एवं हानि भी उठानी पड़ती है। खेद है कि आज लोग सच्चे ब्राह्मणों की न मानकर अनेकों छल-प्रपंच रचकर गुरुडम फैलाकर, वाक् जाल के द्वारा जनता के धन पर गिद्ध दृष्टि जमाए हुए स्वार्थी, ढोंगी और धूर्त लोग अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं और मूर्ख एवं भोले लोग जिनके लिए महर्षि दयानन्द ने **'आँख के अन्धे, गाँठ के पूरे'** विशेषण प्रयुक्त किया है, उनके जाल में इस प्रकार से फँसते जाते हैं कि उनका निकलना मुश्किल ही नहीं असम्भव सा हो गया है। कोई गुरुमन्त्र देकर उनका कल्याण करने की घोषणा करता है, कोई बीज मन्त्र देकर, कोई केवल प्याज, समोसा या टमाटर खिलाकर ही लोगों का भाग्य परिवर्तन करने का दम भर रहा है। कोई चिकने–चुपड़े शब्दों द्वारा, कोई तथाकथित भक्ति में लीन होकर नाचने-गाने के द्वारा, कोई चेलियों के संग रास रचाकर और कोई गुरुघर की सेवा में ही सब कुछ प्राप्त करने की बात करके लोगों का सर्वस्व हरण इस प्रेम से कर रहे हैं कि हरण करवाने वाले उसके विरुद्ध कुछ भी सुनना तक नहीं चाहते। इससे किसी और का भले ही कोई कल्याण हो या न हो इन तथाकथित गुरुओं एवं बाबाओं की तो चाँदी ही चाँदी हो रही है। यह कितनी बड़ी विडम्बना है कि अन्धश्रद्धा के वशीभूत होकर अनेकों लोग दिन-प्रतिदिन अपने समय और धन को लुटा करके इन धूर्तों के जाल में फँसते जाते हैं और जिनके पीछे कल सैकड़ों लोगों की भीड़ थी, आज लाखों की हो चुकी है। अज्ञान की पराकाष्ठा भला और क्या हो सकती है। कहाँ पूर्ण बुद्धिपूर्वक परिश्रम द्वारा जीवन में ऊपर उठने की बात और कहाँ केवल आँखें बन्द करके तथाकथित गुरुओं, बाबाओं एवं बापूओं के पीछे भेड़ की भाँति चलने की यह प्रथा? क्या राष्ट्र का इससे कोई भला होने वाला है? कदापि नहीं। उत्थान तो इससे क्या होना है उल्टा पतन, नहीं-नहीं घोर पतन हो रहा है। अनपढ़, अशिक्षितों की बात तो जाने दें आज पठित वर्ग में, जिन्हें हम बुद्धिजीवी कहते हैं, घोर पाखण्ड पग पसार चुका है। सस्ते साधनों द्वारा सुख प्राप्त करने की एक होड़ सी लग गई है। समय-समय पर इन पाखण्डियों के **'काले कारनामे'** जनता के सामने आते भी हैं, परन्तु हमारे लोगों की आँखें नहीं खुलती, वे जागते नहीं हैं। कितना घोर आश्चर्य है।

ऐसे अन्धकारपूर्ण समय में क्या हम आर्यों का यह पावन एवं प्रथम कर्तव्य नहीं है कि पूरी शक्ति के साथ योजनाबद्ध ढंग से, एकजुट होकर पाखण्ड को मिटाने के लिए आगे आएँ और समाज में जागृति का शँखनाद करें। देखो! समय चाहे कोई भी हो, प्राचीन हो या नवीन, विज्ञान का युग हो या कोई और श्रेष्ठ सच्चे ब्राह्मण की आवश्यकता तो सदैव रहेगी।

वास्तव में तो यही लोग हैं जो राष्ट्र को सुरक्षित, सुखी एवं समृद्ध किया करते हैं। अपने श्रेष्ठ उपदेशों द्वारा लोगों को सन्मार्ग पर प्रेरित किया करते हैं। राष्ट्र की अन्य शक्तियाँ या अन्य वर्ग तो सब इनकी ही प्रेरणा पाकर आगे बढ़ते हैं। क्षत्रिय की क्षात्र शक्ति पर यदि ब्रह्म शक्ति का अंकुश न हो तो वह भी राष्ट्र की रक्षा करने के स्थान पर राष्ट्र का विध्वंसक हो जाए। वैश्य के धन पर यदि ब्राह्मण के उपदेश का मार्गदर्शन न हो तो वह भी संग्रह की प्रवृत्ति वाला होकर मात्र अपना हित ही देखने वाला हो जाए। शूद्र में भी सेवा भाव का आधान ब्राह्मण द्वारा ही किया जा सकता है। इससे आप अनुमान लगा सकते हैं कि ब्राह्मण वर्ग को कैसा होना चाहिए। एक बात और स्पष्ट कर दें कि कोई हमारे इन वर्णों के वर्णन को पढ़कर आज के समाज में प्रचलित इस तथाकथित जाति-पाति के द्वारा इन वर्णों का निर्णय न करें। हमारा अभिप्राय सभ्य वैदिक समाज में प्रचलित उस व्यवस्था से है जो जन्मगत न होकर कर्मों के आधार पर चलती थी और बहुधा जिसका निर्णय आचार्य के कुल में हुआ करता था। कहीं विषयान्तर न हो अत: हम पुन: अपने अभीष्ट विषय पर आते हुए कहते हैं कि पुरोहित द्वारा राष्ट्र को जगाने के साधन क्या हैं? वह किस आधार पर इतनी बड़ी घोषणा कर रहा है कि मैं राष्ट्र को जगाने के लिए बैठा हूँ। वह जगाएगा कैसे? इसका वर्णन अथर्ववेद के निम्नलिखित मन्त्र में आता है-

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदः तपो दीक्षामुपनिषदुर्ग्रे।
ततो राष्ट्रं बलगोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु।।

(अथर्व १९/४१/१)

अर्थात् आत्मसुख प्राप्त किए हुए ऋषियों ने लोग कल्याण की इच्छा करते हुए तप का अनुष्ठान किया और दीक्षा को धारण किया। उस तप और दीक्षा से राष्ट्र उत्पन्न हुआ इसलिए इस राष्ट्र के सामने देव भी ठीक प्रकार से झुकें, सत्कार करें।

भाव यह है कि राष्ट्र को जन्म तो ऋषि लोग ही देते हैं किसलिए देते हैं, सर्वसुखों की सिद्धि के लिए। तप में सिद्धि प्राप्त करके वे दीक्षित हुए और राष्ट्र को जन्म दिया। अर्थात् राष्ट्र के लिए वे नियम वे व्यवस्थाएँ दी कि सर्व सुखों की सिद्धि जन-जन के लिए सहज हो सके। अर्थापति से सिद्ध है कि जब अतपस्वी लोग और बिना दीक्षित हुए लोग नियम और व्यवस्था बनाने वाले होंगे तो सुखों के स्थान पर दु:खों का बढ़ना निश्चित है। इसलिए दीक्षित हुए लोगों को राष्ट्र के लिए अर्पित करने हेतु ऋषियों ने जिस शिक्षा पद्धति को पूर्ण परीक्षा के उपरान्त लागू किया वह थी गुरु-शिष्य परम्परा की गुरुकुलीय प्रणाली जहाँ पर वे दोनों तप करते थे। दोनों कौन? गुरु एवं शिष्य। आचार्य ही शिष्य को तपा कर उसे दीक्षा धारण करवाता था। उसे राष्ट्र को अर्पित करता था। कहना चाहिए कि राष्ट्र को जन्म देता था। आचार्य की उस कृति पर मोहित होकर देव लोग भी सम्मान से झुककर उसे नमन करते थे। वह दीक्षित विद्या व्रत स्नातक राष्ट्र की वेदी में एक इष्टिका बनकर लगता था और समाज को आगे ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता था। कैसा दिव्य युग था वह। ऐसे आचार्य को यदि राष्ट्र वेदी का पुरोहित न कहें तो और भला क्या कहें? आचार्य चाणक्य जिस समय बालक चन्द्रगुप्त को उसकी माता से माँगने आए तो उसकी माता ममता के वशीभूत होकर बालक को आचार्य को सौंपने में आनाकानी करने लगी। कहने लगी कि मेरा तो एकमात्र यही सहारा है, मैं अपने बेटे को न दूँगी। आचार्य हँसकर कहने लगे कि सत्य है माता बेटा तो वह तेरा ही है परन्तु आज यह तेरा बेटा कल पूरे राष्ट्र का होगा। पूरा राष्ट्र इसकी जय-जयकार करेगा। क्या तू चाहती है कि स्वार्थ में पड़कर तू इसे इसकी महान् पहचान से परे रखे। तू इसे मुझे दे दें मैं इसे राष्ट्र को अर्पित करूँगा। इतिहास साक्षी है कि आचार्य ने चन्द्रगुप्त जो भेड़-बकरियाँ चराता था, को क्या से क्या बना दिया। मानों वेद की वह सूक्ति मूर्त रूप में आकर सामने खड़ी हो गई। जो इस लेख की शीर्षक हमने बनाई है। कौन जानता था कि मथुरा में ब्रह्मऋषि गुरु विरजानन्द के चरणों में बैठकर जो संन्यासी शिक्षा पा रहा है वह इस देश का एक दीपस्तम्भ बन जाएगा। गुरु ने शिष्य के अन्तर में स्थित वह विशाल ज्योति देख ली थी, वह क्रान्ति देख ली थी जो सदियों से जर्जरित इस देश का कायाकल्प करने की क्षमता रखती थी। वे जान गए थे कि यही सच्चा ब्राह्मण है, यही वास्तविक पुरोहित है। दण्डी गुरु विरजानन्द की कुटिया में यदि राष्ट्र जन्म नहीं ले रहा था तो और भला क्या हो रहा था? अथर्ववेद के उपरोक्त मन्त्र में वर्णित तप के द्वारा दीक्षित बल और ओज के समक्ष क्या राष्ट्र सम्मान से नहीं झुका? उस पुरोहित की जागृति की भावना पर बार-बार बलिहारी। भविष्य में जब भी राष्ट्र जागेगा, उसका भाग्योदय होगा तो ऐसे ही किसी पुरोहित के पौरोहित्य में होगा। ऐसे ही किसी ब्राह्मण के ब्राह्मणत्व में होगा। भारत से बाहर दूसरे देशों में भी जब भी किसी राष्ट्र ने अंगड़ाई ली है वह किसी न किसी ब्राह्मण की शरण में ही ली है। उस देश में उसका नाम भले ही ब्राह्मण या पुरोहित न हो, उससे कोई विशेष अन्तर नहीं आता परन्तु कार्य उसने वही किया जो वेद की उपरोक्त सूक्ति तथा मन्त्र की मूल भावना है। ईश्वरीय नियम तो भारत क्या और पाकिस्तान क्या, ईरान क्या और जर्मनी क्या, अमेरिका क्या और ऑस्ट्रेलिया क्या, सर्वत्र एक जैसे ही हैं। इसलिए वेद के उपदेश किसी एक स्थान, समाज या व्यक्ति के लिए न होकर पूरे भूमण्डल के लिए हैं। **'यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्'** अर्थात् जहाँ सारा संसार एक नीड़ अर्थात् घोंसला बन जाए यह क्षमता यदि किसी विचार में हो सकती है तो वह वेद मन्त्र ही हो सकते हैं। हमारे भारत वर्ष का इतिहास ऐसे अनेक सच्चे ब्राह्मणों से भरा पड़ा है जो राष्ट्रहित अपना सर्वस्व लगा गए। उपरोक्त आचार्य चाणक्य और महर्षि दयानन्द के उदाहरण तो संकेत मात्र हैं। परन्तु जब हम वर्ण व्यवस्था जन्म के आधार पर मानने लगे, परार्थ का स्थान स्वार्थ ने लिया और धर्म बाह्य आडम्बर बन गया, देश में उपदेशकों की, सच्चे ब्राह्मणों की, सच्चे पुरोहितों की कमी हो गई तो हमारा विनाश भी हो गया। प्राचीन आर्यावर्त के राजा कभी भी निरंकुश नहीं होते थे। उनको अनुशासित रखने के लिए एक सभा होती थी जिसके अधिकारी उच्च कोटि के विद्वान्, ब्राह्मण एवं पुरोहित लोग हुआ करते थे। अपने श्रेष्ठ उपदेशों द्वारा ये लोग सदैव राजा को सत्परामर्श दिया करते थे जिससे कि राजकार्य अति उत्तमता के साथ चलता रहता था। आओ! हम राष्ट्र यज्ञ में समिधा बनकर लगें और अज्ञान तथा अन्धकार, पाखण्ड आदि को मिटाने के लिए श्रेष्ठ विद्वानों की चरण–शरण में बैठकर उनके दिए उपदेश द्वारा तन-मन-धन से राष्ट्र निर्माण में जुट जाए कि जिससे यह राष्ट्र पुन: विश्व का गुरु बन सके। ■

महाभारत काल के पश्चात् भारत में चार युगों का संक्षिप्त विवरण

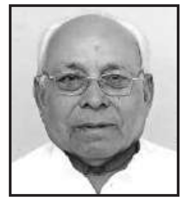

● पं. उम्मेदसिंह विशारद
गढ़ निवास मोहकमपुर, देहरादून (उत्तराखण्ड)
चलभाष : ९४११५१२०१९, ९५५७६४१८००

१. भारत का अन्धकार युग : अंग्रेजों तथा मुसलमानों के भारत में आकर शासन करने से पहले भारत की क्या स्थिति थी यह विद्वानों के विवाद का विषय है किन्तु उस समय प्रत्येक भारतीय के जीवन में वेदों–उपनिषदों, गीता की शिक्षा प्रचलित थी।

जब मुसलमान भारत में आए तब तक भारत रूढ़ियों का शिकार हो चुका था और कुछ बचा भी था उसको इस्लामी शिक्षा ने उखाड़ दिया था। मुसलमानों का शासन इस देश में ८०० साल तक रहा। यद्यपि राणा प्रताप तथा शिवाजी ने भारत की प्राचीन परम्परा की रक्षा करने का प्रयत्न किया तथापि मुस्लिम शासन हावी रहा। जैसे पोप का शासन यूरोप में अन्धकार युग का, वैसे मुस्लिम शासन का भारत में अन्धकार युग रहा। इस युग में हम अपना सब कुछ भुलाने लगे और परवशता के कारण रूढ़ियों के दास हो गए। इस युग में बाल विवाह, विधवाओं का आजीवन विधवा और पति के मरने पर सती प्रथा का प्रचलन, छूत-अछूत की भावना, यह सब कुछ होने लगा था। यद्यपि यह सब कुछ मुस्लिम शासन के प्रतिक्रिया के रूप में हुआ तथापि भारत का यह युग यूरोप के अन्धकार युग के ही समान था।

२. भारत का सुधार युग : मुस्लिम शासन के बाद भारत में अंग्रेजों का शासन आया। अंग्रेजों का शासन लगभग ३०० साल तक रहा। अंग्रेजों को हम कितना ही बुरा कहें परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि उनके आने पर ही भारत में प्रचलित कुरीतियों को दूर करने का सूत्रपात हुआ। ये लोग व्यापारी बनकर आए थे किन्तु भारत की परिस्थितियाँ ऐसी थीं कि शासन सूत्र उनके हाथ में आ गया। व्यापारी राजा बन गए। अंग्रेजी शासन काल में लॉर्ड मैकाले को बुलाकर शिक्षा पद्धति में परिवर्तन करके अंग्रेजों को अंग्रेजी भाषा में काम करने वाले क्लर्क मिल गए। शिक्षा पद्धति में परिवर्तन हो गया। अंग्रेजी ग्रन्थों को पढ़कर भारतीयों को उनका परिचय होने लगा। अंग्रेजों का उद्देश्य था कि शक्ल सूरत में भारतीय हो किन्तु विचारों में अंग्रेज हो। इस प्रकार अंग्रेजी शिक्षा ने अंग्रेजों की अधीनता के साथ-साथ रूढ़िवाद से मुक्त होने का भी भारतीयों में संकल्प आने लगा। इस सुधार की जन्मदात्री यद्यपि अंग्रेजी शिक्षा थी तो भी इस युग में राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, केशवचन्द्र सेन तथा ऋषि दयान्द ने अनथक कार्य किया इस प्रकार सुधार युग का प्रारम्भ हुआ।

३. भारत का सुधार तथा जागरण युग : राजा राममोहन राय (१७७२-१८३३) ६१ वर्ष तक जीवित रहे।अंग्रेजों ने पहले-पहल बंगाल में शिक्षा का सूत्रपात्र किया। राजा राममोहन राय सामाजिक चेतना जागरण के प्रतिनिधि समझने चाहिए। राजा राममोहन राय का कहना था कि अंग्रेजी शासन से लाभ ही है। अंग्रेजों के विरुद्ध सन् १८५७ में गदर हुआ। ये गदर से २४ वर्ष पहले ही दिवंगत हो गए थे। उस समय अनेक प्रमुख कुप्रथाएँ प्रचलित थीं। उसमें मुख्य सती प्रभा थी, उसे अफीम खिलाकर जिन्दा चिता में धकेल दिया जाता था। उनकी भाभी भी सन् १८११ में जबरदस्ती सती की गई थीं। उस काल तक ८०० स्त्रियाँ सती हो चुकी थीं। उस समय के लॉर्ड बैरिक गर्वनर जनरल की सरकार ने ४ दिसम्बर १८२९ को सती प्रथा के विरूद्ध कानून बना दिया।

ईश्वरचन्द्र विद्यासागर : (१८२०-१८९१) ये ७१ वर्ष तक जीवित रहे। इनका सुधार का क्षेत्र विधवाओं की दुर्गति को दूर करना था। विधवा यदि सती नहीं होती थी तो उनका सिर मूंड दिया जाता था, घर में दासी का जीवन व्यतीत करती थी। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने स्वयं विधवा से विवाह किया था और अपने पुत्र का विवाह भी विधवा से किया था। उन्होंने विधवा विवाह के पक्ष में ५००० हस्ताक्षर करा करके २५ आवेदन-पत्र सरकार को भेजे। इनके प्रयत्न से २५ जुलाई १८५६ को विधवा विवाह कानून बना।

केशवचन्द्र सेन : (१८३६-१८८४) ये ४८ वर्ष की आयु तक जीवित रहे। ये भी सामाजिक जागृति के प्रतिनिधि थे। बिल्कुल वैयक्तिक स्वतन्त्रता इनका लक्ष्य था। समाज के सब प्रकार के रूढ़ी प्रतिबन्धों को तोड़ डालना चाहते थे। सुधार काल का ये युग सामाजिक सुधार तक परिमित रहा। अभी राष्ट्रीयता का युग नहीं आया था।

ऋषि दयानन्द सरस्वतीजी : (१८२४-१८८३) ये ५९ वर्ष की आयु तक जीवित रहे। अगर विष द्वारा इनकी हत्या न होती तो ब्रह्मचारी होने के कारण ये अधिक वर्ष तक जीवित रहते। इनके जीवन को दो भागों में बाँटा जा सकता है। पहला ये राष्ट्रीय चेतना की जागृति में लगे रहे। सन् १८५७ के गदर में इनकी आयु ३९ वर्ष की थी। ऋषि दयानन्द किसी न किसी प्रकार क्रियाशील रहे। जब १८५७ की क्रान्ति असफल हो गई तब उन्होंने अनुभव किया कि जब तक सामाजिक क्रान्ति द्वारा जन जागरण नहीं होता तब तक राष्ट्रीय चेतना का जागना असम्भव है। इसलिए गदर के बाद सीधे सामाजिक क्षेत्र में जुट गए।

उनका निष्कर्ष यह था कि जब तक भारतवासी सामाजिक दायरे में बंधे रहेंगे तब तक राष्ट्रीय चेतना का उभरना मुश्किल है। यही कारण है ऋषि दयानन्द पहले राष्ट्रीय चेतना को उभारने में लगे रहे। वहाँ असफलता देखकर सामाजिक चेतना को उभारने में लग गए। यूरोप में भी यही हुआ जब पोप लूथर आदि ने वहाँ के समाज को सामाजिक बन्धनों से मुक्त कर दिया तब वैयक्तिक स्वतन्त्रता, सामाजिक स्वतन्त्रता ने देश में जन्म लिया।

राष्ट्रों का इतिहास दासता से व्यक्ति की मुक्ति का इतिहास है। व्यक्ति

की परिवार में, समाज में, राष्ट्र में खो रहे व्यक्ति की खोज से ही जनसत्ता स्वतन्त्रता तथा जनता के अधिकारों का जन्म हुआ है। यूरोप में भी हुआ और भारत में भी ऐसा ही हुआ है।

भारत का वैयक्तिक स्वतन्त्रता का युग

भारत की दासता से मुक्ति की जो प्रक्रिया भारत में हुई थी उसका अन्त १९४७ में हुआ जब भारत स्वतन्त्र घोषित किया गया। भारत का अन्धकार युग भी था, सुधार युग भी था और जागरण युग भी आया और अन्त में इस दासता का १९४७ में वह युग आया जब व्यक्ति सब प्रकार की दासता से मुक्त होकर उस जगह आ पहुँचा जहाँ सब प्रकार की दासताओं से मुक्त हो सकता था। हम समझते हैं कि राजनैतिक दासता से मुक्त हो जाना ही व्यक्ति के दासता से मुक्त होने का सूचक है। इसमें सन्देह नहीं है। ऋषि दयानन्द के मार्ग पर चले महात्मा गाँधी के असहयोग आन्दोलन के फलस्वरूप आज भारत न मुस्लिम व अंग्रेजों के शासन के अधीन है।

परन्तु अन्धकार युग व सुधार युग के अवशेष अभी तक बने हुए हैं जिन्हें मिटाने का संघर्ष आज भी जारी है। अभी हम परिवार के अनेक रूढ़ी बन्धनों से मुक्त नहीं हुए हैं। आए दिन सुनने में आता है कि दहेज न मिलने से स्त्री जल मरी, अमुक जातिवाद की कट्टरता, निर्धन होने से उच्च शिक्षा का अभाव। फिर भी देश एक ऐसे स्तर पर जा पहुँचा है जहाँ मानव को मानवीयत्व का सामर्थ्य प्राप्त होने का सामर्थ्य प्राप्त हो गया है। मानव आज मानव होने के रास्ते पर चल पड़ा है।

महात्मा गाँधी जिनके सत्याग्रह आन्दोलन को भारत की स्वतन्त्रता का श्रेय प्राप्त है, वह १८५७ के १२ वर्ष बाद उत्पन्न हुए इसलिए उनका सशस्त्र क्रान्ति में कोई हाथ नहीं हो सकता, परन्तु १८५७ के गदर के समय में ऋषि दयानन्द ३३ वर्ष के युवा थे। यही कारण है कि कई लेखक ऐसे क्रियाशील व्यक्ति का इस आयु में चुप बैठे रहना स्वीकार नहीं करते। फिर भी मानना पड़ता है कि भारत के स्वतन्त्रता युग लाने में सशस्त्र क्रान्ति ने जो जागृति उत्पन्न की उसके साथ महात्मा गाँधी की सत्याग्रह के रूप में असशस्त्र क्रान्ति ने साथ दिया क्योंकि सशस्त्र क्रान्ति के असफल होने पर जनता के हृदय में सदियों की दासता से मुक्ति का बीज बोया जा चुका था।

उपसंहार

राष्ट्रों का इतिहास दासता से व्यक्ति की मुक्ति का इतिहास है। व्यक्ति की स्वतन्त्रता परिवार में, समाज में, राष्ट्र में खो गई है, उसी को पाने के लिए व्यक्ति खोज कर रहा है। संघर्ष कर रहा है। इस खोज में अपना स्थान खोज रहा है। इसी खोज में संसार के आदि से अब तक व्यक्ति जुटा हुआ है। परन्तु आज तक वह अपने स्वतन्त्र व्यक्ति को पा नहीं सका है। खोज व जिज्ञासा अभी भी बनी हुई है। मनुष्य अपनी निजता के कारण, अपनी प्रवृत्ति के कारण समाज में रहता हुआ अपने वर्ण का गुण प्रकट करने लगता है। यही उसका मनुष्यपन है। इसी ध्येय के कारण संसार में सदैव अभाव बना रहता है।

नोट : इस लेख में प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार द्वारा लिखित सत्य की खोज नामक ग्रन्थ से सहायता ली गई है। ■

है कोई जो हलचल मचा रहा

है कोई जो, हलचल मचा रहा,
सारा संसार नचा रहा।।
छुप–छुप छका रहा,
चमत्कार वह दिखा रहा।। है कोई...
है कोई जो, जग को चला रहा,
ब्रह्माण्ड को झुला रहा।।
सृष्टि को रचा रहा,
सर्वहित में बचा रहा।। है कोई...
है कोई जो, हवा को चला रहा,
पानी भी पिला रहा।।
अग्नि को जला रहा,
आकाश को फैला रहा।।
अवनी को घुमा रहा,
नि:शुल्क इन्हें लुटा रहा।। है कोई...
है कोई जो, सूरज को उगा रहा,
अंधेरे को भगा रहा।।
लालिमा को लुटा रहा,
कालिमा को हटा रहा।। है कोई...
है कोई जो, चाँद को चमका रहा,
चाँदनी को दमका रहा।।
तारों को टिमटिमा रहा,
रात को जगमगा रहा।। है कोई...
है कोई जो, दामिनी को दमका रहा,
बादलों को धड़का रहा।।
पानी को बरसा रहा,
मयूरों को हरषा रहा।। है कोई...
है कोई जो, नदियों को बहा रहा,
वृक्षों को नहा रहा।।
फलों को लगा रहा,
मिठास भी चखा रहा।। है कोई...
है कोई जो, फूलों को खिला रहा,
सुगन्ध भी फैला रहा।।
भौंरों को मंडरा रहा,
गुंजन भी करा रहा।। है कोई...
है कोई जो, उत्पन्न भी कर रहा,
उदर भी भर रहा।।
वह हँसा भी रहा,
कभी रुला भी रहा।। है कोई...
है कोई जो, जन्म दे जिला रहा,
सृष्टि को चला रहा।।
अन्त में बुला रहा,
वियोग भी भुला रहा।। है कोई...
है कोई जो, वेद ज्ञान बता रहा,
वेध विधान जता रहा।।
मेधा बुद्धि लुटा रहा,
अज्ञानता को मिटा रहा।। है कोई...
है कोई जो, आस्तीक भाव जगा रहा,
आध्यात्म में लगा रहा।।
आनन्द को बरसा रहा,
महिमा सर्वत्र दर्शा रहा।। है कोई...
है कोई जो, सत्य को दिखा रहा,
नियम भी सिखा रहा।।
मर्यादा में चला रहा,
मानवता से मिला रहा।। है कोई...

● **अम्बालाल विश्वकर्मार्य**
पिपलिया मण्डी, मन्दसौर
चलभाष : ८९८९५३२४१३

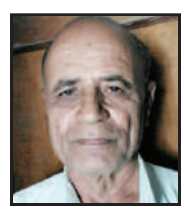

एक शताब्दी पूर्व मोपला काण्ड में बलि होने वाले धर्म वीरों की स्मृति में

शताब्दी पूर्व का विस्मृत एक नृशंस हिन्दू नरसंहार

● जगदीशप्रसाद आर्य
गिरदौड़ा (नीमच) (म.प्र.)
चलभाष : ८९८९६१५३४२

भारतीय स्वातंत्र्य समर के इतिहास में असहयोग आन्दोलन और खिलाफत आन्दोलन सर्वज्ञात है। इसी प्रकार विश्व इतिहास में प्रथम और द्वितीय विश्वयुद्ध भी ज्ञात है। यह नरसंहार प्रथम विश्व युद्ध समाप्ति के ठीक पश्चात् घटित हुआ। प्रथम विश्व युद्ध (१९१४-१९१९) में धुरी राष्ट्र हारे, मित्र राष्ट्र विजयी हुए थे। टर्की धुरी राष्ट्रों के साथ था जबकि इंग्लैण्ड मित्र राष्ट्रों के साथ। वर्साय की सन्धि के द्वारा युद्ध विराम हुआ। जैसा कि होता आया है विजेता पराजित के साथ कठोरता करता है, अंग्रेजों ने टर्की के साथ कठोरता की। उसे अशक्त करने के लिए मित्र राष्ट्रों ने उसको खण्ड-खण्ड कर दिया और टर्की का सुल्तान जो सम्पूर्ण इस्लामिक जगत् का खलीफा (धार्मिक मुखिया) होता था, का खलीफा पद समाप्त कर दिया। ये दोनों बातें इस्लामिक जगत् को कष्टकारक थीं। अत: उनके विरोध में आन्दोलन हुए, भारत में भी हुए। अंग्रेजों की कार्रवाई न्याय संगत थी या नहीं इस पर मतभेद हो सकते हैं, पर इतना तय है कि यह विशुद्ध इस्लामिक आन्दोलन था। हिन्दुओं का न तो इससे लेना-देना था और न उसमें हाथ ही था। गाँधीजी का भारत की राजनीति में पदार्पण हो चुका था। खिलाफत आन्दोलन और असहयोग आन्दोलन थोड़े से अन्तराल पर साथ-साथ ही प्रारम्भ हुए और गड्ड-मड्ड हो गए या यों कहें कि एक ही आन्दोलन दो नामों से चला यह आगे स्पष्ट हो जाएगा।

खिलाफत आन्दोलन को २७ अक्टूबर १९१९ से प्रारम्भ समझना चाहिए। इसी दिन से देशभर में खिलाफत सम्मेलन प्रारम्भ हुए। कलकत्ता में १९ मार्च १९२० को खिलाफत सम्मेलन हुआ इसमें यह फैसला कर लिया गया था कि आन्दोलन के लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए सरकार के साथ 'असहयोग' सर्वोत्तम हथियार हो सकता है। ९ जून १९२० के इलाहाबाद खिलाफत सम्मेलन में भी इसको सर्वसम्मति से दोहराया गया और कार्यसमिति ने वाइसराय को १ अगस्त पूर्व तक तुर्की की शिकायत दूर न होने पर असहयोग आन्दोलन की चेतावनी दे दी थी। समय सीमा बीत गई (१ अगस्त १९२० से असहयोग आन्दोलन शुरू हो गया। अगस्त १९२० पूरे महीने महात्मा गाँधी ने खिलाफत के जन्मदाता अली बन्धुओं (मोहम्मद अली और शौकत अली) के साथ देशभर का दौरा किया और लोगों को आन्दोलन का महत्व समझाया। १८ अगस्त को महात्मा गाँधी शौकत अली के साथ मालाबार (केरल) आए। इस प्रकार असहयोग आन्दोलन खिलाफत के हथियार के रूप में शुरू किया गया था। अब तक इसका कांग्रेस से कोई सम्बन्ध नहीं था। ७-८ सितम्बर १९२० को कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में उसे ज्यों का त्यों स्वीकार कर लिया गया। इतना अवश्य है कि महात्मा गाँधी खिलाफत सम्मेलनों में पहले भी उपस्थित होते रहे थे, खिलाफत कमेटी को असहयोग का सुझाव भी उन्होंने ही दिया था। इससे स्पष्ट है- असहयोग कोई पृथक आन्दोलन नहीं था, खिलाफत से ही इसका उद्‌गम हुआ जो टर्की और खलीफा की सहयाता के लिए अपनाया गया हथियार था। पश्चात् कांग्रेस अधिवेशन में उसे यथावत् स्वीकारने से स्वराज्य का उद्देश्य भी साथ जुड़ गया ताकि उसमें हिन्दुओं के सहभाग का मार्ग खुल जाए।

इस पर भी महात्मा गाँधी और अली बन्धुओं के स्वरों में विरोधाभास अनुभव किया ही गया। **'मार्डन रिव्यू'** ने लिखा था- **'एक के लिए तो दूर बसे टर्की में खिलाफत की दयनीय दशा ही केंद्र बिन्दु है, जबकि दूसरे की निगाहें हिन्दुस्तान के लिए स्वराज्य प्राप्ति पर टिकी है।'** इसका उत्तर महात्मा गाँधी ने २० अक्टूबर १९२० के यंग इण्डिया में दिया- **'हम दोनों के लिए खिलाफत केन्द्र बिन्दु है। मुहम्मद अली के लिए इसलिए कि यह उसका धर्म है, मेरे लिए इसलिए कि खिलाफत के हित में जान देकर मैं मुसलमानों के छुरे से गाय की सुरक्षा निश्चित करता हूँ। क्योंकि यह मेरा धर्म है।'** पर गाय की सुरक्षा पर महात्मा गाँधी कभी स्थिर नहीं रह पाए। स्वराज्य के पश्चात् पहली कलम से गोवध बन्दी का वचन देने वाले गाँधी ने १० दिसम्बर १९१९ को अपने यंग इण्डिया में लिखा- **'मेरा निवेदन है कि हिन्दुओं को यहाँ गोरक्षा का प्रश्न नहीं उठाना चाहिए। दोस्ती की कसौटी यह होती है कि मुसीबत पड़ने पर सहायता की जाए और वह भी बिना शर्त। किसी सहयोग में शर्त लगाई जाए वह मित्रता नहीं होती, इसके विपरीत यह तो व्यापारिक समझौता होता है।... बिना शर्त सहयोग करने का अर्थ ही है- गाय की रक्षा करना।'** स्पष्ट है हिन्दू-मुस्लिम एक्य के लिए महात्मा गाँधी कितने आतुर थे? कदाचित् यह आतुरता टर्की समर्थन के बहाने से सिद्ध हो जाती है।

अब प्रश्न उठता है कि खिलाफत या असहयोग आन्दोलन तो अंग्रेजों के विरूद्ध था, इसमें हिन्दुओं पर अत्याचार कैसे प्रवेश कर गया? इसको समझने के लिए पूर्व पीठिका को जानना आवश्यक है। इतिहास में इस काण्ड को मोपला विद्रोह, मालाबार विद्रोह और जमीदारी विद्रोह के नाम से भी जाना जाता है। हिन्द महासागर में केरल के तटवर्ती प्रदेश को मालाबार कहा जाता है। अरब के साथ भारत के व्यापारिक सम्बन्ध शताब्दियों नहीं, सहस्राब्दियों पुराने हैं। ८वीं-९वीं शताब्दी से कुछ अरब व्यापारी मालाबार में बसते और धर्मान्तरण भी करते रहे। उन्हीं के वंशज मोपला मुसलमान कहलाए। हिन्दू जमींदारों की भूमि पर मोपले पट्टेदारी के रूप में कृषि कार्य करते थे। जमींदारों के साथ एक शताब्दी पूर्व से इनकी शिकायतें चली आ रही थीं, जैसा जमींदार और मजदूरों में प्राय: होता है। वैर पहले से ही था, खिलाफत आन्दोलन के बहाने उसे निकालने का अवसर हाथ आ गया। खिलाफत और असहयोग का गड्ड-मड्ड आप पढ़ चुके हैं। हिन्दू जो भी कांग्रेस/असहयोग के पक्षधर नहीं थे वे सहज ही निशाने पर आ गए। गाँधीजी की खिलाफत भक्ति से मुसलमानों को पक्का निश्चय हो गया था कि कांग्रेस की गाड़ी को मुसलमान ही खींच

रहे हैं। मालाबार में खिलाफत आन्दोलन के नेता अली मुदालियार को गिरफ्तार करने हेतु सेना ने जब मस्जिद पर छापा मारा तो विप्लव भड़क गया। परिणाम- मोपलों ने मालाबार में दो महीनों तक अंग्रेज सत्ता का पत्ता काटकर उड़ा दिया। अक्टूबर १९२१ में अंग्रेजों ने विद्रोह दबाने के लिए शक्तिशाली सेना भेजी। मोपले चारों ओर से घिर गए। जब सेना पर उनका वश न चला तो पूरे बल से हिन्दुओं पर टूट पड़े।

१९२० से १९४० तक महात्मा गाँधी के हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापन के प्रयासों और उसके परिणामों का बाबा अम्बेडकर ने विस्तृत मूल्यांकन किया है जिसकी प्रामाणिकता के विषय में आपके शब्द हैं- इन सबका शानदार वर्णन हिन्दुस्तानी मामलों के बारे में दी गई उन वार्षिक रिपोर्टों से मिलता है जो 'पुराने सरकार अधिनियम' के अन्तर्गत हिन्दुस्तान की सरकार ब्रिटिश पार्लियामेंट में प्रतिवर्ष प्रस्तुत करती थी।नीचे मैंने जो तथ्य दिए हैं उन्हीं रिपोर्टों से लिए हैं। ये रिपोर्ट १९२० में भारतीय सीरीज नाम से जानी जाती है और इसी प्रकार आगे की सीरीज। मोपला काण्ड से सम्बन्ध अंश को यहाँ बाबा साहब के शब्दों में ही प्रस्तुत करता हूँ-

''१९२० से शुरू इन रिपोर्टों के अनुसार उस वर्ष मालाबार में होने वाले मोपला विद्रोह दो मुस्लिम संगठनों 'खुद्दम-ए-काबा' और 'केन्द्रीय खिलाफत समिति' के कारण शुरू हुए। दरअसल आन्दोलनकारियों ने इस सिद्धान्त का प्रचार किया कि ब्रिटिश सरकार के अन्तर्गत हिन्दुस्तान दारूल हरब था और मुसलमानों को इसके विरुद्ध अवश्य लड़ाई लड़नी चाहिए और यदि वे ऐसा नहीं कर सकते तो उनके समक्ष एकमात्र विकल्प हिजरत का सिद्धान्त रह जाता है। मोपला लोग अचानक इस आन्दोलन से मानो आभूत हो गए। मूल रूप से यह ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध एक विद्रोह था। इसका उद्देश्य ब्रिटिश साम्राज्य का तख्ता पलटकर इस्लामिक राज्य की स्थापना करना था। छुप–छुप कर चाकू-छुरे और भाले बनाए गए। ब्रिटिश सत्ता पर हमला करने के लिए दुस्साहसी लोगों के दल बनाए गए। पीरूनागण्डी में २० अगस्त को मोपलाओं और ब्रिटिश सैनिकों के बीच भयंकर झड़पें हुईं। मार्ग में तरह-तरह के अवरोध खड़े किए गए और कई जगह रेल और संचार सेवाएँ ठप्प कर दी गई। नष्ट कर दी गई। प्रशासन अस्त-व्यस्त होते ही मोपलाओं ने स्वराज्य स्थापित होने की घोषणा कर दी। अली मुदालियार नामक व्यक्ति की ताजपोशी भी कर दी। खिलाफत के झण्डे फहराए गए और 'इरनाडू' तथा 'वालूराना' को खिलाफत सल्तनतें घोषित कर दी गईं। ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध तो विद्रोह ठीक समझ में आता है, परन्तु मोपलाओं का मालाबार के हिन्दुओं के साथ व्यवहार दिमाग खराब कर देने वाला था। हिन्दुओं को मोपलाओं के हाथों भयंकर विपत्ति- कत्लेआम, धर्म परिवर्तन, मन्दिरों का भ्रष्ट किया जाना, स्त्रियों पर भीषण अत्याचार जैसे गर्भवती महिलाओं के पेट चीर देना, लूटमार, आगजनी जैसी भीषण विपत्ति और तबाही का सामना करना पड़ा। संक्षेप में वहाँ मोपलाओं की बर्बरता का बेलगाम नंगा नाच हुआ और उस दुर्गम इलाके में शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से सेना के शीघ्रातिशीघ्र पहुँचने तक मोपलाओं ने हिन्दुओं पर बेइन्तहाँ जुल्म जारी रखें। यह महज एक हिन्दू–मुस्लिम दंगा नहीं था अपितु नियोजित और सोद्देश्य हिंसा थी जिसमें अनगिनत हिन्दू मारे गए, जख्मी हुए और उनका धर्म परिवर्तन हुआ। हिन्दुओं की ठीक संख्या का पता ही नहीं परन्तु यह संख्या बहुत अधिक है।''

कम्युनिष्ट इतिहासकारों ने इसे जागीरदारी विद्रोह कह कर और अंग्रेजों के विरुद्ध होने से स्वातंत्र्य समर भी माना है। इसकी सच्चाई परखना भी आवश्यक है। इतिहासकार स्टेफेन फ्रेडरिक डेल ने लिखा- यूरोपियों और हिन्दुओं से लड़ते हुए जिहाद की प्रकृति तो मोपला मुस्लिमों में काफी पहले से थी। आर्थिक स्थिति से इस नरसंहार का कोई लेना-देना नहीं था। देश में कई आन्दोलन हुए ऐसे (आर्थिक) आन्दोलन में धर्मान्तरण का क्या काम? दीवान बहादुर गोपाल नायर जो अंग्रेज काल में वहाँ के डिप्टी कलेक्टर थे, को मोपला काण्ड में प्राथमिक स्रोत माना जा सकता है, ने लिखा- **गर्भवती महिलाओं के शरीर को टुकड़ों में काटकर सड़क पर फेंक दिए गए थे। कई अमीर हिन्दू भी भीख माँगने को मजबूर हो गए थे। जिन हिन्दू परिवारों ने अपनी बहन-बेटियों को पाल–पोस कर बड़ा किया था उनके सामने ही उनका जबरन धर्मान्तरण कर मुस्लिमों से निकाह कर दिया।**

फिर भी यदि यह स्वातन्त्र्य समर था तो प्रश्न है कि मन्दिर क्यों ध्वस्त किए गए? महिलाओं का क्या गुनाह था? हिन्दुओं को अपने धराधाम से पलायन क्यों करना पड़ा? सब विद्रोही मुसलमान ही क्यों थे?

गाँधीजी ने कई बार तर्क दिए कि यह आन्दोलन न्याय संगत है और इसमें शामिल होना उनका कर्तव्य है। यंग इण्डिया १९२० में उन्होंने लिखा ,का एक अंश- ''एक हिन्दुस्तानी होने के नाते अपने साथी हिन्दुस्तानियों के कष्टों और दु:खों में भाग लेना मेरा कर्तव्य है... हिन्दुओं को मुसलमानों का साथ किस सीमा तक देना चाहिए यह बात अपनी भावनाओं और अपनी राय की होती है। एक न्यायपूर्ण कार्य के लिए तो यह उपयुक्त है कि **हम मुस्लिम भाइयों के खातिर अधिकतम कष्ट उठाएँ जब तक उनके द्वारा अपनाए गए उपाय शुद्ध होंगे। मैं मुसलमानों की भावनाओं पर नियन्त्रण नहीं कर सकता, मैं तो उनके उस वक्तव्य को स्वीकार कर लेता हूँ कि खिलाफत उनके लिए इस दृष्टि से धार्मिक प्रश्न है कि वे अपनी जान पर खेलकर भी उस लक्ष्य पर पहुँचने की कोशिश करेंगे।''** गाँधीजी न तो आन्दोलन से कभी पृथक् हुए, न नृशंस अत्याचारों की निन्दा की इससे लगता तो यही है कि उनके नृशंस अत्याचारों को भी शुद्ध उपाय मानते रहे होंगे।

महात्माजी की विचार सरणी को और देखते चलिए- खिलाफत के कुछ भ्रष्ट नेताओं द्वारा मोपलाओं को इस मजहबी जंग के लिए बधाई दी। बधाई देने वाले खिलाफतवादियों की हरकतों को गाँधीजी ने अनदेखा कर दिया। मोपलाओं के बारे में उन्होंने कहा- **''मोपला भगवान से डरने वाले बहादुर लोग हैं और वे उस बात के लिए लड़ रहे हैं जिसे वे धार्मिक समझते हैं और वे उस तरीके से लड़ रहे हैं जिसे वे धार्मिक समझते हैं।''** अत्याचारों पर मुसलमानों की चुप्पी के बारे में महात्माजी ने कहा- ''हिन्दुओं में इतना साहस और आस्था होनी चाहिए कि धर्मान्धों द्वारा की जाने वाली इन गड़बड़ियों के बावजूद वे अपने धर्म की रक्षा कर सकें। मोपलाओं के पागलपन की मुसलमानों द्वारा निन्दा को दोस्ती की कसौटी नहीं माना जा सकता। मोपला लोगों द्वारा किये गये जबरन धर्म परिवर्तन और लूटपाट के बारे में मुसलमानों को स्वयं शर्मिन्दगी होनी चाहिए और उन्हें चुप रहते हुए ऐसे प्रभावकारी ढंग से प्रयास करना चाहिए कि उनमें से अधिकतम धर्मान्ध व्यक्तियों के लिए ऐसे काम करने असम्भव हो जाएँ। मेरा यह विश्वास है कि हिन्दुओं ने मोपला लोगों के पागलपन का बड़े धैर्य से सामना किया है और सुसंस्कृत मुसलमान ईमानदारी से इस बात के लिए दु:खी हैं कि मोपला लोगों ने हजरत की शिक्षाओं को गलत समझा है।'' ■ **(क्रमशः आगामी अंक में)**

राजनैतिक विश्लेषण

समान नागरिक संहिता बनाम जन-जन की आवाज

● डॉ. श्वेतकेतु शर्मा 'आयुर्वेद शिरोमणि'
पूर्व सदस्य : हिन्दी सलाहकार समिति, भारत सरकार
१०/१२, केला बाग, सावित्री सदन, बरेली (उ.प्र.)
चलभाष : ७९०६१ ७८९१५

समान नागरिक संहिता यानी यूनिफॉर्म सिविल कोड का अर्थ है कि भारत में रहने वाले हर नागरिक के लिए एक समान कानून होना चाहिए चाहे वह किसी भी धर्म या जाति का क्यों न हो। समान नागरिक संहिता में शादी, तलाक और जमीन–जायदाद के बँटवारे में सभी धर्मों के लिए एक ही कानून लागू होना चाहिए।

यह किसी भी पंथ जाति के सभी निजी कानूनों से ऊपर है न ही इसे धर्मनिरपेक्षता से जोड़ना चाहिए क्योंकि धर्मनिरपेक्षता का भाव है कि ईश्वर उपासना श्रद्धा भक्ति के करने का विधि–विधान मत–मतातान्तरों के भिन्न हो सकते हैं उन उपासना पद्धति को करने में प्रत्येक धर्म समुदाय स्वतंत्र है परन्तु यदि सभी धर्मो में शादी, तलाक, जमीन जायदाद, शिक्षा–दीक्षा, सामाजिक व राजकीय संस्थाओं में समान वेष–भूषा, सार्वजनिक स्थानों पर धार्मिक स्थल का निर्माण व पूजा नमाज आदि करना ,आदि के लिए समान नागरिक संहिता की आवश्यकता है यदि यह कहा जाये कि हिंदू, सिख, जैन और बौद्ध धर्म के अनुयायियों को सनातन धर्म की विचारधारा के अनुसार माना जाता है जिसके कारण इनके लिए एक समान कानून है जिसमे इनका एक से ज्यादा शादी करना गैर कानूनी माना गया है व मुसलमानों के लिए कानून उनकी धार्मिक किताब शरीयत पर आधारित है जिसके अनुसार उनका ३ शादियाँ करना जायज है, ऐसे विवादित पहलुओं को सामाजिक परिवेश के अनुसार समान संहिता की आवश्यकता है।

समान नागरिक संहिता भारत में रहने वाले सभी नागरिकों के लिए एक समान कानून है, फिर चाहे वह किसी भी जाति,धर्म, समुदाय से संबंधित हो,समान नागरिक सहिंता में शादी, तलाक और जमीन जायदाद के हिस्से में सभी धर्मों के लिए केवल एक ही कानून लागू किया जाएगा।

समान नागरिक संहिता का अर्थ एक ऐसे कानून से है जो धर्मनिरपेक्ष हो, जो किसी भी जाति या धर्म से ऊपर उठकर एक देश के सभी नागरिकों के लिए समान हो। इसको सभी जाति मज़हब के लिए समान होने के कारण उसे धर्म निरपेक्ष कानून भी कहा जा सकता है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद ४४ समान नागरिक संहिता को लागू करने की जिम्मेदारी राज्य की मानता है लेकिन समान नागरिक संहिता लागू होने से सभी धर्मों के पर्सनल लॉ बोर्ड समाप्त हो जाएंगे और सभी नागरिकों के लिए एक समान कानून बनाए जा सकेंगे और साथ में सभी के लिए अलग–अलग अदालतों की जरूरत भी नहीं पड़ेगी ,शरीयत के अनुसार मुस्लिम कुछ भी नही कर पाएंगे जैसे मुस्लिमों का ३–४ शादियाँ करना बंद हो जायेगा और तलाक लेने के लिए भी उनको कोर्ट के जरिए जाना होगा। वे शरीयत के अनुसार अपने परिवार को जायदाद का बँटवारा नही कर सकेंगे।

समान नागरिक संहिता लागू होने के बाद शादी, तलाक, दहेज, उत्तराधिकार के मामलों में हिंदू, मुसलमान और ईसाइयों पर एक समान कानून ही लागू होगा। न्यायपालिका पर दबाव कम होगा और धर्म के कारण वर्षों से पड़े केस जल्दी से सुलझा लिए जायेंगे। और कोई भी आसानी से धर्म के आधार पर राजनीति नहीं कर पाएगा। समान नागरिक संहिता लागू होने के बाद देश में महिलाओं की स्थिति में सुधार आएगा मुस्लिम में तीन शादियाँ करने का रिवाज टूटेगा और तीन बार तलाक कहने से शादी खत्म नहीं होगी।

संविधान के नीति निर्देशक तत्व के अधीन अनुच्छेद ४४ इसकी दास्तां और प्रधानता को बल देने के लिए काफी है। अनुच्छेद के तहत राज्यों को उचित समय पर सभी धर्मों के लिए समान नागरिक कानून बनाने की खुली वकालत जगजाहिर है। जब संविधान में साफ़ तौर पर इसका ज़िक्र किया गया है तो फिर इसे लागू करने में क्या अड़चन है? एक तरफ जहाँ संविधान की प्रस्तावना में पंथनिरपेक्षता पर जोर दिया गया है तो दूसरी तरफ समान नागरिक संहिता का जिक्र कहीं न कहीं धर्मनिरपेक्षता की कड़ी को साधने का एक महत्वपूर्ण आयाम माना जा सकता है।

जब देश में बाकी पहलुओं के लिए एक समान कानून का पालन किया जाता है तो फिर सभी नागरिकों के लिए व्यक्तिगत कानून एक क्यों नहीं? यह सवाल न सिर्फ मन को कचोटता है और आज देश के जन–जन की आवाज भी है बल्कि भारत के संविधान पर भी प्रश्नचिह्न खड़ा करता है। हालांकि कहीं न कहीं संविधान में भी विरोधाभास का स्वर साफ झलकता है। एक तरफ जहां अनुच्छेद ४४ राज्यों को समान नागरिक संहिता की दिशा में कदम बढ़ाने को कहता है तो वहीं दूसरी तरफ अनुच्छेद ३७ इसको लागू करने के लिए न्यायालय को अधिकार देने से वंचित करता है। इसका साफ मतलब है कि अगर सरकार इस दिशा में आगे कदम नहीं बढ़ाती है तो न्यायालय का दरवाज़ा खटखटाने का कोई भी विकल्प मौजूद नहीं रह जाता है। इतना ही नहीं व्यक्तिगत कानूनों को संघ सूची के बदले समवर्ती सूची में रखने के कारण क्या थे? इसी अंतर्विरोध की वजह से कई सारे पहलुओं पर अभी तक यह विवादास्पद कानून विचाराधीन है।

समय-समय पर न्यायालय ने भी समान नागरिक संहिता की वकालत करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालय के निर्णयों और टिप्पणियों ने सार्वजानिक पटल पर हमेशा से सुर्खियाँ बटोरी है। हाल ही में दिल्ली उच्च न्यायालय के द्वारा समान नागरिक संहिता पर की गई टिप्पणी भी महत्वपूर्ण है। १९८५ में सर्वोच्च न्यायालय ने मोहम्मद अहमद खान बनाम शाहबानो बेगम केस में संसद को सीधे

तौर पर समान नागरिक संहिता स्थापित करने के लिए निर्देशित किया था। इसी प्रकरण में राजीव गांधी सरकार के द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के फ़ैसले को बदलने के लिए संसद में अध्यादेश लाया गया था। जॉर्डन डिएंगडेह बनाम एस.एस. चोपड़ा केस, सरला मुद्गल बनाम एसोसिएशन ऑफ इंडिया केस और ऐसे ही न जाने कितने मामलों में समान व्यक्तिगत कानून नहीं होने की वजह से काफी खामियाजा उठाना पड़ा। न्यायालय को भी इसमें दखल देना पड़ा और समान नागरिक संहिता की दिशा में सख्त कदम बढ़ाने के लिए कहा गया।

इसके विपरीत महत्वपूर्ण बात यह है कि भारत को छोड़कर दूसरे देशों में मुस्लिम पर्सनल लॉ में काफी सुधार हुए है। मुस्लिम बहुल देशों की बात करें तो बहुविवाह और तीन तलाक जैसी लैंगिक असमानता वाली प्रथाओं को भी समाप्त कर दिया गया है। ट्यूनीशिया, तुर्की, पाकिस्तान, बांग्लादेश, इंडोनेशिया, इराक, सोमालिया, सीरिया, मिस्र, मोरक्को, ईरान जैसे देशों में एक से अधिक पति-पत्नी होने के कृत्य को पूरी तरह से प्रतिबंधित किया गया है।

विचारणीय है जब इन देशों में मुस्लिम पर्सनल लॉ में सुधार हो सकते है तो ऐसे कौन से कारण व्याप्त रहें होंगे कि १९३० के दौर में बना मुस्लिम पर्सनल लॉ अभी तक लोगों पर थोपा जा रहा है? क्या धर्म और मज़हब सियासत की धारा में इतना बह चुका है कि यह विभिन्न राष्ट्रों में अपनी सहुलियत के अनुसार परिवर्तित होते चला आ रहा है? यह कई सारे सवाल है जिसका जवाब आजाद हिंदुस्तान के ७५ साल के बाद भी नहीं मिल पाया है। इसे दुर्भाग्य कहें या राजनीतिक मंशा, इसे विडंबना का नाम दें या फिर महज़ इत्तेफ़ाक। कारण जो भी हो, आखिरकार इसका खामियाजा जनता को उठाना पड़ रहा है। राजनैतिक लाभ के लिए बीते ७५ सालों से राजनीतिक दल इसको हथियार बना कर राज कर रहे है समान नागरिक संहिता विवाह, विरासत और उत्तराधिकार समेत विभिन्न मुद्दों से संबंधित जटिल कानूनों को सरल बनाएगी। परिणामस्वरूप समान नागरिक कानून सभी नागरिकों पर लागू होंगे, चाहे वे किसी भी धर्म में विश्वास रखते हों तथा धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को भी बल मिलेगा क्योंकि भारतीय संविधान की प्रस्तावना में 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द सन्निहित है और एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य को धार्मिक प्रथाओं के आधार पर विभेदित नियमों के बजाय सभी नागरिकों के लिये एक समान कानून बनाना चाहिये। ■

जन्मदिवस के उपलक्ष्य पर विशेष

ख्यात नाम जयसिंहजी का

जयसिंहजी का नाम अमर हो, पालड़ी वालों का।
धूम मचाई जोधपुर से हरिद्वार, व्हाया अजमेर जयपुर जाने का।
चहुँ दिशा में आर्य समाजी बनकर, कार्य करे दयानन्द का,
मधुर वाणी, मन्द मुस्कान बिखेरे अमृत तुल्य तेज का।
करे सहाय, तन मन धन से बनकर दानी अति मान का,
मन वचन कर्म किये जाय, तनिक ना जाने हृदय शूल का।
स्वस्ति पन्था न्यास भागल भीम का, उद्धार करे मन वचन कर्म करके,
वेद ज्ञान विज्ञान शोध करने आचार्य अग्निव्रत का सहयोगी बन करके।
आचार्य ओमजी संग हुए दान श्रेष्ठी, धर्मानन्द जी का प्रिय बनकर,
विद्या दान करे, गौशाला का मान बढ़ावे, आबू पर्वत जाकर।
स्मृति भवन जोधपुर की शान बढ़ावे रोकड़िया बनकर,
विदेश की सभाओं मॉरीशस, म्यांमार में उपस्थित हुए प्रेमी बनकर।
स्वामी रामदेव का करे कार्य पतंजलि भण्डार भरकर,
यशदेव, बालकृष्णजी का मान बढ़ावे, कोरोना का इलाज चलाकर।
जुगल जोड़ी प्रवीण-राकेश पुत्र रत्न सौभाग्यशाली,
पत्थर उद्योग में लाये क्रान्ति बनकर वैभवशाली।
स्वागत है आज आपका, परोपकारिणी सभा के ट्रस्टी बनकर,
हम हैं सौभाग्यशाली, आपका अनन्त स्नेह नेतृत्व पाकर।
प्रधान किशनजी आर्य सभा राजस्थान के संग,
करे अतुल्य सेवा रोकड़िया बनकर।
पंचायत समिति केरू के भी उप प्रधान की अमूल्य सेवा देकर,
गाँव-गाँव किसानों को राहत दिलावे परोपकारी बनकर।
ऐसे बलवान अनोखे, महापुरुष को शक्ति दे भगवन,
महर्षि दयानन्द का अधूरा कार्य,
पूरा करे दीनदयालु बनकर।

● **ले. नरसिंह सोलंकी**
प्रधान आर्य समाज, सूरसागर, जोधपुर (राज.)
चलभाष : ९४१३२८८९७९

गुरुकुल प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर में संस्कृत भाषा, पाणिनीय व्याकरण, वैदिक दर्शन, उपनिषदादि के अध्ययन हेतु प्रवेश आरम्भ किये गये हैं। इन्हें पढ़कर वैदिक विद्वान्, उपदेशक, प्रचारक बन सकते हैं। कम से कम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण १६ वर्ष से बड़े युवकों को प्रवेश मिल सकता है। प्रवेशार्थी को पहले तीन माह का अस्थायी प्रवेश दिया जाएगा। इस काल में अध्ययन व अनुशासन में सन्तोषजनक स्थिति वाले युवकों को ही स्थायी प्रवेश दिया जाएगा। सम्पूर्ण व्यवस्था नि:शुल्क है। गुरुकुल में अध्ययन के काल में किसी भी बाहर की परीक्षा को नहीं दिलवाया जाएगा, न ही उसकी अनुमति रहेगी। प्रवेश व अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

चलभाष : ७०१४४४७०४०

समय : अपराह्न ३:३० से ४:३० बजे तक

रामचरित मानस : एक विवेचन

● **मोहनलाल दशौरा 'आर्य'**
नारायणगढ़, जनपद : मन्दसौर (म.प्र.)
चलभाष : ९५७५७९८४१२

कुछ अवैज्ञानिक सृष्टिक्रम विरुद्ध बातें जो कवि, लेखक व साहित्यकार की अतिशयोक्ति भूल कही जा सकती है। परन्तु हमने अपने चिन्तन में सही कर मानना चाहिये। तुलसी महाकवि ने कई जगह ऐसी भूल की है।

१. हनुमान को कपिश कहकर पूँछ लगाई।
२. मशक समान रूप कपि धारा। किया नगर प्रवेश प्रसारा।।
३. बाल समय रवि भक्ष लियो। तीनों लोक भयो अंधियारो।।
युग सहस्र परेजन पर भानु। लिन्हो ताहि मधुर फल जानू।।
४. जस जस सुरसा बदन बढ़ाया। तासु दुगुन कपि किन्ह विस्तारा।।
५. हनुमान ने पूँछ इतनी लम्बी कर ली कि लंका नगर के घी, तेल, कपड़े कम पड़ गए।
६. ब्राह्मणों के पक्ष में- तेली कुम्हार, किरात, कोल, कलवारा आदि की निंदा की।
७. पूजिये विप्र ज्ञान गुण हीना। अधम जाति में विद्या पाये।
शूद्र न गुण ज्ञान प्रवीणा। भयहु यथा अहि दूध पिलाये।।
८. नारि अवगुण खानि ढोल गंवार शूद्र पशु नारि।
जिमिस्वतन्त्र होत बिगरहि नारि। सकल कपट अवगुन खानि।।
(८ अवगुण बताए)

ऐसी कुछ असत्य बातें लिखकर महाकवि कहे जाने वाले मानसकार ने न केवल अपना कद घटा लिया अपितु रामचरित की सत्यता पर भी प्रश्नचिह्न लगा दिया। तभी तो रामचरित मानस जो जन-जन का प्रिय ग्रन्थ कहा जाता है, उसका अपमान-आलोचना होती है। संसद में प्रतियाँ फाड़ी जाती हैं।

जो लोग अल्पशिक्षित सीधे, भोले व श्रद्धालु भावना रखते हैं। राम को अवतार मानकर पूजते हैं, वे सत्य मानते। रामलीलाएँ करते व देखते हैं व रामचरित मानस का पूर्ण आस्था से पठन-पारायण करते हैं। ईश्वर व धर्म है ही आस्था व श्रद्धा का रूप। परन्तु असत्य व अन्धश्रद्धा भी तो हितकर नहीं हो सकती।

स्पष्टीकरण

१. हनुमान, बाली, सुग्रीव, अंगद, नल, नील आदि वानर जाति के थे, बन्दर नहीं। उनकी पूछ थी, पूँछ नहीं। क्योंकि वानर जाति में महिलाओं को कभी पूँछ सहित नहीं बताया गया। बाली, सुग्रीव, रावण, जनक, दशरथ तत्कालीन चक्रवर्ती सम्राट थे। बाली व रावण अपने अहं व दुर्गुणों के कारण मारे गए। हनुमान आजन्म ब्रह्मचारी, योद्धा, कुशल विद्वान् सलाहकार, सेवक, मन्त्री थे। उनकी इसी कारण पूछ (सम्मान, इज्जत) थी।

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना। लंकेश्वर भये सब जग जाना।
तुम उपकार सुग्रीवहि किन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा।।

इस प्रकार नि:स्वार्थ भाव से शौर्य व बुद्धिमत्तापूर्वक सेवा के कारण राम के तुम मम प्रिय भरत सम भाई और

अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता। अदावर दीन्ह जानकी माता।।

इस कारण उनकी बखत (पूछ) थी न कि पूँछ लंगूर।

२. मशक समान रूप कपि धारा। तो सीता को दी जाने वाली राम की अंगूठी कहाँ रखी? अत: कवि का आशय था छद्म रूप कपिधारा लिखना था जो चूक हो गई।

३. रवि भक्ष लियो भी अवैज्ञानिक व सृष्टिक्रम विरुद्ध है क्योंकि पंचतत्व शरीरधारी कोई भी ऐसा कर नहीं सकता।

केवल परमेश्वर प्रभु एक हैं, करिये उसका ध्यान।
सारी सृष्टि में बसा, सब कुछ उसमें जान।।

सूरज रवि भानु उसी से ज्योतिर्मय आग का पिण्ड है।

४. सुरसा व हनुमान का मुँह व बदन इतना योजन विशाल होना अवैज्ञानिक बात है। अतिशयोक्ति की भी टाँग तोड़ दी है।

५. पूँछ की जगह कमर में रस्सी बाँधकर आग लगाई है।

६-७. जहाँ तुलसी कवि वर्ण व्यवस्था की प्रशंसा करते लिखते हैं। निशाद, गुह, केवट, भीलनी को राम से मिलकर झूठे बेर खिलाते, वानर आदिवासी जाति से दोस्ती कर सहयोग लेते एहसान मानते वहाँ ऐसी वर्ण भेद की पाखण्ड पूर्ण बात लिखना क्या महाकवि को शोभा देता है?

ब्राह्मण ज्ञानहीन, गुणहीन होगा तो कौन पूजेगा व शूद्र विद्वान् और गुणवान् होगा तो आदर क्यों न पावेगा? जबकि कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। लिखकर कर्म से वर्ण व्यवस्था है फिर जन्म से ब्राह्मण व शूद्र को इतना पक्षपात पूर्ण क्यों लिखा? कवि की संकीर्ण मानसिकता दृष्टिगोचर होती है।

८. नारी को अपवित्र व अवगुणों की खान बताकर महाकवि ने समस्त नारी जाति का अपमान किया है जबकि उनकी माँ भी एक नारी थी। भला माँ को अवगुण खान कहने वाला विद्वान् बुद्धिमान कैसे हो सकता है। और तो और स्वयं एक परित्यक्त अनाथ रामबोला तुलसी एक महिला के कारण विद्वान् महाकवि बना। यह क्यों भूल गये तुलसी उनकी पत्नी स्वयं एक विदुषी, शिक्षित महिला थी। जिसके मोह में ग्रसित तुलसी रात अन्धेरे बाढ़ भरी नदी पार कर ससुराल पत्नी के पास चोर रास्ते से घुस गये थे तो पत्नी रत्नावली ने उन्हें इन शब्दों से फटकारा था-

लाज न लागत आपको दौड़े आये रात।
धिकधिक ऐसे प्रेम को, कहा कहूँ मैं नाथ।।
अस्थी चर्म मय देह मैं तामे ऐसी प्रीति।
ऐसी जो श्रीराम होती तो न भवभीति।।

इसी फटकार से रामबोला तुलसी को वैराग्य हो गया। वह काशी पहुँचकर विद्वान् बने। रामकथा सुनी, पढ़ी व रामचरित मानस, कवितावली, दोहावली, हनुमान बाहुक, चालीसा, गीतावली आदि लिखकर महाकवि तुलसीदास बन गये।

इन कमियों के कारण तुलसीकी रामचरित मानस भले ही जन-जन और घर-घर में प्रचलित आस्था का महाकाव्य हो गया। परन्तु बुद्धिजीवी वर्ग चिन्तन कर पढ़ें, समझें, सोचें तो इन अपवादों (अविश्वसनीय असत्य) को छोड़कर अध्ययन करेंगे तो बहुत कुछ लाभ-प्रद, शिक्षा-प्रद पारिवारिक, सामाजिक व राजनीतिक आदर्श प्रसंग भी हमको मिलेंगे जो हमारे जीवन को संस्कारित परिमार्जित करने की प्रेरणा देंगे।

कुछ प्रेरणादायक लाभकारी प्रसंग

१. त्रेतायुग में यज्ञ परम्परा। राजा दशरथ द्वारा पुत्रेष्टि यज्ञ।
२. गुरुकुल शिक्षा सबके लिए समान। गुरु वशिष्ठ।
३. विवाह में स्वयंवर प्रथा। विधिवत् विवाह।
४. सीता–राम का आदर्श मिलन। मर्यादामय मिलन।
५. रघुकुल रीति–प्राण जाई पर वचन न जाई। सन्ध्या करन गये दोऊ भाई।
६. आय सु पाई करहि सब काजा। त्यागपूर्ण जीवन।
७. प्रात:काल उठि रघुनाथा। मात–पिता–गुरु नावहि माथा।।
८. माता–पिता, भाई–भाई, पिता–पुत्र, सास–बहू, देवर–भाभी, राजा–सेवक, राजा–प्रजा सबका मर्यादापूर्ण सद्व्यवहार शिक्षाप्रद।
९. अनुसुइया ने सीता को दिया स्त्री धर्म उपदेश।
१०. शूर्पणखा सुन्दरी का प्रणय प्रस्ताव ठुकराना राम व लक्ष्मण का धर्म।
११. मारीच, जटायु, हनुमान, अंगद, मन्दोदरी, विभीषण व स्वयं रावण के नाना की नेक सलाह न मानने का परिणाम सर्वनाश।
१२. सीता का रावण के दबाव व प्रलोभन में न आना। चरित्र यस्य नारि यन्तु पुज्यते रमन्ते तत्र देवता।
१३. हनुमान की नि:स्वार्थ स्वामी भक्ति व विद्या, बुद्धि, शील स्वभाव।
१४. रावण पराक्रमी, वीर, साहसी, विद्वान्, वेदों का ज्ञाता, तत्कालीन लंका द्वीप का चक्रवर्ती सिद्ध सम्राट, परन्तु अभिमान, हठ व दुर्व्यसन दुर्गुणों के कारण सर्वनाश।
१५. वरणाश्रम निज निज धरम पालत रहत सब लोग।
नेमव्रत सब पालहि नहि भय दोष न रोग।।

आदि अनेक विशेषताओं राज धर्म, प्रजा धर्म, गृहस्थ धर्म, नारी धर्म, यज्ञ, सन्ध्या, संस्कारों की महत्ता दर्शाने के कारण महाकवि तुलसी का यह महाकाव्य 'रामचरित मानस' (ऊपर दर्शाये अपवादों को छोड़ दें तो) एक आदर्श शिक्षाप्रद प्रेरणा देने वाला, चरित्र प्रधान ग्रन्थ है। **'सार–सार को गहि लये थोथा देय उड़ाय'** वाला सूप सुजान बन कर लाभ लें तो उत्तम। ■

प्यारे आर्य वीरों

वीर वह है जो वीर्यवान हो, बिना वीर्य के बल प्राप्त नहीं होता। संसार सदा वीर लालों के पाँव चूमता है और उनका आदर–सत्कार और पूजा करता है। वर्तमान काल में प्राय: देखा जा रहा है कि भूख से विधवाएँ अनाथ बिलबिला रहे हैं। माता–पिता इस पेट के लिए अपने बच्चों तक को बेच डालते हैं और ऐसी बातें सुनने में आती हैं कि माता–पिता ने अपनी भड़कती हुई आग बुझाने के लिए अपने बच्चों तक को भून कर खाया है। और वर्तमान मातृशक्ति का इतना अपमान किया जा रहा है। जो उसे प्रकट करे हृदय काँप उठता है। नवयुवकों को देखें तो विषय विकार, भोग–विलास का ग्रास बने हुए हैं। उन्हें ईश्वर का जरा भी विचार नहीं है।

जरा विचार कीजिये कि वह नवयुवक कितना मन्दभागी है जिसकी माता दु:ख से तड़प–तड़प कर जान दे रही है। वह नवयुवक अपनी रंगरेलियाँ मना रहा है।

वीरों, मातृशक्ति वास्तव में संकट में है। वह बिलख–बिलख कर तुम्हारी ओर देख रही है और पुकार कर कह रही है कि वीरों, दु:खी अवस्था को देखो। मैं कहाँ–कहाँ पहुँचा हूँ। मेरे वह भी बच्चे थे जिन्होंने मुझ पर विषय विकारों की कभी भी आँच तक न आने दी थी। मेरी आन–बान–शान को जीवित रखा था। परंतु आज मैं अभागिन मृत्यु के निकट हूँ और तुम विषय विकारों में मस्त हो।

● देवकुमार प्रसाद आर्य
भूतपूर्व प्रधान : आर्य समाज,
५०, फौजा बगान, वारीडीह, जमशेदपुर (झारखण्ड)
चलभाष : ८९६९५४२३३९

मूल रचनाकार : स्व. श्रीयुत मुंशी दरबारीलाल 'कविरत्न'

हिन्दी की वर्ण मंजु मञ्जरी

गतांक पृष्ठ २४ से आगे

संकलन एवं सम्पादन
● चौ. बदनसिंह 'पूर्व विधायक'
१३/१०८, चारबाग, शाहगंज आगरा (उ.प्र.)
चलभाष : ९९२७४१६२००

व्यंजन वर्ण : (३१) 'ह'

सवैया: **हेतु हरी हरियालिहिम हरि हेरत हारि गई हरिप्यारी।**
हे हरि हर्षित हार गुहे हियरांहि हताश भईं ब्रजनारी।।
हाय हमें हरषाइ हरावत हा हमरे हियरानि पजारी।
हे हरि हर्ष दिखाइ हरास हरौ दरबारि लाल हम हारी।।

अर्थ : 'ह' हिन्दी वर्णमाला का तैंतीसवाँ व्यंजन है जो उच्चारण के विचार से ऊष्म वर्ण कहलाता है। कृष्ण ने गोपिकाओं के निवास पर पहुँचने का वायदा कर दिया पर वे अधिक सर्दी पड़ने के कारण उनके यहाँ वायदानुसार नहीं पहुँच सके। गोपिकाएँ उसकी बाट देखते–देखते हारि गईं। दु:खी हो गईं। श्रीकृष्ण का आगमन सुनकर गोपिकाएँ अत्यन्त प्रसन्न हो रही थीं। पर उनके न पहुँचने पर उनकी प्रसन्नता दु:ख में बदल गई। जैसे सावन के पेड़–पौधे की हरियाली तुषार से नष्ट हो जाती है। वैसे ही श्रीकृष्ण के न पहुँचने पर वे निराश हो गईं, हार गईं। उनके आगमन के आश्वासन से वे बहुत प्रसन्न हो रही थीं पर जाड़े में जैसे पेड़–पौधे तुषार से कुम्हला जाते हैं वैसे ही कृष्ण के उनके यहाँ न पहुँचने से गोपिकाएँ दु:खी हो गईं। कृष्ण को सूचना देते हुए उन्होंने कहा कि हे हरि, आपके आगमन पर गले में पहनाने हमने सुन्दर सुगन्धित हार गूंथ रखे थे। आपके न आने से वे सब मुरझा रहे हैं और हम सब उनकी तरह ही मुरझाकर उदास हो गई हैं। फूलों की भाँति कुम्हला रही हैं। उन्हें खेद है कि आप हमें पहले प्रसन्नता प्रदान करते हैं और बाद में दु:ख देते हैं। आगमन सुनकर हर्षित होती हैं और न पहुँचने पर उनके हृदय अग्नि से जलने लगते हैं। वे दु:खी हो जाती हैं। कविरत्न दरबारी लाल अपने शब्दों द्वारा गोपियों की वेदना कृष्णजी से कहते हैं कि गोपिकाएँ आपसे हार मान गई हैं। अब आप उनकी निराशा मिटाकर उन्हें हर्षित करें। उनके घरों पर जाकर अपने दर्शनों से उन्हें प्रफुल्लित करें। कवि कृष्ण और गोपियों के वियोग को संयोग में परिवर्तित करने के पक्ष में है। यह छन्द द्वारिका छोड़ बृज में बसने की ओर संकेत की एक झलक देता है। कवि का कृष्ण से विनय प्रार्थना का रहस्य व्याप्त है। ■

बिहार राज्य स्तरीय सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा सितम्बर माह तक स्थगित

मान्यवर/ माननीया!

सादर नमस्ते, जैसा कि आपको विदित ही है कि बिहार राज्य के मधुबनी जिले के बेनीपट्टी प्रखण्ड के जरैल ग्राम में पिछले अट्ठाईस वर्षों से आर्ष गुरुकुल दयानन्द वाणी का संचालन किया जा रहा है। वर्तमान समय गुरुकुल के आचार्य पद पर अयोध्या गुरुकुल के स्नातक आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् डॉ. रविन्द्र कुमार जी शास्त्री अपनी सेवा प्रदान कर रहे हैं। गुरुकुल में इनके अलावा चार अन्य शिक्षकगण भी शिक्षण कार्य कर रहे हैं। प्राचीन शिक्षा के साथ–साथ बच्चों को आधुनिक शिक्षा भी दी जाती है। आपसे निवेदन है कि यदि आप अपने बच्चों को विद्वान् बनाना चाहते हैं साथ ही मातृ–पितृ भक्त और समाज भक्त के साथ–साथ देश भक्त भी बनाना चाहते हैं तो उन्हें इस गुरुकुल में अवश्य भेजने की कृपा करें। यह गुरुकुल निःशुल्क है। गुरुकुल का संचालन आप श्रेष्ठ महानुभावों के सहयोग से ही किया जाता है। गुरुकुल वासियों के भोजन, वस्त्र, पठन–पाठन की सामग्रियाँ, औषधि आदि के साथ गोशालाओं का खर्च भी आप द्वारा प्रदत्त दान से सम्पन्न किया जाता है।

गुरुकुल के तत्वावधान में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर बिहार राज्य के सभी जिलों के सभी प्रखण्डों में दिनांक २२ मार्च २०२३ से सत्य सनातन वैदिक धर्म प्रचार यात्रा का आयोजन प्रारम्भ किया गया। जो मधुबनी जिले के इक्कीस, सीतामढ़ी जिले के सत्रह, शिवहर जिले के पाँच, पूर्वी चम्पारण जिले के सत्ताईस, पश्चिमी चम्पारण जिले के अठारह एवं गोपालगंज जिले के चौदह प्रखण्डों में भ्रमण करते हुए यहाँ तक की यात्रा पूरी कर ली है। वर्षा के कारण यात्रा १५ सितम्बर तक के लिए रोकी (स्थगित) गई है। वर्षा के पश्चात् पुनः इसे प्रारम्भ किया जाएगा।

इस यात्रा क्रम में प्रत्येक जिले के जिला पदाधिकारी एवं पुलिस अधिक्षक, प्रत्येक अनुमण्डल के अनुमण्डल पदाधिकारी एवं अनुमण्डल पुलिस पदाधिकारी, प्रत्येक प्रखण्ड के प्रखण्ड विकास पदाधिकारी एवं अंचलाधिकारी, प्रत्येक थाना के थाना प्रभारी सहित कई अन्य अधिकारियों को भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी कृत अमरग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट की गई। साथ ही प्रखण्ड के किसी एक ग्राम में वेद प्रचार का कार्यक्रम किया गया। वहाँ भी इच्छुक व्यक्तियों को सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए गए। प्रखण्ड के किसी एक या दो विद्यालयों या ट्यूशन सेंटर में बच्चों के बीच चरित्र निर्माण सम्बन्धी कार्यक्रम किया गया वहाँ के प्रधानाध्यापकों को भी सत्यार्थ प्रकाश भेंट किया गया। ये सभी कार्य आप दानी महानुभावों के सात्विक सहयोग से ही किया गया। अभी तक छः जिलों में कुल ७५० सत्यार्थ प्रकाश भेंट किए जा चुके हैं जिसके चित्र प्रतिदिन वाट्सअप और फेस बुक के माध्यम से आप तक भेजे जाते रहे हैं तथा कुछ चित्र वैदिक संसार पत्रिका में समय–समय पर प्रकाशित किए गए है। इन सत्यार्थ प्रकाश में मेरे अनुज आचार्य श्री वेदश्रमी जी अटलाण्टा, अमेरिका से दो हजार सत्यार्थ प्रकाश हेतु सहयोग भेज चुके हैं। दिल्ली नांगलोई आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य जी के द्वारा ४५०, नांगलोई आर्य समाज के सदस्य श्री रामपाल सैनी जी के द्वारा ५०, आर्य समाज पूर्वी पंजाबी बाग के द्वारा ४० , जिला आर्य समाज शिवहर के प्रधान श्री श्रीराम जी आर्य के द्वारा 100 और जिला आर्य समाज मोतिहारी के द्वारा १०० सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त हो चुके हैं। आर्य समाज मोतिहारी के एक सदस्य से भी पाँच सत्यार्थ प्रकाश प्राप्त हुए। जिला मोतिहारी प्रखण्ड ढाका आर्य समाज के प्रधान श्री ओमप्रकाश जी आर्य ने अपने माता–पिता के नाम पर पाँच सौ सत्यार्थ प्रकाश भेंट करने का आश्वासन दिए हैं। चम्पारण जिला सभा के प्रधान श्री महंथप्रसाद आर्य जी भी एक सौ सत्यार्थ प्रकाश भेंट करने का आश्वासन दिए हैं।

उक्त सभी सेवा कार्य आप दानी महानुभावों के सात्विक सहयोग से ही पूरा होगा अतः सादर निवेदन है कि अपना सहयोग निम्न गुरुकुल खाता में भेजने की कृपा करें। ८८०९८५२१८७ पर फोन पे सुविधा है आप फोन पे पर भी सहयोग भेज सकते हैं। **दयानन्द जनकल्याण आश्रम एवं सूर्यकला लिलाकान्त स्मृति फाउण्डेशन** के खाते में दिया गया सहयोग १२–ए और ८०–जी के अन्तर्गत कर मुक्त है। **(चित्र देखें पृष्ठ २०–२१ पर)**

दयानन्द जन कल्याण आश्रम

अकाउंट नं. : ३४९५९५२५५६२ (IFSC : SBIN0006163)

सूर्यकला लिलाकान्त स्मृति फाउंडेशन

अकाउंट नं. : २०५०९९०४१६९ (IFSC : SBIN0014300)

परमात्मा को कैसे देखें

परमात्मा को कैसे देखें, अक्सर प्रश्न यह उठता है,
ऋषि–मुनियों ने खोजा इसको, वेद ने मार्ग बताया है।
एक ब्रह्म है ब्रह्म एक है, वेदों ने समझाया है,
तेरे प्रजाजनों ने इसको विविध रूप से गाया है।
वेद ऋचाओं ने गूँज–गूँज कर, निराकार को शीश नवाया है,
ऋचाओं में तू मुझमें, कण–कण में तू ही समाया है।
मन्दिर–मस्जिद–गुरुद्वारे, चर्चों ने तुझे नित्य पुकारा है,
सत्ता तेरी असीम प्रभु, सबने यह स्वीकारा है।
मैं अज्ञानी मूढ़ प्रभु समझ में कुछ न आया है,
ज्यों–ज्यों गहरे उतरे इसमें, भेद असीम गहराया है।
मन में तेरे कूड़ा फैला, पात्र न तेरा खाली है,
ज्ञान, कर्म, उपासना का ढोंग रचाना, पर भक्ति से तू खाली है।
प्रभु को पाना चाहते हो तो, हृदय पवित्र बनाओ,
ओ३म् क्रतो स्मर करते–करते, उसके सान्निध्य में आओ।
ओ३म् का जितना स्मरण करेगा, उतना ही तू पाएगा,
सच्चिदानन्द स्वरूप है उसका, तेरे निकट आ जाएगा।
अन्तस में पुकार उठेगी, मुझमें ध्यान लगा ले तू,
तप, स्वाध्याय, ईशप्रणिधान में, अपना समय बिता ले तू।
अष्टांग योग को अपना ले, यम नियमों को गले लगा ले,
भीतर अलख जगा ले तू, मोक्ष द्वार खुल जाएगा।
निराकार का ले आश्रय, आत्म तत्व को पाएगा,
मानव जीवन 'आदर्श' बना,
साक्षात् ब्रह्म मिल जाएगा।

● **सुश्री आदर्श आर्या**
आर्ष कन्या विद्यापीठ, भुसावर (राज.)
चलभाष : ९५५७८७३६३३

वैचारिक क्रान्ति के साहित्यकार, लौह लेखनी के धनी मोहनलालजी दशोरा के परिवारों में देवयज्ञ, पितृ यज्ञ, अतिथि यज्ञ सम्पन्न, 'नानाजी की कलम से' का किया गया विमोचन

नीमच। २१ जून २०२३ को वैदिक संसार के प्रतिनिधि मोहनलालजी दशोरा नारायणगढ़ के अनुज बालमुकुन्द दशोरा के पुत्र निरंजन दशोरा एडवोकेट के नीमच में नवगृह **'शिवम्'** प्रवेश यज्ञ श्री सत्येन्द्रजी आर्य के ब्रह्मत्व में सानन्द सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर माता–पिता का सम्मान कर लगभग ९०० प्रियजनों को स्नेहभोज कराया जाकर अतिथि यज्ञ का फर्ज निरंजन दशोरा ने पूरा किया।

इसी प्रकार मोहनलालजी दशोरा की बड़ी बेटी की बेटी आरती–महेशजी राठौर के शक्ति नगर नीमच में निर्मित नवगृह **'आराधना'** का प्रवेश यज्ञ २८ जून २०२३ को श्री महेशजी शर्मा, मन्त्री आर्य समाज छोटी सादड़ी के ब्रह्मत्व में (पाँचों यज्ञ) विधिवत् पूर्ण कराए गए। माता–पिता के साथ ४०० जनों का अतिथि सत्कार किया गया। इस शुभ अवसर पर आरती राठौर द्वारा संकलित 'नानाजी की कलम से' १०१ लेख/कविताएँ पुस्तक रूप में 'जीवन दर्शन' का विमोचन प्रबुद्धजनों द्वारा किया गया। जिसमें नानाजी मोहनलालजी दशोरा आर्य के परिवार के सदस्यों के चित्र एवं प्राप्त प्रशस्ति पत्र, अभिनन्दन पत्र व जीवन दर्शन दर्शाया गया। यह पुस्तक दशोरा परिवार की यादगार (स्थायी धरोहर) होगी।

नारायणगढ़ में मोहनलालजी दशोरा के प्रपौत्र जय, सुपौत्र गोपाल–सुखी दशोरा, पुत्र धीरज–कविता दशोरा का छठा जन्मदिन २ जुलाई २०२३ को 'देवयज्ञ' के साथ मनाया गया। पाँच साल के बालक जय को परिवार के ४५ सदस्यों ने ढेर सारे आशीर्वाद देकर अपना प्यार जताया।

(चित्र देखें पृष्ठ १९ पर)

● **धीरज दशोरा, एडवोकेट (नारायणगढ़)**

आर्य माता आनन्दी देवी दिवंगत

जो मानव संसार में, करते अच्छे काम।
उनका रहता है अमर, इस दुनिया में नाम।।

आर्य माता श्रीमती आनन्दी देवी सैनी निवासी पुनाहाना (मेवात क्षेत्र) जनपद नूंह (हरियाणा) का दिनांक ६.४.२०२३ को स्वर्गवास हो जाने पर १०.४.२०२३ को शान्ति यज्ञ वैदिक विद्वान् पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य ग्राम बहीन (पलवल) हरियाणा ने सम्पन्न कराया। श्रद्धापूर्वक यज्ञाग्नि में आहूतियाँ डालकर यज्ञ प्रेमी धर्मात्मा होने का परिचय दिया। यजमान की भूमिका स्व. माता आनन्दी देवी के बड़े पुत्र संजय आर्य तथा पुत्रवधू रेवती आर्य ने निभाई। आचार्य नन्दलाल निर्भय ने अपने प्रवचन में कहा कि यह संसार ईश्वर का बनाया हुआ एक बगीचा है। हमें इस बगीचे को भली प्रकार सँवारना चाहिए। इस संसार में जो आता है वह एक दिन अवश्य जाता है। यह धन–माल, खजाना सब यहीं पड़ा रह जाता है। भाई–बहन, रिश्तेदार भी पूरा साथ नहीं निभाते। केवल जीव के साथ उसके किये गये कर्म ही साथ जाते हैं। परमात्मा कर्मानुसार ही जीव को फल देता है। इसलिए मनुष्य को यज्ञादि शुभ कार्य करके अपना जीवन सुधार करना चाहिए। श्रीमती आनन्दी देवी के भतीजे श्री कमल प्रकाश आर्य तथा अन्य उपस्थित महानुभावों ने हाथ ऊँचा करके निरन्तर वेद मार्ग पर चलते हुए यज्ञादि शुभ कर्म करने का वचन दिया। इस अवसर पर श्री राम अवतार आर्य कोषाध्यक्ष वेद प्रचार मण्डल मेवात पुनाहाना, श्री दुलीचन्द्र आर्य पुनाहाना, श्री शमशेर गोस्वामी मन्त्री आर्य समाज पुनाहाना ने भी आनन्दी देवी को सच्ची ईश्वर भक्त धर्मात्मा नारी बताया। अन्त में यजमानों को आशीर्वाद दिया गया। शान्ति पाठ उपरान्त कार्यक्रम का समापन किया गया।

● **उमेश आर्य वीर,** *आर्य समाज पुनाहाना (मेवात) जनपद नूंह (हरियाणा प्रान्त)*

आर्यत्व के धनी श्री पातीराम आर्य दिवंगत शान्ति यज्ञ श्रद्धांजलि सभा सम्पन्न

जग के नर–नारी सुनो, सभी लगाकर ध्यान।
इस दुनिया में सज्जनों, काल बड़ा बलवान।।

मुरैना। आर्य जगत् के महान् समाजसेवी, महान् शिक्षाविद्, आर्य भाषा हिन्दी के रक्षक श्री पातीरामजी आर्य, ग्राम चतुर की गढ़ी, जनपद मुरैना (मध्यप्रदेश) का ९२ वर्ष की दीर्घायु में दिनांक २०.६.२०२३ को देहान्त हो गया। वे अपने पीछे चार पुत्र तथा दो पुत्रियाँ, पोते–पोतियों से भरा–पूरा परिवार छोड़ गए।

श्री पातीरामजी आर्य ने मुरैना एवं आसपास के क्षेत्र में आर्य समाज के माध्यम से वेद प्रचार का बहुत कार्य किया था। वे अध्यापक थे, इसलिए सैकड़ों विद्यार्थियों को आर्य समाज से जोड़ा था। श्री पातीरामजी आर्य ने सन् १९५८ में पंजाब में हिन्दी भाषा पर कैरो सरकार द्वारा पाबन्दी लगाने पर आर्य सत्याग्रह आन्दोलन में खुलकर भाग लिया था। वे कथनी–करनी से सच्चे देशभक्त, गऊभक्त आर्य थे।

श्री पातीराम आर्य के दूसरे सुपुत्र आर्येन्द्र कुमार आर्य भी इस समय जोर–शोर से वेद प्रचार का कार्य जिला झाबुआ (म.प्र.) में कर रहे हैं। २.७.२०२३ को शान्ति यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पं. नन्दलाल निर्भय वेद प्रचारक हरियाणा ने यज्ञ के महत्व पर प्रकाश डाला तथा सबको श्री पातीराम आर्य के जीवन से प्रेरणा लेकर यज्ञादि शुभ कार्य करने को प्रेरित किया। अन्त में शान्ति पाठ के पश्चात् श्रद्धांजलि सभा का समापन किया गया।

● **केशवसिंह आर्य,** *संरक्षक, आर्य समाज चतुर की गढ़ी जनपद मुरैना (मध्यप्रदेश)*

वसीयत प्रकाशित होने से पूर्व माताजी का दिनांक ३० जून २०२३ को देहावसान। किया गया वसीयत का पालन।

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध १०३ वर्षीय विद्वान् दादी लक्ष्मीदेवी का शँखनाद

संक्षिप्त परिचय

नाम- तीजा उर्फ लक्ष्मीदेवी

पिता का नाम- माधोराम

जन्म तिथि- विक्रम संवत् १९७७ कार्तिक शुक्ल तीज,शुक्रवार,दिनांक १२ नवम्बर १९२०

जन्म स्थान- दयालपुरा (पाली)

पति का नाम- स्मृति शेष भलाराम शर्मा

● पं. घेवरचन्द आर्य (सुपुत्र)
पाली (राजस्थान)
चलभाष : ९४६१८५१८०१ (मात्र वाट्सएप)

पाली जिले के दयालपुरा गाँव में अंगिरा वंशज वनाराम जांगिड शिल्प कर्म करते थे उनके दो पुत्र माधोराम और कालूराम हुए। माधोराम के दो पुत्रियाँ हुई अणची और तीजा (लक्ष्मी) तथा कालूराम के भी एक ही पुत्री हुई कँकू। दोनों भाईयों के कोई पुत्र नहीं होने के कारण पेमाराम लिकड को गोद लाये। मेरा जन्म कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की तीज के दिन होने से माँ ने प्रेम से तीजा नाम रखा पिता ने जोशी की सलाह पर लक्ष्मी रखा।

१३ वर्ष की उम्र में विवाह

गुलामी के काल की उस समय की प्रथा के अनुसार तीनों बहनों की शादी एक साथ ही हुई, बड़ी बहन अणची की गिरोलियां वाले प्रतापराम जोपिग से, मेरी (लक्ष्मी) की केरला वाले भलाराम सायल से, जबकि काका की लड़की कँकू की बिठू वाले हरीराम रालडियां से शादी हुई, शादी के समय मेरी उम्र मात्र १३ वर्ष थी।

सामाजिक कुरितियों के विरूद्ध पहला कदम

पिता ने मेरा विवाह अंगिरा वंशज रुपाराम शर्मा के बड़े पुत्र भलाराम के साथ किया, मेरे पति नाम के अनुसार भले आदमी थे, वे दिनभर शिल्प का कार्य कर हाड़तोड़ परिश्रम करते और साधु-संन्यासियों की संगति में रहते। उनकी धर्मनिष्ठा और संगति का प्रभाव मुझ पर भी पड़ा और मुझमें भी धार्मिक वृत्ति जागृत हुई। हमारे घर हर वर्ष स्वामी ऋतमानन्द अंगिरा द्वारा हवन संत्सग प्रवचन होते थे, इससे सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध शँखनाद करने की मुझमें इच्छा जागृत हुई, और उस समय समाज में प्रचलित चूड़ा प्रथा (कोहनी से लेकर कन्धे तक पहना जाने वाला हाथीदाँत का चूड़ा जिसे निम्न वर्गीय परिवार की महिलाएँ पहनती थी- सम्पादक) का सबसे पहले विरोध करते हुए मैंने पति की आज्ञा से ऋतमानन्द जी अंगिरा के समक्ष चूड़ा उतार दिया। हालाँकि मैं पढ़ी- लिखी नही हूँ लेकिन धर्मनिष्ठ पति के साथ विद्वानों से शास्त्रों का ज्ञान श्रवण करके उन्हें समझकर आत्मसात् करने में समर्थ हुई हूँ।

गायत्री मंत्र का चमत्कार

मै स्वामी ऋतमानन्द अंगिरा की आज्ञा से गायत्री मंत्र का अनुष्ठान कर आत्मसात् करने में सफल हूई, केरला एवं आस-पास के दस कोस गाँव में जिसके भी छणक या मोच पड़ती, वह मेरे पास आता, मैं दर्द स्थल पर गायत्री मंत्र जाप के साथ उल्टी कुल्हाड़ी या बसुला फेरती, लोग खुशी-खुशी ठीक होकर जाते थे।

पुष्पमाला, चद्दर, या कपड़े न लावें

मेरी उम्र १०३ वर्ष से अधिक हो गई है, यह जीर्ण शरीर छोड़ने का समय आ गया है, अब तो मृत्यु को आना ही है **'जातस्य ही ध्रुवो मृत्यु'** (गीता २/२७) सो एक दिन वह आयेगी, जिस दिन प्रभु बुलायेगा उस दिन किसी को कष्ट दिये बिना **'ओ३म्'** का स्मरण करती हुई खुशी-खुशी उसके पास चली जाऊँगी। प्रभु के पास जाने से पूर्व अपने मन की बात कह रही हूँ जब मैं मर जाऊँ तो कोई भी अड़ोसी, पड़ोसी, रिश्तेदार, परिवारजन, समाज बँधु अपनी उपस्थिति दिखाने के लिए पुष्पमाला, चादर, कपड़े आदि लेकर न आवें क्योंकि पुष्पमाला, चादर, कपड़े आदि की आवश्यकता जीवितों के लिए ही है, मृतकों के लिए नहीं। यदि आप अपनत्व दिखाने के लिए कुछ लाना ही चाहते है तो समिधाएँ, चन्दन, गुगल, हवन सामग्री और घृत लेकर आवे जो मेरे अन्तिम संस्कार में काम आवे।

शव के पास अगरबत्ती न जलावें

जब मैं मर जाऊँ तो मुझे भूमि पर ले लेना क्योंकि **'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'** वह इसलिए की अन्त समय भी मैं अपनी माँ पृथ्वी की गोद से वंचित न रहूँ। मेरे शव के सिरहाने घी का दिया या अगरबत्ती जलाने की कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि रोशनी की जरूरत जीवित के लिए ही होती है मरने वाले के लिए नहीं। वैसे भी शास्त्रों में ऐसा कोई विधान नहीं है। यदि अँधेरा है तो प्रकाश के लिए घृत का दीपक जलाये रखना ठीक है। उसके बाद स्नान करवाकर घर की स्त्रियाँ मुझे नवीन वस्त्र पहनावें, सिर एवं शरीर पर चन्दन का लेप कर फिर मुझे लकड़ी की अर्थी पर सुलाकर कच्चे सूत और कलावा से बाँधकर श्मशान ले जाने की तैयारी करें।

शवयात्रा में कोई रोक-टोक न हो

मेरी शवयात्रा में जो भी सम्मिलित होना चाहे आने को स्वतंत्र है, किसी के भी भाग लेने पर कोई रोक-टोक न हो, अन्तिम संस्कार से लोगों को शिक्षा मिलती है कि आदमी खाली हाथ ही आया है, और खाली हाथ ही जायेगा। शवयात्रा में 'राम नाम सत्' है की जगह **'ओ३म् नाम सत् है'** का उच्चारण किया जावे क्योंकि परमात्मा का मुख्य नाम ओ३म् ही है और वही सत् है। चूँकि यह मनुष्य का अन्तिम संस्कार है अत: उसमें कोई भी

नि:संकोच सम्मिलित होकर अपनी आहुतियाँ दे सकता है।

अन्तिम संस्कार विधिवत् करे

मेरे पति ऋतमानन्दजी अंगिरा के शिष्य और यज्ञोपवीत धारक वैदिक धर्मी थे। पति का धर्म ही पत्नी का धर्म होता है इसलिए ही उसे धर्मपत्नी कहते हैं। वैदिक धर्म में शवदाह को अन्तिम संस्कार कहा गया है। जब शवयात्रा श्मशान पहुँचे तो वहाँ वैदिक विधि-विधान से पर्याप्त मात्रा में घृत एवं हवन सामग्री की आहुतियाँ देकर मेरे शव को भस्म कर देवें।

घर की शुद्धि हेतु यज्ञ करना

मेरी अन्त्येष्टि संस्कार के तुरन्त बाद परिवारजन घर आकर स्नान करके घर एवं पर्यावरण की शुद्धि की दृष्टि से उसी दिन घर पर शुद्धि हवन अवश्य करें। उसके दो तीन दिन बाद कोई एक सदस्य श्मशान जाकर मेरी अस्थियाँ एकत्र कर वहीं आस-पास या किसी सार्वजनिक स्थल पर गड्ढा खोदकर उसमें दबा देवें और उस पर एक वृक्षारोपण कर देवें जिससे मेरी अस्थियाँ खाद बनकर उस वृक्ष का पोषण करें।

शोक सभा या श्रद्धांजलि सभा का औचित्य

मेरी श्रद्धांजलि सभा करने का भी कोई औचित्य नहीं है, क्योंकि दिवंगत की आत्मा की शान्ति के लिए अन्तिम संस्कार के १२१ मंत्रों में से बीच के ६३ मंत्रों को छोड़कर सारे मंत्रों में आत्मा की शान्ति की प्रार्थना की गई है। दूसरी बात यह है कि जीवित व्यक्ति ही अपने लिए शान्ति की कामना करता है।

प्रेरणा या संकल्प दिवस मनायें

यदि सामाजिक दृष्टि से कुछ कार्यक्रम करना हो तो तीसरे दिन सायं अथवा आगामी किसी भी दिन सुविधानुसार **'प्रेरणा दिवस'** या **'संकल्प दिवस'** के रूप में मना सकते हैं, जहाँ उपस्थितजन मेरे जीवन के गुणों पर प्रकाश डालते हुये उन गुणों से कुछ प्रेरणा लें। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ गुण अवश्य होते हैं। गुण-ग्राहक लोग गुणों को लेते और अवगुणों को चित्त नहीं धरते। इस अवसर पर परिवारिकजन यह भी संकल्प ले सकते हैं।

जैसे- मैंने जीवन में कभी चाय नहीं पी, किसी प्रकार का नशा नहीं किया, पानी तो दूर कभी दूध या छाछ नहीं बेची, गौ पालन कर गौमाता की सेवा की, हर परिस्थिति में सदा स्वाभिमान एवं आत्मविश्वास बनाये रखा, अपने शील एवं चरित्र की रक्षा की, कितना भी कष्ट आया कभी धर्म से विमुख नहीं हुई, ढोंग, अंधविश्वास एवं व्यर्थ के पाखंड से दूर रही और अपनी संतानो को भी इनसे दूर रखा आदि-आदि।

रोने-धोने का दिखावा या वेद विरूद्ध कर्मकांड न करें

पूर्ण आयु प्राप्त परोपकारी और धर्मात्मा जिनके कर्म मेरी तरह यज्ञीय (श्रेष्ठतम) और सुकर्म होते हैं और वे सामने आते हैं, तो उनके चेहरे पर सन्तोष झलकने लगता है। मृत्यु के निर्णय का स्वागत करते हुये वे झटपट मृत्यु के गले लग जाते हैं। पुराने जर्जर वस्त्रों को छोड़कर नये वस्त्र को धारण करने की प्रसन्नता उनके मुख मण्डल पर होती है। दयानन्द की तरह मन ही मन प्रभु तेरी इच्छा पूर्ण हो कहकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुये, वे जीवितों को भी यह सन्देश दे जाते हैं-

जब तुम आये जगत् में, जग हँसा तुम रोये।
करनी ऐसी कर चलो, तुम हँसो, जग रोये।।

मुस्कराते हुये ओ३म् का उच्चारण करते हुए वे विदा हो जाते हैं। न कोई कष्ट न घबराहट और न छटपटाहट। सब कुछ सहज और शान्तिमय। इसलिए ऐसी महान् मृत्यु पर किसी प्रकार का रोना-धोना या **वेद विरूद्ध कर्मकांड न करें। मृतक भोज का आयोजन न करें। हम सुधरेंगे, जग सुधरेगा।**

समाज व्यक्तियों से बनता है, व्यक्ति सुधर जाएँगे तो समाज स्वयं सुधर जाएगा। सुधार की सोच बहुत जरूरी है। मृत्युभोज या अन्य सांकेतिक नाम जैसे- बाहरवाँ, तेरहवीं, मौसर, गंगा प्रसादी, पुष्कर प्रसादी, न्यात आदि का कोई औचित्य नहीं है। इस प्रथा के कारण कई परिवार कर्ज में डूब जाते हैं और अपनों की ही मृत्यु उनके लिये अभिशाप बन जाती है। वैसे भी शुद्धि तो जल से होती है। भोजन खाकर या खिलाकर शुद्धि कभी नहीं होती। अत: किसी प्रकार का मृतक भोज बिल्कुल न करें। बहन-बेटी, परिवार के नाते रिश्तेदारों को बुलाकर साधारण तरीके से रीति रिवाज का निर्वहन करें।

अगर गाँव और समाज को भोजन खिलाने की हैसियत है तो आगामी किसी दिन समाज संगठन का सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध कार्यक्रम रखकर सबको बुलाकर विधिवत् प्रस्ताव पारित कर हैसियत अनुसार भोजन करवा सकते हैं।

श्राद्ध और तर्पण के नाम पर हलवा-पूरी न खिलावें

शास्त्रों के अनुसार श्राद्ध और तर्पण जीवितों का होता है मृतकों का नहीं। भोजन की आवश्यकता शरीर को होती है, आत्मा को नहीं। अत: जब तक यह पता न हो कि मेरी (दिवंगत) आत्मा को कौन-सा शरीर मिला, तब तक जन्मना ब्राह्मणों, समाज या न्यात को मृतक भोज के नाम पर हलवा-पूरी खिलाने का कोई तुक नहीं है। जीवित वृद्ध माता-पिता, सास-श्वसुर तथा अन्य परिचित या अपरिचित वृद्ध, असहाय व्यक्तियों की श्रद्धापूर्वक सेवा करना ही श्राद्ध और उनको उचित धन, अन्न, पथ्य-भोजन, वस्त्र, औषधि आदि से तृप्त करना ही तर्पण है।

मेरी या किसी की भी पुण्यतिथि न मनावें

जैसे जीवित रहना कोई पाप कर्म नहीं, वैसे ही मृत्यु (मर जाना) कोई पुण्य कर्म नहीं है, जिसको पुण्य स्मृति के रूप में याद किया जावे। हाँ यदि अपने बुजुर्गों की जन्म तिथि किसी कारणवश न पता हो, तब बात दूसरी है। आप उनको मृत्यु या निर्वाण दिवस पर याद कर लें। मुख्य बात यह है कि (वफ़ात) मृत्यु का दिन मनाना 'यवन' (मुस्लिम) संस्कृति की देन है। भारतीय सनातन संस्कृति में महत्व 'जन्म दिवस' का है। आज भी रामनवमी, जन्माष्टमी, विश्वकर्मा जयन्ती, महावीर जयन्ती, गुरु नानक जयन्ती, संत कबीर जयन्ती, संत रविदास जयन्ती, शिवा जयन्ती, महाराणा प्रताप जयन्ती, अम्बेडकर जयन्ती आदि 'जन्म तिथि' पर ही आधारित हैं।

अत: मेरी अभिलाषा केवल यह है, कि मेरा या किसी भी मृतक का 'मृतक दिवस' पुण्यतिथि के रूप में न मनाया जावे, केवल 'जन्म दिवस' स्मृति दिवस के रूप में प्रतिवर्ष मनाया जाना चाहिये।

यदि किसी की सही जन्म तिथि का पता न हो, तो उनके जीवन का कोई भी महत्वपूर्ण दिवस स्मृति दिवस के रूप में मनाया जावे, परन्तु मृत्यु दिवस पुण्यतिथि कदापि नहीं मनावे। यह सनातन धर्म संस्कृति के विरुद्ध है। ■ **-लक्ष्मीदेवी**

आर्य समाज पिपलानी (बी.एच.ई.एल.) भोपाल का निर्वाचन सम्पन्न, नवगठित कार्यकारिणी ने महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की द्विजन्मशताब्दी वर्ष पर दो हजार पौधारोपण अभियान का किया प्रारम्भ।

आर्य समाज भेल पिपलानी के चुनाव सम्पन्न

वर्ष २०२३-२४ के लिए दिनांक २५ जून २०२३ को आर्य समाज पिपलानी (भोपाल) की ६१वीं कार्यकारिणी का गठन हुआ जिसमें प्रधान पद पर सर्वसम्मति से श्री अतुल वर्मा चुने गए। मंत्री श्री विवेक वाधवा एवं कोषाध्यक्ष श्री फूलचंद गर्ग चुने गए। अन्य पदों पर श्री विष्णु कुमार कुलश्रेष्ठ (उप-प्रधान), श्रीमती रंजना द्विवेदी (उप-मंत्री), श्री बाबूदास वैष्णव (पुस्तकाध्यक्ष), श्री विनय कुमार तनेजा (आर्य वीर दल अधिष्ठाता), श्री महेंद्र कुमार माथुर एवं श्री धर्मवीर वाधवा (प्रतिष्ठित सदस्य), श्री दुलीचंद गर्ग, श्री जगमोहन श्रीवास्तव, श्री तिलक राज गुलियानी एवं श्री सुभाष चंद्र मनचंदा (अंतरंग सदस्य) चुने गए। प्रधान श्री अतुल वर्मा ने समाज के सभी सदस्यों का आभार प्रकट किया तथा सभी निर्वाचित सदस्यों को बधाई दी।

आर्य समाज पिपलानी भोपाल द्वारा पौधारोपण अभियान

आर्य समाज पिपलानी के सदस्यों तथा डी ए वी विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं द्वारा आर्य समाज एवं विद्यालय में अनेक फलदार पौधे लगाए गए।

आर्य समाज के प्रधान श्री अतुल वर्मा ने बताया महर्षि दयानंद सरस्वती जी के २००वें जन्म वर्ष के उपलक्ष्य में दो हज़ार फलों तथा औषधियों के पौधे लगाने का एवं उनके बड़े होने तक सुरक्षित रखने का संकल्प लिया है। समाज के प्रत्येक सदस्यों के घरों में तथा भेल क्षेत्र की कालोनियों में स्थित पार्कों में एवं जो अपने घरों में लगवाना चाहते है उन्हें भी पौधे उपलब्ध कराए जाएंगे परंतु पौधे को पालने की जिम्मेदारी लेनी होगी। फरवरी २०२४ तक दो हज़ार पौधों को लगाने का कार्य पूर्ण किया जाएगा। पौधे के लिए पिपलानी आर्य समाज के मंत्री श्री विवेक वाधवा से संपर्क कर सकते हैं।

पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए उन्होंने निवेदन किया कि सभी को अपने जन्मदिवस पर अथवा वैवाहिक वर्षगांठ पर प्रतिवर्ष एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए।

एम.पी.एच.आई.एन.-२०१२/४५०६९ • सम्पादक : गजेश शास्त्री • डाक पंजीयन : एम.पी./आई.डी.सी./१४०५/२०२१-२३

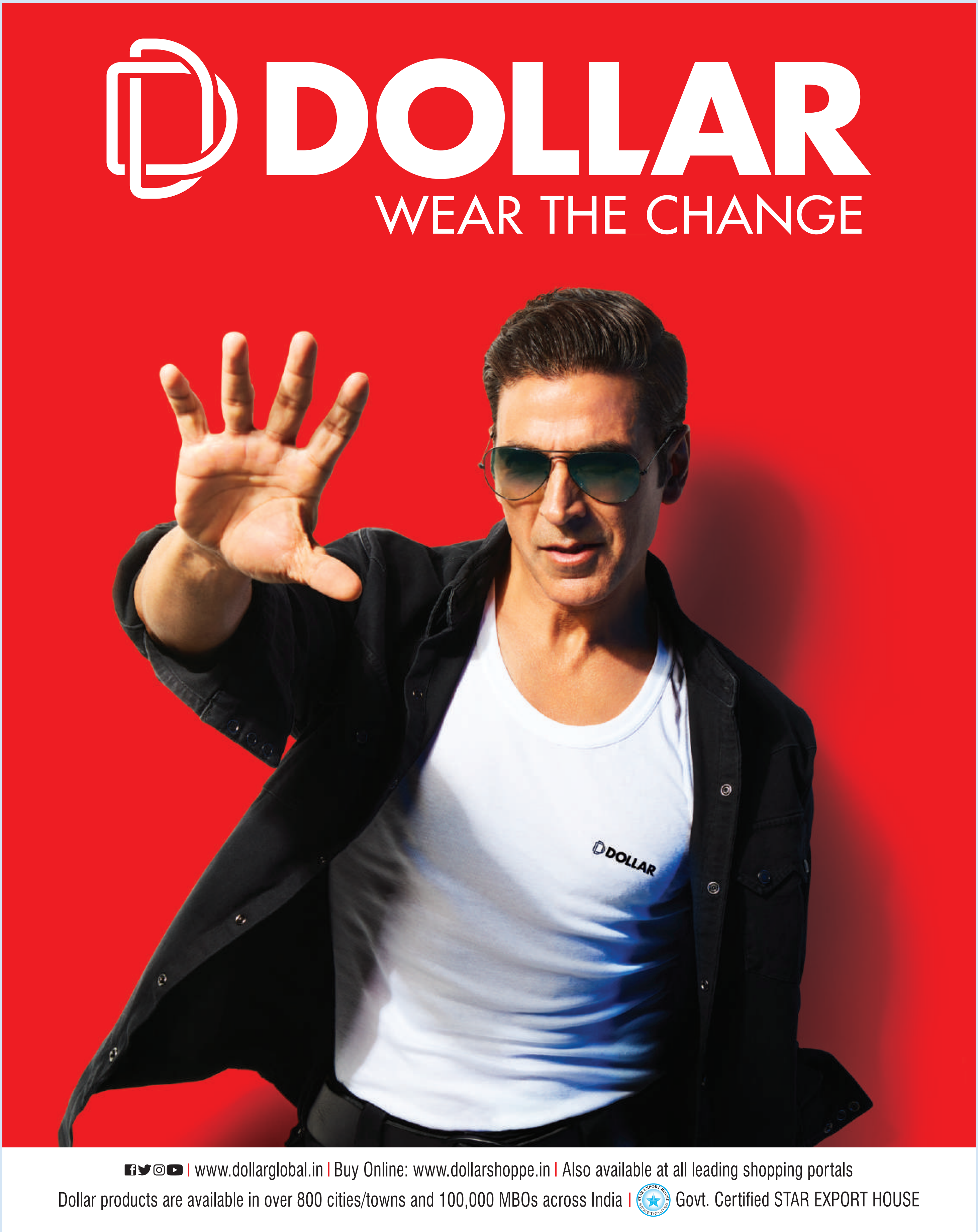

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक : सुखदेव शर्मा, इन्दौर द्वारा इन्दौर ग्राफिक्स, २४, कुँवर मण्डली से मुद्रित एवं १२/३, संविद नगर, इन्दौर-१८ से प्रकाशित